73 x 120 mm

भक्ति सागर

प्राप्ति स्थान :

श्री सेवा

16 गणेश चन्द्र एवेन्यू, कोलकाता–700013
दूरभाष : (033) 4040 1300, 2236 0368

मूल्य : सप्रेम पठन–पाठन

भक्ति सागर

अगस्त 2021

भक्ति सागर

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

मंगल-प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणी पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत।।

हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन्, धन धान्य के भण्डारी।

सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

भक्ति सागर

स्वकथ्य

भक्ति भाव भादौ नदी, सबहि चली घहराय।
सरिता सोई सराहिये, जेठ मास ठहराय ॥1॥

भादों के महीने में सभी नदियां जल से उमड़कर बहती हैं। परन्तु उसी नदी की प्रशंसा की जानी चाहिए, जो जेठ मास में भी ऐसे ही जल से भरी हो। इसी प्रकार भक्ति भी भावुकता में देखा–देखी से उमड़ आना अलग बात है, परन्तु सभी कठिनाइयों–बाधाओं को पार करते हुए भक्ति–साधना होती रहे, वही सच्ची–भक्ति है।

भक्ति, भक्त के जीवन की एक ऐसी साधना–शक्ति है, जिससे वह अपने प्रयोजन सिद्धि को प्राप्त होता है। भक्ति ही वह सोपान–सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर मोक्ष की प्राप्ति होती है। साधु–सन्तों की सत्संगति, सद्गुरु महाराज के श्री चरणों की सेवा तथा उनके सदुपदेश ज्ञान–प्रवचन के द्वारा भक्ति भक्त के जीवन में सहज–भाव से प्रवेश करती है। भक्ति का सम्बन्ध किसी विशेष कुल–जाति, द्रव्य–धन बल अथवा शिक्षा से नहीं है। यह तो स्वतन्त्र है और कहीं भी शुभ संस्कारों के वातावरण में किसी भी सेवा–परायण प्रेमी–भक्त के मानस मन्दिर में इसका नृत्य–कीर्तन होने लगता है। इसका सीधा सम्बन्ध सेवा और प्रेम से है। भक्ति, प्रेम और सेवा–ये तीनों एक–दूसरे के पूरक हैं। इनमें से जहां एक भी होता है, वहां स्वतः ही अन्य दो भी विद्यमान होते हैं। भक्ति निष्काम और निश्छल–भाव से होती है। जिज्ञासु जन–सेवकों द्वारा प्रेम–भाव से सेवा करना और विषयों को त्याग सदगुरु को समर्पित होकर निष्काम कर्मयोग का आचरण करना, भक्ति के ही रूप हैं।

स्वकथ्य

भक्ति के दो विशेष अभिन्न अंग ज्ञान और वैराग्य हैं, जिनसे भक्त इस भवसागर से पार हो जाता है।

भक्ति का रंग चढ़ाकर वेश तो बहुत से लोग धारण कर लेते हैं, परन्तु इसके साधना–पथ पर चल नहीं पाते। भक्ति दुर्बलता अथवा कायरता का कार्य नहीं, बल्कि परम पुरूषार्थ एवम् त्याग–तपस्या का महान व्रत–संकल्प है। इसे पूरा करने के लिए भक्त अपने आपको न्योछावर कर देता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में पल्लवित भक्ति तो कल्प–वृक्ष के समान है और भक्त–सेवक सद्गुरु के कृपा–पात्र इसके दुर्लभ–मधुर फलों का रसास्वादन करते हैं। कितना ही समय बीत जाये परन्तु भक्ति का बीज कभी भी नष्ट नहीं होता। यह अविनाशी है और समय के साथ भक्त के जीवन में फलने–फूलने लगता है।

धर्माचरण ही सच्चा मित्र है : दान महिमा

वाताभ्रविभ्रममिदं वसुधाधिपत्यं
आपातमात्रमधुरा विषयोपभोगाः।
प्राणास्तृणाग्रजलविन्दुसमा नराणां
धर्मः सदा सुहृदहो न विरोधनीयः।।

इस सम्पूर्ण पृथ्वीका आधिपत्य (सम्पत्ति-अधिकारादि) हवामें उड़नेवाले बादलके समान (क्षणभंगुर) है, यह धन-सम्पदा, पद-प्रतिष्ठा सदा बनी ही रहेगी-ऐसा समझना केवल भ्रान्तिमात्र है। इन्द्रियों के विषय-भोग केवल आरम्भ में ही अर्थात् केवल भोगकाल में ही मधुर लगनेवाले हैं, उनका अन्त अत्यन्त दुःखदायी है। प्राण तिनकेकी नोकपर अटके हुए जल की बूँदके समान अस्थिर हैं, किस क्षण निकल जायँ; कोई भरोसा नहीं, अहो! एकमात्र धर्माचरण- सत्कर्मानुष्ठान ही ऐसा है, जो मनुष्यों का सनातन एवं सच्चा मित्र है, अतः उसका कभी विरोध (तिरस्कार) नहीं करना चाहिये, अपितु अत्यन्त प्रयत्नपूर्वक दान धर्मादि सत्कर्मानुष्ठानके अनुपालन में सतत संलग्न रहना चाहिये।

कल्याणन्दान महिमा अंक-जनवरी-2011

स्वकथ्य

अश्रद्धया श्रद्धां असत्येन सत्यं अक्रोधेन कोधं दानेन अदानम्।

सेतुं स्तर दुस्तरान् सेतुं स्तर दुस्तरान्।

श्रद्धासे अश्रद्धाकी चहारदीवारी पार करो। सत्य से असत्य की चहारदीवारी पार करो। अक्रोधसे क्रोधकी चहारदीवारी पार करो ओर दानसे लोभकी चहारदीवारी पार करो।

ब्रह्मलीन स्वामी श्री अखण्डानन्दसरस्वतीजी महाराज

रहीमजी किसी जरूरतमन्दको देकर सिर झुका लेते। किसीने कारण पूछा ? कहा-

देनहार कोउ और है देत रहत दिन रैन।
लोग भरम मो पै करें या ते नीचे नैन।।

कबीर साहिबकी वाणी भी ऐसा ही सन्देश देती है-

न कुछ किया न कर सका न कुछ किया शरीर।
जो कुछ किया सो हरि किया कहत कबीर कबीर।।

भगवान् अपनी दयालुताके कारण जीवनको सदा कुछ देते ही रहते हैं और समर्थ मनुष्यको यह सन्देश देते हैं कि तुम भी लाचार और विवश प्राणियोंको तन-मन और धनसे कुछ देकर उनके इस कार्यमें सहभागी बनो।

स्वकथ्य

प्रश्न : सबसे बड़ा दाता कौन है ?

उत्तर : भागवतमें धन देनेवालोंको सबसे बड़े दाता नहीं कहा है, प्रत्युत उनको पृथ्वीके सबसे बड़े दाता कहा है, जो दूसरोंको भगवानमें लगाते हैं- **भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः।** धनके द्वारा जो उपकार होता है, उससे भी अधिक उपकार दूसरोंको भगवानकी तरफ लगानेसे होता है।

(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज)

काशीमें भगवान् शिवका मुक्तिदान

रमेण सदृशो देवो न भूतो न भविष्यति।।
अतएव रामनाम काश्यां विश्वेश्वरः सदा।
स्वयं जप्त्वोपदिशति जन्तूनां मुक्तिहेतव्वे।।
संसारार्णवसंमग्नं नरं यस्तारयेन्मनुः।
स एव तारकस्त्वत्र राममन्त्रः प्रकथ्यते।।

अन्तकाले नृणां रामस्मरणं च मुहुर्मुहुः।।
इति कुर्वन्त्युपदेशं मानवा मुक्तिहेतवे।
अन्यच्चापि शववाहैः सदा लोकैर्मुँहुर्मुहुः।।
रामनामैव मक्त्यर्थं शवस्य पथि कीर्त्यते।
रामनाम्नः परो मन्त्रो न भूतो न भविष्यति।।

रामचन्द्रजीके समान न कोई देवता हुआ है और न होगा ही। इसीलिये काशीमें विश्वनाथ भगवान्

स्वकथ्य

शंकर निरन्तर 'राम' नामका स्वयं जप करते हैं और प्राणियोंकी मुक्तिके लिये उन्हें राममन्त्रका उपदेश दिया करते हैं। संसाररूपी समुद्रमें डूबे हुए मनुष्यको जो मन्त्र तार देता है, वही तारकमन्त्र राममन्त्र कहलाता है। मनुष्योंकी मुक्ति के लिये लोगों के द्वारा अन्तिम समयमें उनसे बार-बार यही कहा जाता है कि रामका स्मरण करो, रामका स्मरण करो। इसी प्रकार शव-वहन करने वाले लोगोंके द्वारा मृतप्राणीकी मुक्तिके लिये शवयात्रामें बार-बार रामनामका ही उच्चारण किया जाता है। रामनामसे श्रेष्ठ कोई मन्त्र न आजतक हुआ है और न होगा ही ।

श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना

ते सभाग्या मनुष्येषु कृतार्था नृप निश्चितम्।
स्मरन्ति ये स्मारयन्ति हरेर्नाम कलौ युगे।।

'राजन्! मनुष्यों में वे लोग भाग्यवान् हैं तथा निश्चय ही कृतार्थ हो चुके हैं, जो इस कलियुग में स्वयं श्रीहरि का नाम-स्मरण करते और दुसरों से नाम-स्मरण करवाते हैं।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।

आज सारे संसारमें जीवनकी जटिलताएँ बढ़ती जा रही है। अधिकतर लोग अपनी असीमित भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में संलग्न हैं। वे अपने क्षुद्र स्वार्थकी सिद्धिके लिये दूसरों का अहित करने में भी कोई संकोच नहीं करते परस्पर ईर्ष्या, द्वेष वैमनस्य, कलह और हिंसाके वातावरण में

अशान्त स्थिति है। देशके कुछ भागों में तो हिंसाका नग्न ताण्डव दिखायी दे रहा है। अधिकतर लोग मानसिक तनाव के शिकार बनते जा रहे हैं। कलिका प्रकोप सर्वत्र व्याप्त है। प्रश्न यह होता है कि इस स्थितिका समाधान क्या है? ऋषि-महर्षि, मुनि और शास्त्रों ने इस स्थिति को अपनी अन्तर्दृष्टि से देखकर बहुत पहले से यह घोषित कर दिया है कि 'कलिकाल में मानव कल्याण और विश्वशान्ति के लिये श्री हरि-नाम के अतिरिक्त कोई दूसरा सुलभ साधन नहीं है।' इसीलिये यह बात जोर देकर शास्त्रों में कही गयी है कि 'भगवान् श्रीहरि का नाम ही एकमात्र जीवन है। कलियुग में इसके अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा-चारा नहीं है'--

हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।

(ना० पूर्व० 41|115)

हमारे शास्त्रों के अतिरिक्त अनुभवी संत-महात्माओं ने भी भगवन्नाम-स्मरण-जपको कलियुगका मुख्य धर्म (ऐहिक-पारलौकिक कल्याणकारी कर्तव्य) माना है। इतना ही नहीं जगत् के समस्त धर्म-सम्प्रदाय भी किसी-न-किसी रूप में भगवान के नाम-स्मरण में देश-काल-पात्र का कोई भी नियम नहीं है। श्री चैतन्यमहाप्रभु ने भी कहा है--

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।

'हे भगवन्! आपने लोगों की विभिन्न रुचि देखकर नित्य-सिद्ध अपने बहुत-से नाम कृपा करके प्रकट कर दिये। प्रत्येक नाम में अपनी सारी शक्ति भर दी और नाम स्मरण में देष-काल-पात्र का कोई नियम भी नहीं रखा।'

विपत्ति से त्राण पाने के लिये आज

स्वकथ्य

श्रीभगवान्नाम का स्मरण ही एकमात्र उपाय है। ऐसा कौन-सा विघ्न है, जो भगवन्नाम-स्मरण से नहीं टल सकता और ऐसी कौन-सी वस्तु है, जो नहीं मिल सकती? इस कलिकाल में मंगलमय भगवान के आश्रय के लिये भगवन्नाम का सहारा ही एकमात्र अवलम्बन है। अतएव भारतवर्ष एवं समस्त विश्व के लिये, लौकिक अभ्युदय और पारलौकिक सुख शान्ति के लिये तथा साधकों के परम लक्ष्य एवं मानव-जीवन के परम ध्येय-भगवान की प्राप्ति के लिये सबको भगवन्नाम का स्मरण-जप-कीर्तन करना चाहिये।

अनुक्रमणिका

आरतियां

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिये	1-2
मंगलाचरण	3
आरती श्री गणेशजी की	4
आरती श्री अम्बाजी की	5
आरती श्री कालीजी की	6
आरती श्री लक्ष्मीजी की	7
आरती श्री वैष्णोदेवीजी की	8
आरती श्री सरस्वतीजी की	10
आरती श्री जगदीशजी की	11
आरती श्री शंकरजी की	12
आरती श्री रामचन्द्रजी की	13
आरती श्री श्यामजी की	14
आरती श्री हनुमानजी की	15
आरती श्री नमस्कार मन्त्र की	16
आरती श्री पार्श्वनाथजी की	17
आरती श्री महावीरजी की	18
आरती श्री गोमाताजी की	19
आरती श्री गुरूदेवजी की	20
आरती श्री सत्यनारायणजी की	21
आरती श्री कुंजबिहारीजी की	22
आरती श्री लक्ष्मी-नारायणजी की	23
आरती श्री संतोषी माता की	24
आरती श्री तिरूपति बालाजी की	25
आरती श्री विश्वकर्माजी की	26
आरती श्री राणीसती दादीजी की	27
आरती श्री गंगाजी की	28

अनुक्रमणिका

आरती श्री सूर्य भगवान की 29
आरती श्री शनि देव जी की 30
आरती श्री श्रीमद्‌भवद्‌गीता जी की 31
आरती श्री भैरवजी महाराज की 32
आरती श्री साई बाबा जी की 33
आरती श्री पितरजी महाराज की 34
आरती श्री रामदेवजी की 35
आरती श्री रामायणजी की 36

श्री गणेशजी के भजन

म्हारा प्यारा रे 38
प्रथम वन्दना करां 39
सबसे पेल्या थाने 40
गजानन्द सरकार पधारो 41
थारै माथे मुकुट विराजे 42

श्री शंकरजी के भजन

श्री शिव वन्दना 44
श्री द्वादश ज्योतिर्लिंगम् 45
ऊँ श्री शिवाय आराधना 46
हरि ऊँ नमः शिवायः 47
हम सदा शिव 48
फरियाद मेरी सुन के 49
एक दिन वो भोला भण्डारी 50
डमरु वाले बाबा 51
डमरु बजाए 52
करते वंदने आए है 53
मेरी गौराजी मैया बनेगी दुल्हनियाँ 54

अनुक्रमणिका

श्री गुरूदेवजी के भजन

गुरू महिमा	55-56
गुरूदेव दया करके	57
माता पिता गुरू प्रभु	58
इतनी शक्ति हमें देना	59
आश्रम में सब	60
गुरूवर तुमसे	61
पल पल जो हरि	62
जाने वाले एक संदेशा	63
मिलती है गुरूवरों की	64
सागर से भी गहरा	65
ऐ मालिक तेरे	66
लताओं पुष्प बरसाओ	67
सब पाप करम कट जाते हैं	68
दरबार अनोखा	69
दरबार गुरुदेव ने लगाया	70
एक बार तो गुरुवर	71
उलझन मेरी गुरुवर प्रभु	72
गुरुदेव से नजरें	73
दानियों में गुंज रहा	74
दरबार है निराला	75
जय जय ब्रह्मर्षि गुरुवर	76
आना गुरु जी आना	77-78
ओ मेरे गुरुजी प्रणाम हामारा	79
चरणों की धूलि हमें दे	80

अनुक्रमणिका

श्री रामजी की कथा एवं भजन

श्री राम वन्दना	82
रामायणः पढने का ग्रंथ नहीं जीने का शास्त्र	83-85
श्री रामचन्द्र कृपालु	86
आ लौट के आज्या मेरे	87
ओ केवट नाव ले	88
सीताराम, सीताराम	89
कभी कभी भगवान	90
दाता एक राम	91
जग में सुन्दर है	92
रघुपति राघव राजा राम	93
कभी राम बनके	94
राम से बड़ा	95
हे राम	96
न जाओ दीनबन्धु	97
मेरी छोटी सी है नाव	98
राम नाम अनमोल है प्यारे	99
तेरे मन में राम तन में राम	100
राम प्यारे से जिसका सम्बन्ध है	101
श्री राम का सुमिरन किया करो	102
रामनाम के हीरे मोती	103
प्रेममुदित मनसे कहो राम	104
भगवान तुम्हारे चरणों में	105
नाथ मैं थारों जी थारो	106
मिलता है सच्चा सुख	107
भजो रे मन, राम.नाम सुखदाई	108

अनुक्रमणिका

पायो जी म्हे तो राम 109
भज मन रामचरन सुखदाई 110
तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार 111
भजले मनवा साँज सबेरे 112
जब तक है तेरी जिन्दगी 113
'राम नाम' का जीवन में महत्व 114-115

श्री हनुमानजी के भजन

संकटमोचन हनुमानाष्टक 119-120
श्री बंजरंग बाण 121-122
श्री हनुमान कथा 123-124
भरोसो भारी है 125
ओ सालासर के सावंरिया 126
मेरी विनती सुनो 127
तेरे तन में बसे राम 128
लाल लंगाटो हाथ 129
आ लौट के आजा 130
दुनिया चले ना श्रीराम के बिना 131
झालर शंख नगाड़ा 132
बजरंगबली मेरी नाव 133
चालो भक्तों चालां 134
ओ सुन अंजनी 135
छम-छम नाचे देखो 136
लहर लहर लहराए रे 137
मंगलवार तेरा है 138
श्रीराम की गली में तुम जाना 139
सालासर वाले बाबा 140

अनुक्रमणिका

भजले प्यारे साँझ सबेरे	141
कथा सुनाऊं सबको मैं	142
मुझे माफ करो श्री राम	143
न स्वर है ना सरगम है	144
कीर्तन की है रात बाबा	145
बानर बाँको रे	146
अंजनी माँ के हुयो है लाल	147
आज हनुमान जयंती है	148
तेरे जैसा राम भक्त	149
आना पवनकुमार	150
हे दुःख भंजन, मारूति नन्दन	151
उठे तो बोले राम....	152
दुनिया में देव हजारों हैं	153
मंगल मूर्ति राम दुलारे	154
आज मंगलवार, महावीर का वार	155-156
नाम तेरा है बजरंग बाला	157
हनुमान को खुश करना	158
श्री हनुमानचालीसा	159-161
श्री माताजी के भजन	
दुर्गा नामावली स्तोत्र	168
जगदम्बे थे तो	169
रख दे सर पे	170
देना हो तो दीजिये	171
मैय्या नवरातों	172
मुझे दर्शन दे गयी माँ	173
माता जिनको याद करे	174
जगदम्बे भवानी मैय्या	175

अनुक्रमणिका

जगदम्बे माँ भवानी एक बार 176
मेंहदी ओ मेंहदी इतना बता दे 177
मेरे घर के आगे माँ 178
मेरा आप की कृपा से 179
ऐ माँ मुझको ऐसा घर दो 180
जब कोई नही आता 181
मेहंदी रची थारे हाथां में 182
आओ भक्तों तुम्हें 183
झिलमिल-झिलमिल चूनड़ी में तारा चमके 184
ये सुन्दर श्रृंगार सुहाना लगता है 185
साच्चा है दरबार शेरां 186

श्री श्यामजी के भजन

गोविन्द जय-जय 189
अच्युतं केशवं 190
छोटी छोटी गैय्या 191
थाली भरकर ल्याई 192
जाने वाले एक 193
आओ कन्हैया आओ मुरारी 194
नींद भी आयेगी 195
राधे-राधे रटो 196
अरदास हमारी है 197
मैया मोरी मैं 198
यशोमति मैया से 199
मेरा छोटा सा संसार 200
ऐसी लागी लगन 201
श्याम तेरी मुरली 202

अनुक्रमणिका

जो मैं होता साँवरे	203
मुरली जोर की बजाई	204
इतना तो करना स्वामी	205
अरे द्वारपालो	206
जरा क गाड़ी डाट भगत	207
तेरो मोर छड़ी के आगे	208
मोर छड़ी लहराई रे	209
यशोदा माँ के हुया लाल	210
एजी म्हारा नटवर नागरिया	211-212
राधिका गौरी से	213
इक आस तुम्हारी है	214
सखरीया के तीर खड़ी या	215-216
बड़ी देर भई नन्दलाला	217
नटवर नागर नन्दा	218
राधे तेरे चरणों की	219
होगा तुमसे प्यारा कौन	220
सुख के सब साथी	221
माया का एक सिंह बनाया	222-223
कैसे आऊँ रे कन्हाई	224
मीठे रस से भरोड़ी	225
कठे से आयो श्याम	226
सबसे ऊँची प्रेम सगाई	227
इक बार तुम तो राधा	228
श्री राधे गोविन्द	229
हर जनम में सांवरे का	230
सुन लीज्यो बिनती मोरी	231
मधुराष्टकम्	232

अनुक्रमणिका

श्री रामदेवजी के भजन

रूणीचे रा धणिया	234
खमा खमा हो धणिया	235

श्री भैंरवजी के भजन

कीर्तन में आप पधारो जी	237

श्री जैन स्तुति

अर्हत् वन्दना - श्री नमस्कार महामंत्र	240-241
भाव-भीनी वन्दना	242
लोगस्स पाठ	243
उपसर्गहर स्तोत्र (लघु)	244
तीर्थंकर चौबीस	245
महावीर प्रभु के चरणों में	246
प्रभु पार्श्वदेव	247
वंदना आनन्द पुलकित	248
संयममय जीवन हो	249
चैत्य पुरूष	250
प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर	251
आओ-आओ भिक्षु स्वामी	252

जीवन सत्य

ऊँ का महत्व	253
फलदायी मंत्र	254
गायत्री मंत्र	255
चौघड़िया	256
राशि ज्ञान चक्र	257
यदि भला किसी का कर ना सको	258
क्या लेकर तू आया	259

अनुक्रमणिका

ॐ अर्हम्

भाई म्हारा रंग सूँ	260
कभी प्यासे को	261
बांट लिया है अपने	262
हो भाई म्हारा	263
मैली चादर ओढ़ के कैसे	264
चेतन चिदानन्द	265
म्हारो श्याम बसे	266
मेरे मालिक के दरबार	267
बेटा श्रबण पाणी प्यादे	268
तूने अजय रचा भगवान	269
जोत से जोत जगाते चलो	270
इस योग्य हम कहाँ है	271
अब सौप दिया इस जीवन	272
जीवन का भरोसा	273
जो हम भले-बुरे तौ तेरे	274
करी गोपालकी सब होइ	274
जो पै रामनाम धन धरतो	275
अबकी टेक हमारी लाज	275
प्रभु मेरे अवगुन न धरो	276
हरि बिन कौन दरिद्र हरै	276
आँखियाँ हरि दरसनकी प्यासी	277
जनम तेरा बातों ही बीत गयो	277
मुनि वृन्द कह गये जिया रे	278
राम सुमिर के रहम	279
तु आयो है अकेलो रे भाई	280
इक झोली में फूल भरे हैं	281
तोरा मन दर्पणं कहलाए	282

अनुक्रमणिका

गोपीचन्द	283-286
अब सौंप दिया इस	287
तेरा नाम का सुमरण करके	288
ऋषि-मुनि सब हार	289
दूसरों का दुखड़ा दूर करने	290
कलयुग में एक बार कन्हैया	291
मन लागो मेरे यार	292
अब कैसे छुटै नाम रट लागी	293
हे पिंजरे को ये मैना	294
उठ जाग मुसाफिर भोर भई	295
हरी तुम हरी जनको भीर	296
पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे	297
शान्ति पाठ	298
मातृ-भूमि स्तुति	
राष्ट्र गीत	299
बन्देमातरम्	300
जहाँ डाल डाल पर सोने	301
ऊँ श्री कीर्तन	
श्री मन नारायण	302

श्री गणेशजी महाराज

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाः, लंबोदराय शुकलाय जगद्धिताय।
नागानिनाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय, गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिए

आरती को 'आरात्रिका' अथवा 'आरातिक' और नीराजन भी कहते हैं। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है–

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।
सर्वे सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी आरती कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में कहा गया है–

धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्या च प्रवन्द ते।
कुल कोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम्॥

आरती में पहले मूलमन्त्र (भगवान या जिस देवता का जिस मन्त्र से पूजन किया गया हो, उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पांजलि देनी चाहिए और ढोल, नगारे, शंख, घड़ियाल, झांझर आदि महावाद्यों के तथा जय-जयकार के शब्द के साथ शुभ पात्र में घृत से या कपूर से विषम संख्या की अनेक बातियां जलाकर आरती करनी चाहिए।

साधारणतः पांच बातियों से आरती की जाती है, एक सात या उससे अधिक बातियां जलाकर भी आरती की जाती है। कुंकुंम, अगर, कपूर, चन्दन, रूई और घी अथवा धूप की एक, पांच या सात बतियां बनाकर शंख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिए।

आरती

आरती के पांच अंग होते हैं। प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तों से और पांचवां साष्टांग दण्डवत् से आरती करे। आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार घुमाएं, दो बार नाभिदेश में, एक बार मुखमंडल पर और सात बार समस्त अंगों पर घुमाना चाहिए।

आरती में आर्त भावना होती है। आरती को उपासना का साररूप भी कहा जा सकता है। आर्त भी भगवान को याद करता है, तो समझो कृतार्थ हो गया है। विपत्ति में जब आर्त स्वर से पुकारता है, तो भगवान स्वयं अपने भक्त की लाज बचाने तथा उसकी रक्षा करने के लिए दौड़े चले आते हैं, जैसे द्रौपदी ने सब ओर से निराश होकर आर्त भाव से श्रीकृण को पुकारा। श्रीकृष्ण आए, वस्त्रावतार लिया और द्रौपदी की लाज रखी। इससे भक्त की संसार के प्रति की जाने वाली आस बुझ जाती हैं। परमात्मा के दर्शन की झलक उस अनादि सत्ता के प्रति निष्ठा पक्की होती है। तब लगता है कि सच है-

दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करे ना कोय,
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।।

यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्ट देवता की प्रसन्नता के लिए की जाती है। इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है।

मंगलाचरण

ब्रह्म प्रणाम प्रणाम गुरू, पुनि प्रणाम सब संत।
करत मंगलाचार शुभ, नाशत विघ्न अनन्त।।
मात भवानी दाहिने, सन्मुख होय गणेश।
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश।।

ऊँ गजाननं भूतगणाधि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमा सुतं शोक विनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।
ऊँ मंगलम् भगवान विष्णु, मंगलम् गरूड़ध्वजः।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षः, मंगलायतनो हरिः।।
सशंख चक्रं सकिरीट कुण्डलं, सपीतवस्त्रं सरसीरूहेक्षणम्।
सहारवक्षस्थल कौस्तुभश्रियं, नमामि विष्णु शिरसा चतुर्भुजम्।।
लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीव नेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारण्यरूपं करूणाकरंतं श्री रामचन्द्रं शरणम् प्रपद्ये।।
मनोजवं मारूततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्री रामदूतं शरणम् प्रपद्ये।।
ऊँ सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ते।।
वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरूम्
मूकं करोति वाचालं पंगु लंघयते गिरिम्।
यत्कृपातमहं वन्दे परमानन्द माधवम्।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत।।
ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ऊँ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !!!

ॐ अर्हम्

आरती श्री गणेशजी की

गजाननं भूतगणादि सेवितम्,
कपित्थ जम्बूफल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्,
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।। ।।जय...।।

पान चढ़े पुष्प चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुवन को भोग लगे, सन्त करे सेवा।। ।।जय...।।

एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूस की सवारी।। ।।जय...।।

अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बांझिन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। ।।जय...।।

हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
सब काम सिद्ध करे, श्री गणेश देवा।। ।।जय...।।

दीनन की लाज राखो, शंभु-सुत हमारी।
कामना को पूरी करो, जाऊँ बलिहारी।। ।।जय...।।

रिद्धि देता सिद्धि देता, वृद्धि देता भारी।
सूरदास शरणें आयो, लाज राखो म्हारी।। ।।जय...।।

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ।। ।।जय...।।

आरती श्री अम्बाजी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय मंगल मूर्ति,
मैया जय आनन्द करणी।।
तुमको निश दिन ध्यावत् हरि ब्रह्म शिवरी।। जय अम्बे।।

मांग सिन्दूर विराजत, टीको-मृगमद को,
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्र बदन नीको।। जय अम्बे।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।। जय अम्बे।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्रधारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी।। जय अम्बे।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रें मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।। जय अम्बे।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धुम्र विलोचन नैना, निश दिन मदमाती।। जय अम्बे।।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधुकैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। जय अम्बे।।
ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम-निगम बखानी, मैया तुम शिव पटरानी।। जय अम्बे।।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू।। जय अम्बे।।
भुजा चार अति शोभित, खड़ग खप्परधारी।
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी।। जय अम्बे।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।। जय अम्बे।।
या अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे।। जय अम्बे।।

ॐ अर्हम्

आरती श्री कालीजी की

अम्बे! तूँ है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली
तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैय्या हम सब उतारें,
तेरी आरती ।।टेर।।

तेरे जगत के भक्त जनन पर, भीड़ पड़ी है भारी,
दानव दल पर टूट पड़ो माँ, कर के सिंह सवारी,
सौ सौ सिंहों सी तूँ बलशाली, अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तूँ ही तो संहारती, ओ मैय्या...।।1।।

माँ बेटे का है इस जग में, बड़ा ही निर्मल नाता,
पूत कपूत सुना है पर ना, माता सुनी कुमाता,
सब पे अमृत बरसाने वाली, मन को हरसाने वाली,
नैय्या भँवर से उबारती, ओ मैय्या...।।2।।

नहीं माँगते धन और दौलत, ना चांदी ना सोना,
हम तो मांगे माँ तेरे मन में, एक छोटा सा कोना,
सब पे करुणा बरसाने वाली, विपदा मिटाने वाली,
सतियो के सत को संवारती, ओ मैय्या...।।3।।

आरती श्री लक्ष्मीजी की

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी।
हरि प्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसदिन ध्यावत, हर विष्णु धाता ।।जय।।

ब्रह्माणी, रूद्राणी, कमला, तु ही है जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता।। ।।जय।।

दुर्गारूप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, रिद्धि सिद्धि धन
पाता।। ।।जय।।

तू ही पाताल बसन्ती, तू ही है शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, जगनिधि की त्राता।। ।।जय।।

जिस घर थारो बासो, जाही में गुण आता।
कर न सकै सोई करले मन नहिं धड़काता।। ।।जय।।

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न होय राता।
खान-पान को वैभव, तुम बिन कुण दाता।। ।।जय।।

शुभ गुण सुन्दर युक्त, क्षीरनिधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई भी नहीं पाता।। ।।जय।।

या आरती लक्ष्मीजी की जो कोई नर गाता।
उर आनन्द अति उमंगे, पाप उतर जाता।। ।।जय।।

स्थिर चर जगत बचावे कर्म प्रेर ल्याता।
राम प्रताप मैयाजी की, शुभ दृष्टि चाहता।। ।।जय।।

आरती श्री वैष्णो देवीजी की

भोर भई दिन चढ़ गया मेरी अम्बे-२
हो रही जय जयकार मन्दिर बीच आरती।
जय माँ हो दरबारा वाली आरती,
जय माँ पहाड़ांवाली आरती, जय माँ ।।1।।

काहे जी मैया तेरी आरती बनावां-2,
काहे दियावाँ बीच बाती मन्दिर बीच आरती।
जय माँ तू है चोलेवाली आरती,
जय माँ पहाड़ांवाली आरती, जय माँ ।।2।।

सर्व सुनेदी तेरी आरती बनावाँ-2,
अगर कपूर पावां बाती मन्दिर बीच आरती।
जय माँ हे माँ पिन्डीवाली आरती,
जय माँ हो पहाड़ांवाली आरती, जय माँ ।।3।।

कौन सुहागन दिवा बालिया मेरी मैया-2,
कौन जागेगा सारी रात मन्दिर बीच आरती।
जय माँ सच्ची माँ जोतांवाली आरती,
जय माँ हो पहाड़ांवाली आरती। जय माँ ।4।।

सर्व सुहागण दिवा बालिया मेरी मैया-2,
जोत जगेगी सारी रात मन्दिर बीच आरती।
जय माँ हे माँ तिरहा रानी आरती,
जय माँ हो पहाड़ांवाली आरती। जय माँ ।।5।।

जुग जुग जीवे जमुवे दा राजा-2,
जिसने ये तेरा भवन बनाया मन्दिर बीच आरती।
जय माँ हे मेरी अम्बे रानी आरती,
जय माँ हो पहाड़ांवाली आरती। जय माँ ।।6।।

सिंहली चरण तेरा ध्यान यश गावे,
जो ध्यावे सो फल पावे, रखवाली की लाज, मन्दिर बीच आरती।
जय माँ हो सोनेवाली आरती,
जय माँ हो पहाड़ांवाली आरती। जय माँ ।।7।।

ॐ अर्हम्

आरती श्री सरस्वतीजी की

कज्ल पूरित लोचन भारे, स्तर युग शोभित मुक्त हारे।
वीणा पुस्तक रंजित हस्ते, भगवत् भारती देवी नमस्ते।।

जय सरस्वती माता जय-जय हे सरस्वती माता।
सदगुण वैभवशालिनी, त्रिभुवन विख्याता।।जय।।

चन्द्रवदन पद्मासिनी, द्युति मंगलकारी।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी ।।जय।।

बांए कर में वीणा, दाएं कर माला।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला ।।जय।।

देवी शरण जो आए, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया ।।जय।।

विद्या ज्ञान प्रदायिनी, ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह और अज्ञान तिमिर का, जग से नाश करो ।।जय।।

धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो।
ज्ञानचक्षु दे माता, भव से उद्धार करो ।।जय।।

माँ सरस्वतीजी की आरती जो कोई नर गावे
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे ।।जय।।

आरती श्री जगदीश जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।। ॐ जय।।

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिन से मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ।।ॐ जय।।

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ मैं किसकी।।।।ॐजय।।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ।। ॐ जय।।

तुम करूणा के सागर, तुम पालनकर्ता
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता।। ।।ॐ जय।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।। ।।ॐ जय।।

दीनबन्धु, दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा मैं तेरे।। ।।ॐ जय।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ।।ॐ जय।।

तन, मन, धन न्यौछावर सब कुछ है तेरा,
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।। ।।ॐ जय।।

पारब्रह्म की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत "शिवानन्द स्वामी", मनवांछित फल पावे।।।।ॐ जय।।

आरती श्री शंकरजी की

जय शिव ओंकारा, ॐ जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ जय॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे ।। ॐ जय।।
दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे।
त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे।। ॐ जय।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी ।। ॐ जय।।
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे।। ॐ जय।।
कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी ।। ॐ जय।।
बह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ।। ॐ जय।।
लक्ष्मी व सावित्री पारवती संगा।
पारवती अर्द्धांगी, शिवलहरी गंगा।। ॐ जय।।
पर्वत सोहैं पार्वती, और शंकर कैलासा।
भांग धतूर का भोजन, और भस्मी में वासा।। ॐ जय।।
शिव की जटा में गंग बहत है, गल मुण्डन माला।
शेष नाग लिपटावत, ओढ़त मृगछाला।। ॐ जय।।
काशी में विराजे विश्वनाथ, नन्दो ब्रह्मचारी।
नित उठ दर्शन पावत, महिमा अति भारी।। ॐ जय।।
त्रिगुणस्वामि जी की आरती जो कोई नर गावे
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे।।

आरती श्री रामचन्द्रजी की

आरती कीजे श्री रामचन्द्र की।
दुष्टदलन सीतापति जी की।।

पहली आरती पुष्पन की माला,
काली नाग नाथ लाये गोपाला।।

दूसरी आरती देवकी नन्दन,
भक्त उबारन कंस निकन्दन।।

तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे,
रत्न सिंहासन सीता राम जी सोहे।।

चौथी आरती चहुं युग पूजा,
देव निरंजन स्वामी और न दूजा।।

पांचवीं आरती राम को भावें,
रामजी का यश नामदेवजी गावें।।

ॐ अर्हम्

आरती श्री श्यामजी की

ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे
खाटू धाम बिराजत, अनुपम रूप धरे ।।ॐ जय।।

रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर घुरे
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।।ॐ जय।।

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।।ॐ जय।।

मोदक खीर चुरमा, सुवरण थाल भरे
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।।ॐ जय।।

झाँझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग घुरे
भक्त आरती गावें, जय जय कार करें ।।ॐ जय।।

जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-२ उचरे ।।ॐ जय।।

श्री श्याम बिहारी जी की आरती जो कोई नर गावे
कहत मनोहरलाल स्वामी, मनवांछित फल पावे ।।ॐ जय।।

ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे
निज भक्तों के तुमने, पूरण काज करे ।।ॐ जय।।

आरती श्री हनुमानजी की

संकट मोचन हनुमान प्रभु, भक्तों के प्रतिपाल।
शरणागत की लाज राखियो, हे अंजनी के लाल।।

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जांके बल से गिरिवर काँपे, रोग दोष जाके निकट न झाँपै।।
अंजनी पुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे वीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारी सिया सुधि लाये।।
लंका सौ कोटि समुद्र सी खाई, जात पवन सुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े धरणी पर, आनि संजीवन प्राण उबारे।
पैठि पाताल तोरि यम.कातर, अहिरावण की भुजा उखारे।।
बायें भुजा सब असुर संघारे, दाहिनी भुजा सब सन्त उबारे।
सुरनर मुनिजन आरती उतारे, जय-जय-जय हनुमान उचारे।।
कंचन थाल कपूर लौ छाई, आरती करत अंजनी माई।
जो हनुमान जी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ परम पद पावे।
लंका विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीरति गाई।।

ॐ
अर्हम्

आरती श्री नमस्कार मन्त्र की

ॐ जय अरिहंताणं, स्वामी जय अरिहंताणं।
भाव भक्ति से नित्य प्रति, प्रणमूं सिद्धाणं।।
ॐ जय अरिहंताणं। ध्रुव।

दर्शन ज्ञान अनन्ता, शक्ति के धारी । हो स्वामी।
यथाख्यात चारित है, कर्म शुत्र हारी । ॐ जय।1।

हे सर्वज्ञ सर्वदर्शी, बल सुख अनन्त पाये । हो स्वामी।
अगुरु-लघु अमुरत, अव्यय कहलाये । ॐ जय।2।

णमो आयरियाणं, छत्तीस गुण पालक । हो स्वामी।
जैन धर्म के नेता, संघ के संचालक । ॐ जय।3।

णमो उवज्झायाणं, चरण करण ज्ञाता । हो स्वामी।
अंग उपांग पढ़ाते, ज्ञान दान दाता । ॐ जय।4।

णमो लोए सव्वसाहूणं, ममता मद हारी । हो स्वामी।
सत्य अहिंसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य धारी । ॐ जय ।5।

भक्त कहे शुद्ध मन, जो नर ध्यान धरे । हो स्वामी।
पावन पंच परमेष्ठी, मंगलाचार करे । ॐ जय ।6।

आरती श्री पार्श्वनाथजी की

ओउम जय पारस नाथा, स्वामी जय पारस नाथा २
जगत्रायक सुखदायक, गूंजे गुण गाथा । ॐ...

लीना जन्म बनारस, माता बामा के जाये स्वामी २
अश्वसेन नृप नन्दन, सुर नर हर्षाये । ॐ...

दर्शन ज्ञान चरित्र के नायक, सबके सुखकारी स्वामी २
कमठ तप अभिमान दूर कर, है सत गुण धारी । ॐ...

ज्ञान ध्यान तप योग समाधि, दृढ़ता दिखलाये स्वामी २
रोग शोक दुर्भिक्ष मिटाकर, सब सुख पहुंचाये । ॐ...

नाग नागिनी के प्रभु रक्षक, सब सन्ताप हरे स्वामी
ज्ञान गुण को देख देव गण, जय-जयकार करे । ॐ...

कठिन तपस्या करके प्रभु जी, पायो केवल ज्ञान स्वामी
भाव भक्ति से जो नर गावे, पावे सुख सम्मान । ॐ...

दीन दयाल दया के सागर, है मंगलकारी स्वामी २
'भाव सहित भक्त' गुण गावे, चरण कमल की बलिहारी ।ॐ...

ॐ अर्हम्

आरती श्री महावीरजी की

जय महावीर भगवान,
मन मंदिर में आओ धरूं निरन्तर ध्यान॥
जय महावीर भगवान

1) पावन नाम तुम्हारा, मंत्राक्षर प्यारा,
मेरी स्वर लहरी पर, उठे एक ही तान
जय महावीर भगवान॥

2) राग-द्वेष-विजेता, सिद्धि-सदन नेता,
क्षमामूर्ति जग त्राता, मिटे सकल व्यवधान।
जय महावीर भगवान॥

3) अनेकान्त-उद्‌गाता, अनुपम सुखदाता,
जनम-जनम के बंधन, तोड़ कर संधान,
जय महावीर भगवान॥

4) आधि-व्याधि की माया, मिटे प्रेत-छाया,
आत्म-शक्ति जग जाए, लघु भी बने महान।
जय महावीर भगवान॥

5) भक्ति भरा मन मेरा, तोड़ रहा घेरा,
तन्मय बनकर 'तुलसी' करूं सदा संगान।
जय महावीर भगवान॥

आरती श्री गोमाताजी की

सर्वदेवमयी गोमाता
तमसो माँ ज्योतिर्गमय

इतनी शक्ति तू दे गोमाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे भूलकर भी कोइ भूल हो ना।।

ॐ जय श्री गोमाता, ॐ जय श्री गोमाता।
दुख हरणी, सुख करणी, तू ही जन्मदाता ।।ॐ।।

देव करें आराधना तेरी, हे माँ सुर जननी।
तू आरोग्यदात्री मैया, तू पीड़ा हरणी ।।ॐ।।

सींग हैं शक्ति प्रतीक तेरे, और पूँछ चँवर शोभा ।
सूर्य चंद्र सम नेत्र तेरे, मुख मण्डल की शोभा।।ॐ।।

तेरे बदन में माता, ब्रह्माण्ड समाया है ।
वेद ग्रंथों ने तेरा, गुण ही गाया है ।।ॐ।।

दूध-मूत्र-गोबर-धृत-मक्खन, पंचामृत गुणकारी।
तू गंगा-गायत्री-गीता सम अवतारी ।।ॐ।।

भोग चढ़े दूर्बा को तेरे, हे माँ वृष जननी।
कल्याणी सतरूपा, माँ तू जग जननी ।।ॐ।।

जो जन मातु की आरती, नित प्रतिदिन गावे।
कहत मातु यह भक्त तेरा, मन वांछित फल पावे ।।ॐ।।

ॐ अर्हम्

आरती श्री गुरूदेवजी की

ॐ जय गुरुदेव हरे, स्वामी जय गुरुदेव हरे।
पूरण ब्रह्म अजन्मा, नित सुख वेद हरे ।।ॐ।।

शीतल शांत सदा इकरस, मन वाणी से परे। स्वामी
कृपा कर वर दीजो, द्वितीय भाव जरे ।।ॐ।।

सबके प्रेरक सब के भीतर, सर्व रुप सदा। स्वामी
नेति नेति श्रुति गावत, पावत नहीं भेदा।।ॐ।।

तुम्हारो ध्यान धरत नित, ब्रह्मा विष्णु हरे। स्वामी
सहस्र नाम उचारत, उपमा शेष करे।।ॐ।।

पूजा पूजक पूज्य, रूप सब ही आप धारे। स्वामी
तुम हो सब में व्यापक, सबसे हो न्यारे ।।ॐ।।

प्रभु उपकार तुम्हारो, हमसे जाय न बरे। स्वामी
तपते तेल से निकास्यों ऐसी कृपा करे।।ॐ।।

सब ज्योतिन की ज्योति, सूर्य चन्द्र तारे। स्वामी
ले प्रकाश तुम्हारा, सब प्रकाश करे।।ॐ।।

की कुछ भेंट तुम्हारी, मिलकर दास करे। स्वामी
तुम्हारी भेंट तुम्हारे हमसे कुछ ना सरे।।ॐ।।

दासन दास थारी आरति, चरणाँ के बीच करे। स्वामी
कृपा दृष्टि निहारो, सिर पर हाथ धरे।।ॐ।।

आरती श्री सत्यनारायणजी की

ऊँ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा।। ऊँ जय

रत्नजड़ित सिंहासन, अद्‌भुत छवि राजे।
नारद करत निरंतर, घण्टा ध्वनि बाजे।। ऊँ जय

प्रकट भये कलिकारण, द्विज को दरस दियो।
बुढ़े ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो।। ऊँ जय

दुर्बल भील कराल, इन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, तिनकी बिपती हरी।। ऊँ जय

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फेर स्तुति कीन्हि।। ऊँ जय

भाव भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्यो।
श्रद्धा धारण कीन्हि, तिनको काज करयो।। ऊँ जय

ग्वाल-बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हा, दीनदयालु हरि।। ऊँ जय

चढ़ता प्रसाद सवायो, कदली फल, मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्य देवा।। ऊँ जय

श्री सत्यनारायण स्वामी की आरती, जो कोई गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावे।। ऊँ जय

ॐ अर्हम्

आरती श्री कुंजबिहारीजी की

आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नन्द के आनन्द नन्दलाला।
परम आनन्द, राधिका रमणबिहारी की।
आरती..........।।1।।

गगन सम अंग कान्ति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाड़े बनमाली, भ्रमर सी अलक कस्तूरी तिलक।
चन्द्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की
आरती..........।।2।।

कनकमय मोर मुकुट बिलसे, देवता दर्शन को तरसे।
गगन से सुमन बहुत बरसे, बजे मुरचंग, मधुर मृदंग।
ग्वालिनी संग, अतुल रति गोप कुमारी की।
आरती..........।।3।।

जहाँ ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी श्री गंगा।
स्मरण ते होत मोह भंगा, बसी शिव शीश,जटा के बीच।
हरे अध कीच, चरण छवि श्री बनवारी की।
आरती..........।।4।।

चमकती उज्जवल तट रेणु, बजा रहे वृन्दावन वेणू।
चहूँ दिशि गोपी ग्वाल धेनु, हँसत मृदु, मन्द चाँदनी चन्द।
कटत भव फन्द, टेर सुन दीन भिखारी की।
आरती..........।।5।।

आरती श्री लक्ष्मी-नारायणजी की

जय लक्ष्मीनारायण, जय लक्ष्मी-विष्णो।
जय माधव, जय श्रीपति,
जय जय जय विष्णो ।।1।।

जय चम्पा सम-वर्णे जय नीरदकान्ते ।
जय मन्द-स्मित-सोभे जय अद्भुत शान्ते ।।2।।

कमल वराभय-हस्ते शादिकधासि् ।
जय कमलालयवासिनि गरूड़ासनचारिन् ।।3।।

सच्चिन्मयकरचरणे सच्चिन्मयमूर्ते ।
दिव्यानन्द-विलासिनि जय सुकमयमूर्ते ।।4।।

तुम त्रिभुवन की माता, तुम सबके त्राता ।
तुम लोक-त्रय-जननी, तुम सबके धाता ।।5।।

तुम धन-जन-सुख-संतति-जय देनेवाली ।
परमानन्द-विधाता तुम हो वनमाली ।।6।।

तुम हो सुमति घरों में, तुम सबके स्वामी ।
चेतन और अचेतन के अन्तर्यामी ।।7।।

शरणागत हूँ , मुझ पर कृपा करो माता ।
जय लक्ष्मी-नारायण नव-मंगल-दाता ।।8।।

ॐ अर्हम्

आरती श्री संतोषी माता की

जय सन्तोषी माता, जय सन्तोषी माता।
अपने सेवक जन की, सुख सम्पति दाता ॥ जय...

सुन्दर चीर सुनहरी माँ धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमके तन सिंगार लीन्हों ॥ जय...
गेरू लाल छटा छवि बदन कमल सोहे।
मंद हंसत करूणामयी त्रिभुवन मन मोहे ॥ जय...
स्वर्ण सिंहासन बैठी चंवर ढुरें प्यारे।
धूप दीप मधुमेवा भोग धरें न्यारे ॥ जय...
चना गुड़ घी में माँ सन्तोष कियो।
सन्तोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ॥ जय...
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई कथा सुनत मोही ॥ जय...
मन्दिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें तेरे बालक चरनन सिर नाई ॥ जय...
भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीजै।
जो मन बसे हमारे इच्छा फल दीजै ॥ जय...
दुखी, दरिद्र, रोगी, संकट मुक्त किये।
बहु धन-धान्य भरे घर सुख सौभाग्य दिये ॥ जय...
ध्यान धरो जन तेरी मन वांछित पायो।
पूजा कथा श्रवन कर घर आनन्द आयो ॥ जय...
शरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे।
संकट तू ही निवार दयामयी अम्बे ॥ जय...

आरती श्री तिरूपती बालाजी की

दक्षिण देश सवालख पर्वत, जगमग ज्योति दिवाला की।
तृप्ति में सियाराम बिराजै, चौकी हनुमत् बाला की।

शेषाचल पर आप विराजैं, गरूड़ाचल पर वैंकट जी।
जय और विजय पौरिया राजै, भेरी शंख नगारन की।

बालाजी के कनक सिंहासन, किलंगी हीरा लाला की।
कानों में मकराकृत कुण्डल उर वन माला आया की।।

बृहस्पतिवार जरी का जामा, ऊपर मौज दुशाला की।
शुक्रवार को दूध नहावन, मौज बनी नन्दलाल की।

देश देश के यात्री आवें, मार पड़े मृगछाला की।
आशानन्द गरीब तुम्हारों, पत राखों कंठी माला की।

जिस जिस इच्छा से जो जावे पावे वो फल आला की।
इक मूरत सब देव विराजे अद्भुत ज्योतिज्वाला की।।

हरि हरि यशुदा नन्दलाल की, हरि हरि जग रखवाला की,
हरि हरि घाट बाट रखवाला की,
जय बोला लक्ष्मण बाला की।

आरती श्री विश्वकर्माजी की

ऊँ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक श्रुति धर्मा॥

आदि सृष्टि में विधि को, श्रुति उपदेश दिया ।
जीव मात्र का जग में, ज्ञान विकास किया ।।

ऋषि अंगिरा ने तप से, शान्ति नहीं पाई ।
ध्यान किया जब प्रभु का, सकल सिद्धि आई ।।

रोग ग्रस्त राजा ने, जब आश्रय लिन्हा ।
संकट-मोचन बन कर, दूर दुःख किन्हा ।।

जब रथकार दम्पत्ति, तुम्हारी टेर करी ।
सुनकर दीन प्रार्थना, विपत्ति हरी सगरी ।।

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे ।
द्विभुज, चतुर्भुज, दसभुज, सकल रूप साजे ।।

ध्यान धरे जब पद का, सकल सिद्धि आवे ।
मन दुविधा मिट जावे, अटल शान्ति पावे ।।

'श्री विश्वकर्माजी' की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत गजानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे ।।

आरती श्री राणीसती दादीजी की

जय राणीसती माता, जय राणीसती माता। जय
कलियुग में अवतारी, जन-जन, सुखदाता।। राणी..

मांग सिन्दूर बिराजत-टीको मन मोहे।जय
गल मोतियन की माला-नथ बेसर सोहे।।राणी..

लाल चुनरिया चमके-छबि लागे प्यारी।जय
चुड़ला दम दम दमके-भक्तन हितकारी।।राणी..

नारायणी, ब्रह्माणी-पार्वती, सीता।जय
राणी सती कोइ कहत तूँ भगवद्गीतो।।राणी..

तनधन पति कहाये-गुरसामल जाई।जय
सत की ज्योत अनूठी-सेवक सुखदाई।।राणी..

झुंझुनुं में है वास तिहारो-शोभा अति न्यारी।जय
धूप, दीप, तुलसी से-पूजे नर नारी।।राणी..

भादो बदी अमावस-मेला खूब भरे।जय
दूर दूर के यात्री तुमको नमन करे।।राणी..

पुत्र, पौत्र सुख, सम्पति-अन, धन की दाता।जय
रोग विनाश करे जो द्वार तेरे आता।।राणी..

रण चण्डी का रूप तिहारा-ममतामयी माता।जय
जिसपर कृपा तुम्हारी-सब वैभव पाता।।राणी..

राणीसतीजी की आरती जो कोइ नर गावे।जय
रमाकान्त कहे निश्चय-वांछित फल पावे।।राणी..

आरती श्री गंगाजी की

गंगावारि मनोहारि मुरारिचरणाच्युतम्।
त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्।।

ऊँ जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।। ऊँ जय...

चन्द्र सी ज्योंति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।। ऊँ जय...

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता।। ऊँ जय...

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परम गती पाता।। ऊँ जय...

आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता।। ऊँ जय...

आरती श्री सूर्य भगवान की

जय कश्यप-नन्दन, ऊँ जय अदिति-नन्दन
त्रिभुवन-तिमिर-निकन्दन भक्त-हृदय-चन्दन।।टेक।।

सप्त-अश्वरथ राजित एक चक्रधारी।
दुखहारी, सुखकारी, मानस-मल-हारी।।जय०।।

सुर-मुनि-भूसुर-वंदित, विमल विभवशाली।
अघ-दल-दलन दिवाकर दिव्य किरण माली।।जय०।।

सकल-सुकर्म-प्रसविता सविता शुभकारी।
विश्व विलोचन मोचन भव-बंधन भारी।।जय०।।

कमल-समूह-विकासक, नाशक त्रय तापा।
सेवत सहज हरत अति मनसिज-संतापा।।जय०।।

नेत्र-व्याधि-हर सुरवर भू-पीड़ा-हारी।
वृष्टि-विमोचन संतत परहित-व्रतधारी।।जय०।।

सूर्यदेव करुणाकर अब करुणा कीजै।
हर अज्ञान-मोह सब तत्त्वज्ञान दीजै।।जय०।।

आरती श्री शनि देव जी की

जय-जय रविनन्दन जय दुःख भंजन
जय - जय शनि हरे ।।टेक।।

जय भुजचारी, धारणकारी, दुष्ट दलन।।
तुम होत कुपित, नित करत दुखी, धनी को निर्धन।।
तुम धर अनुप यम का स्वरुप हो, कटत बंधन।।
तब नाम जो दस तोहि करत सो बस, जो करे रटन।।
महिमा अपार जग में तुम्हारे, जपते देवतन।।
सब नैन कठिन नित बरे अग्नि, भैंसा वाहन।।
प्रभु तेज तुम्हारा अति हिंकरारा, जानत सब जन।।
प्रभु शनि दान से तुम महान, होते हो मगन।।
प्रभु उदित नारायण शीश, नवायन धरे चरण।।

जय-जय शनि हरे।

आरती श्रीमद्भगवद्गीता जी की

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्तिहरा।
तत्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म-परा॥जय०॥

निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी ॥जय०॥

राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा ॥जय०॥

आसुर-भाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी-सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी ॥जय०॥

समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुख की बानी।
सकल शास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियों की रानी ॥जय०॥

दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ॥जय०॥

ॐ अर्हम्

आरती श्री भैरवजी महाराज की

जय भैरव देवा प्रभु जय भैरव देवा
जय काली और गौरादेवी करते हैं सेवा। जय....

तुम्हीं आप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक,
भक्तों के सुख कारक, दीपक वसु धारक। जय ...

वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी,
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी। जय ...

तुम बिन देवा पूजन सफल नहीं होवे,
चतुर्वर्तिका दीपक दर्शक दुःख खोवे। जय ...

तेल चटिक दधि मिश्रित माषाबली तेरी,
कृपा कीजिए भैरव, करिए नहीं देरी। जय ...

पांव घुंघरू बाजत, डमरू डमकावत,
बटुकनाथ बन बालक तन-मन हरषावत। जय ...

बटुकनाथजी की आरती जो कोई जन गावे,
कहे धरणीधर मन वांछित फल पावे। जय ...

आरती श्री साईं बाबा जी की

आरती श्रीसाईं गुरुवर की, परमानन्द सदा सुरवर की।।
जाकी कृपा विपुल सुखकारी। दुःख-शोक, संकट, भयहारी।।

शिरडी में अवतार रचाया। चमत्कार से जग हर्षाया।।
कितने भक्त शरण में आये। सब सुख-शांति चिरंतन पाये।।

भाव धरे जो मन में जैसा। पावत अनुभाव वो ही वैसा।।
गरू की उदी लगावे तन को। समाधान लागत उस मन को।।

साईं नाम सदा जो गावे। सो फल जग में शाश्वत पावे।।
गुरुवासर करि पूजा सेवा। उस पर कृपा करत गुरुदेवा।।

राम, कृष्णा, हनुमान, रूप में। जानत जो श्रद्धा धर मन में।।
विविध धर्म के सेवक आते। दर्शन कर इच्छित फल पाते।।

साईं बाबा की जय बोलो। अन्तर मन में आनन्द घोलों।।
साई दास आरती गावे। बसि घर में सुख मंगल पावे।।

आरती श्री पितरजी महाराज की

जय जय पितरजी महाराज, मैं शरण पड्यो हूँ थारी ।।टेर।।

आप ही रक्षक, आप ही दाता, आप ही खेवनहारे।
मैं मूरख हूँ कछु नहीं जानूँ, आप ही हो रखवारे।।1।।
जय जय पितरजी महाराज ....

आप खड़े हैं हरदम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी।
हम सब जन हैं शरण आपकी, है ये अरज गुजारी।।2।।
जय जय पितरजी महाराज ....

देश और परदेश सब जगह, आपही करो सहाई।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई।।3।।
जय जय पितरजी महाराज ....

में भी आयो शरण आपकी, अपने सहित परिवार।
रक्षा करो आप ही सबकी, रटूँ में बारम्बार ।।4।।
जय जय पितरजी महाराज ....

आरती श्री रामदेवजी की

जय अजमल लाला, प्रभु जय अजमल लाला।
भक्त काज कलियुग में लीन्यो अवतारा।।जय।।

अश्वन की असवारी सोहे, केशरिया बागा।
शीश तुर्रा हद सोहे, हाथ लिये भाला।।जय।।

डूबत जहाज तिराई, भैरूँ दैत्य त्यारा।
कृष्ण कला भरा भंजन, राम रूणीचेवाला।।जय।।

अन्धन को प्रभु नेत्र देत है, सुख सम्पति माया।
कानन कुण्डल झिलमिल, गल पुष्पन माला।।जय।।

कोढ़ी जब करूणाकर आवत, होय दुःखी काया।
शरणागत प्रभु तेरी, भक्तन सुखदाया।।जय।।

श्री रामदेवजी की आरती जो कोई नर गावे।
कटे पाप तन मन का, सुख सम्पत्ति पावे।जय।।
ओम जय अजमल लाल.................।।

ॐ अर्हम्

श्री रामायण जी की आरती

आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की ।।टेर।।

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद,
बालमीक विज्ञान बिसारद।
सुक सनकादि सेष अरु सारद,
बरनि पवनसुत कीरति नीकी ।।1।।

गावत वेद पुराण अष्टदस,
छहो शास्त्र सब ग्रंथन को रस।
मुनिजन धन संतन को सरबस,
सार अंस समत सबही की ।।2।।

गावत संतत संभु भवानी,
अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।
ब्यास आदि कविबर्ज बखानी,
काकभुसुंडि गरुड़ के ही की ।।3।।

कलि-मल-करनि विषय रस फीकी,
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव भूरि अमी की,
तात मात सब बिधि तुलसी की ।।4।।

अर्हम्

श्री शिव-पार्वती परिवार

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

ॐ अर्हम्

म्हारा प्यारा रे

म्हारा प्यारा रे गजानन्द आइज्यो,
रिद्धि-सिद्धि नै सागै ल्याइज्यो जी।।

थांनै सब स्यूं पहलां मनावां,
लड्डुवन रो भोग लगावां।।
थे मूसै चढ़कर आइज्यो जी।। 1।।

माँ पार्वती रा प्यारा,
शिव-शंकर लाल दुलारा,
थे बांध पागड़ी आइज्यो जी ।। 2।।

थे हो रिद्धि-सिद्धि रा दाता री,
थांनै ध्यावै आ दुनियां सारी,
म्हांरा अटक्या काज बणाइज्यो जी ।। 3।।

थांरो "भक्त मंडल" यश गावै,
थांरै चरणां में शीष झुकावै,
म्हांरी नैय्या पार लगाइज्यो जी ।। 4।।

प्रथम वन्दना करां

प्रथम वन्दना करां आपकी, हे गिरजा के लाल।
आज सभा में, रखलीज्यो म्हारी लाज ।।टेर।।

बेगा गणपत आवो, अर्जी म्हारी है।
मूषे ऊपर करके, आज सवारी है।
दून्द दून्दाला सूंड सूंडाला, भक्तां रा सिरताज ।।आज।।

विघ्न निवारो कारज सारो, देव मेरा।
मर्जी थारी है आसरा एक तेरा।
डगमग नैया डोले म्हारी, आके जरा सम्हाल ।।आज।।

रतन सिंहासन बैठो संकट दूर करो,
शरण पड़े की मनकी आशा पूर्ण करो,
अटक्या कारज सारो म्हारा, रिद्धि सिद्धि रा भरतार ।।आज।।

ढ़ोलक शंख नगारे दर तेरे बाज रहे,
नर नारी सब झूम झूमकर नाच रहे,
पांव में घूँघरू बांध के नाचो, करदो हमें निहाल ।।आज।।

अन्धन को दो आँख, निर्धन को धन बांटो,
बांझन को दो पूत, दोष सारे काटो,
सेवक को दो सच्ची भक्ति, बलबुद्धि और ज्ञान ।।आज।।

ॐ अर्हम्

सबसे पेल्या थाने

सबसे पेल्या थाने मनावां गौरी सुत महाराज
थे हो देवों का सरताज।

दून्द दून्दाला सूण्ड सुण्डाला, लम्बोदर महाराज।
थे हो देवों का सरताज ।।टेर।।

गंगाजल से स्नान करांवा,
केशर चन्दन तिलक लगावां।
रंग बिरंगा फुलड़ा ल्यावां,
सजा-सजा थान पहरावां।
रिद्धि-सिद्धि थारे संग में सोहे, रणत भंवर महाराज ।।1 ।।

कानां में थारे कुन्डल सोहे,
हाथां में थारे फरसो सोहे।
मुसन को असवारी थारे,
नैना में काजलियो सोहे।
चौकी पर सिंहासन जापर बैठ्या थे गणराज ।।2 ।।

नाचां गावां भजन सुनावां,
झुम-झुम कर थाने रिझावां।
मोदक को थारे भोग लगावां,
भक्त थारा, गुण गावां।
लम्बोदर गजबदन विनायक, राखो म्हारी लाज ।।3 ।।

गजानन्द सरकार पधारो

गजानन्द सरकान पधारो, कीर्तन की सब त्यारी है,
आओ आओ, बेगा आओ, चाव दरश को भारी है।

थे आवो जद काम बणेला, थां पर सारी बाजी है,
रणत भंवरगढ़ वाला सुणल्यो, चिन्ता म्हाने लागी है।
देर करो मत, ना तरसाओ, चरणां अर्ज हमारी है ।।1।।

रिद्धि सिद्धि संग ले आओ विनायक, द्यो दर्शन थांरे भक्तां ने,
भोग लगावां, धोक लगावां, पुष्प चढ़ावां चरणां में।
गजानन्द थांरै हाथां में, अब तो लाज हमारी है ।।2।।

भक्तां की तो विनती सुण ली, शिव सुत प्यारो आयो है,
जय-जयकार करो गणपति की, आकर मन हरषायो है।
बरसैलो अमरत भगतां में, ''नंदू'' महिमा न्यारी है ।।3।।

ॐ अर्हम्

थारे माथे मुकुट विराजे...

म्हारा प्यारा रे गजानन्द आइज्यो।
थे आज्यो रिद्ध सिद्ध ल्याज्यो जी।
म्हाने आकर दरश दिखाज्यो जी ।।टेर।।

थारे माथे मुकुट विराजे,
थारे कानां कुण्डल साजैजी ।। म्हारा प्यारा.....

थारे माथे तिलक विराजे,
थारे गल बैजन्ती माला साजैजी ।। म्हारा प्यारा.....

थारे तन पिताम्बर साजे,
थारे पावाँ में घुँघुरु बाजैजी ।। म्हारा प्यारा.....

थारे मोदक भोग लगावाँ,
थारे मूषक वाहन साजैजी ।। म्हारा प्यारा.....

भादूड़ी चौथ नै आवाँ,
थारे फूलां रो गजरो पहरावाँजी ।। म्हारा प्यारा.....

थारो मन्दिर बण्यो अति भारी,
आवै दर्शन नै नर नारी जी ।। म्हारा प्यारा.....

थे भक्तां रा दुख काटो,
म्हारी पूरण करो अभिलाषा जी ।। म्हारा प्यारा.....

थारे "भक्त-मण्डल" गुण गावै,
थारै चरणां शीश नवावाँजी । म्हारा प्यारा.....

श्री शंकरजी

श्री शंकर भगवान

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बंधनामृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात।।

श्री शिव वन्दना

***ॐ कर्पूरगौरनं करूणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानि सहितं नमामि।।***

शीश गंगा अर्द्धंग पार्वती, सदा विराजत कैलाशी।
नन्दी-भृंगी नृत्य करत है, गुण भक्तन शिव के वासी।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहे, जहाँ बैठे है शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्तसुर, राग रागिनी अति गासी।
यक्ष-रक्ष भैरव जहाँ डोलत, बोलत है बन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भँवर करत हैं गुँजासी।।
कामधेनु कोटिक जहं डोलत, करत फिरत हैं भिक्षासी।।
सूर्यकान्त सम पर्वत सोहे, चन्द्रकान्त भव के वासी।
छऊँ तो ऋतु-ऋतु फलत रहत है, नगम रहत जो नितगासी।
ब्रह्मा विष्णु हरको ध्यान धरत हैं, कछु शिव हमको फरमासी।।
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दित सुख रासी।
जिनको सुमिरन सेवा करता, छुट जाय यम की फाँसी।
त्रिशूल धरजी को ध्यान निरन्तर, मना लगाकर जो गासी।
दूर करो विपदा शिव तन की, जनम-जनम शिव पद पासी।।
कैलाशी काशी के वासी बाबा, अविनाशी मेरी सुध लीज्यो।
सेवक जान सदा चरणन को, अपनो जान कृपा कीज्यो।।
आपतो प्रभुजी सदा सयाने बाबा, अवगुण मेरो सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनियो।।
अभयदान दीजो प्रभु मोको, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भवभंजन भव शुभकारी।
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भजामि भोलेबाबा, हर-हर शंकर आप शरणम्।।

श्री द्वादश ज्योतिर्लिंगम्

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं ओंकारममलेश्वरम्।।

परल्यां वैद्यनाथं च, डाकिन्या भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारुका बने।।

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्रयम्बकं गौमती तटे।
हिमालये तु केदारं, घुशमेशं च शिवालये।।

एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्त जन्म कृतं पापं, स्मरणेन विनश्यति।।

एतेषां दर्शनादेव पातक नैव तिष्ठति।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वराः।।

ॐ श्री शिवाय आराधना

ऊँ नमः शिवाय-ऊँ नमः शिवाय, हर-हर भोले नमः शिवाय।

जटा धराय शिव जटा धराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
गंगा धराय शिव गंगाधराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
कोटेश्वराय शिव कोटेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
भूतेश्वराय शिव भूतेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
ओंकारेश्वराय शिव ओंकारेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
नागेश्वराय शिव नागेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
विश्वेश्वराय शिव विश्वेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
त्रयुबंकेशवराय शिव त्रंयुबंकेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
महाकालेश्वराय शिव महाकेलशवराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
सोमेश्वराय शिव सोमेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
घुश्मेश्वराय शिव घुश्मेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
केदारेश्वराय शिव केदारेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
रामेश्वराय शिव रामेश्वराय, हर-हर भोले नमः शिवाय।
वैद्यनाथ शिवाय वैद्यनाथ, हर-हर भोले नमःशिवाय।
भीमाशंकर शिवाय भीमाशंकर, हर-हर भोले नमः शिवाय।
मल्लिकार्जुन शिवाय मल्लिकार्जुन, हर-हर भोले नमः शिवाय।
ऊँ नमः शिवाय, ऊँ नमः शिवाय, हर-हर भोले नमः शिवाय।

हरि ॐ नमः शिवाय

हरि ॐ नमः शिवाय...हरि ॐ नमः...हरि ॐ नमः...॥

मेरी टेर सुनो त्रिपुरारी,
अब तो ले लो खबर हमारी।
तेरे द्वार पे हम हैं आये ॥1॥

तेरी जटा में गंगा विराजे,
माथे पर चन्दा साजे।
और डम डम डमरू बजाये ॥2॥

तेरी लीला सब से न्यारी,
जिसे जाने दुनिया सारी।
तेरी महिमा बरणी ना जाये ॥3॥

क्यों करता है मुझसे बहाने,
क्या खाली हुए खजाने।
बाबा औघड़दानी कहाए ॥4॥

बाबा अंग भभूति रमाये,
नित भांग धतूरा खाये।
श्री राम का ध्यान लगाये ॥5॥

हम सदा शिव

हम सदा शिव को नमन हर बार करते हो...2
देवों के भी देव की जय जयकार करते हो.....
हरि ओम हरि हरि ओम हरि
हरि ओम नमः शिवाय

1) है जटा में गंग तन पे बाघांम्बर राजे
तन पे भसमी और गले मे मुंऽमाला साजे-2
सरपों का शिव हार और श्रृंगार करते हैं-2
देवों के भी देव की......

2) शीश पर चंदा सजे और कर डमरु सोहे
नृत्य तांडव करते त्रिभुवन का मन मोहे-2
गिरिजा संग कैलाश में विहार करते हैं
देवों के भी देव..........

3) भोले शंकर है दयालु, दीन के दाता
थोड़ी भक्ति जो करे वरदान वो पाता-2
पापों से निज भक्त का उद्धार करते हैं-2
देवों के.......

4) नाथ हमको दीजिये पावन चरण धुलि
तेरे भक्तों की सदा आशाऐं हो पूरी-2
कर दया भव सिन्धु पार करते हैं-2
देवों के भी देव.........................

फरियाद मेरी सुन के

फरियाद मेरी सुन के, भोलेनाथ चले आना
नित ध्यान धरूँ तेरा, बिगड़ी को बना जाना।।

तुझे अपना समझ कर मैं, फरियाद सुनाता हूँ,
तेरे दर पर आकर मैं, नित धूनी रमाता हूँ,
क्यों भूल गये बाबा, मुझे समझ के बेगाना।।

मेरी नाव भंवर डोले, तुम ही तो खेवैय्या हो,
जग के रखवाले तुम, तुम ही तो कन्हैया हो,
कर बैल सवारी तुम, भव पार लगा जाना।।

तुम बिन ना कोई मेरा, अब नाथ सहारा है,
इस जीवन को मैनें, तुम पर ही वारा है,
मर्जी है तेरी बाबा, अच्छा नहीं तड़फाना।।

नयनों मैं भरे आंसू, क्यों तरस न खाता है,
क्या दोष हुआ मुझ से, मुझे क्यों ठुकराता है,
अब मेहर करो बाबा, सुनकर मेरा अफसाना।।

ॐ अर्हम्

एक दिन वो भोला भण्डारी

एक दिन वो भोला भण्डारी, बन करके बृजनारी,
गोकुल में आ गये हैं।
पार्वती भी मना के हारी, ना माने त्रिपुरारी,
गोकुल में आ गये हैं ।।टेर।।

पार्वती से बोले, मैं भी चलूँगा तेरे संग में।
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूँगा तेरे संग में।
रास रचेगा बृज में भारी, मुझे दिखाओ प्यारी।।1।।
ओ मेरे भोले स्वामी, कैसे ले जाऊँ अपने साथ में।
मोहन के सिवा वहाँ, कोई पुरुष ना जाये रास में।
हँसी करेगी बृज की नारी, मानो बात हमारी ।।2।।
ऐसा बना दो मुझे, कोई न जाने इस राज को।
मैं हूँ सहेली तेरी, ऐसा बताना बृजराज को।
बना के जूड़ा पहन के साड़ी, चाल चले मतवाली।।3।।
हँस के सती ने कहा, जाऊँ बलिहारी इस रूप में।
एक दिन तुम्हारे लिये, आये मुरारी इसी रूप में।
मोहनी रूप बनाया मुरारी, अब है तुम्हारी बारी।।4।।
देखा मोहन ने, समझ गये वो सारी बात रे।
ऐसी बजाई बंसी, सुध बुध भूले भोलेनाथ रे।
सर से खिसक गई जब साड़ी, मुस्काये गिरधारी,
।।भोले शर्मा गये।।
दीन दयालु तेरा, तब से गोपेश्वर हुआ नाम रे।
ओ भोले बाबा तेरा, वृन्दावन में बना धाम रे।
'ताराचन्द' कहे ओ त्रिपुरारी रखियो लाज हमारी
।।शरण में आ गये।।

डमरु वाले बाबा

डमरु वाले बाबा तुमको आना होगा,
डम डम डमरु बजाना होगा,
माँ गोरां संग गणपति जी को लाना होगा,
डमरु वाले बाबा तुमको आना होगा,
डम डम डमरु बजाना होगा ।।टेर।।

सावन के महीने में हम काँवड़ लेके आयेंगे-2,
पावन गंगा जल से बाबा तुमको नहलायेंगे,
कावड़ियों को पार लगाना होगा, डम-डम डमरु...।।1।।

भांग धतुरा दूध बाबा तुमपे चढ़ायेंगे,
केशरिया चंदन से बाबा तिलक लगायेंगे,
भक्तों का कष्ट मिटाना होगा, डम-डम डमरु...।।2।।

तुम तो भोले दानी बाबा, जग से निराला है,
हाथों में त्रिशूल गल सर्पो की माला है,
नान्दिये पे चढ़कर आना होगा, डम-डम डमरु...।।3।।

जैसा भी रखोगे बाबा वैसा ही मंजूर है,
तेरी दया तो बाबा पाना भी जरुर हैं,
भक्तों को गले लगाना होगा, डम-डम डमरु...।।4।।

मां गौरा संग गणपतिजी को लाना होगा,
डमरु वाले बाबा तुमको आना होगा।।

ॐ अर्हम्

डमरूबजाए

डमरूबजाए, अंग भस्म रमाए
और ध्यान लगाए किसका।
न जाने वो डमरूवाला,
न जाने वो डमरूवाला।
सब देवों में, सब देवों में,
है वो देव निराला ।।टेर।।

मस्तक पर चन्दा, ओ जिसकी जटा में है गंगा।
रहती पार्वती संग में, सवारी है बूढ़ा नन्दा।
वो कैलासी, है अविनाशी, पहने सर्पों की माला।।

डमरूबजाए.....

बाघम्बर धारी, वो भोला शंभु त्रिपुरारी।
रहता मस्त सदा, जिसकी महिमा है न्यारी।
हे शिव शंकर, हे प्रलयंकार, रहता सदा मतवाला।।

डमरूबजाए.....

मस्त-मण्डल गाए शिव शम्भु को ध्याए।
जो भी मांगे सो पाए, दर से खाली ना जाए।
बड़ा है दानी, बड़ा है ज्ञानी, सारे जग का रखवाला।।

डमरूबजाए.....

करते वंदन-आए है

करते वंदन-आएहैं भोले शंकर हम दर पे तेरे-रोज आएंगे।
दूर कर दो-हमारे प्रभु, अवगुण, हम दर पे तेरे-रोज आएंगे ॥
करते वंदन....

तन पे भस्मी, गले में सर्प माला
कहते है डमरूवाला, है रूप जिसका जग से निराला
तेरे चरणों में है मेरा तन मन हम दर पे तेरे-रोज आएंगे।
करते वंदन....

शिव शंकर है भोले भण्डारी
महिमा है जिसकी न्यारी, होती है जिनकी बैल सवारी
तेरा जीवन, तुझी को है अर्पण, हम दर पे तेरे-रोज आएंगे।
करते वंदन....

हमको तेरा प्रभु जी सहारा कहता है जग ये सारा
है नीलकण्ठ नाम तुम्हारा
पी लो भक्तों के मन का भी हलाहल, हम दर पे तेरे-रोज आएंगे।
करते वंदन....

मेरी गौराजी मैया बनेगी दुल्हनियाँ

मेरी गौराजी मैया बनेगी दुल्हनियाँ
सज के आयेंगे भोले बाबा,
भैरू बाबा बजायेंगे बाजा ।।टेर।।

सोलह सिंगार मैया रानी जी करेगी
टीका लगेगा और हल्दी लगेगी
मैया के हाथों में मेंहदी रचेगी
देख निरखेंगे भोले बाबा, भैरु बाबा बजायेंगे बाजा।।1।।

बनके बराती ब्रह्मा विष्णु जी भी आए
लक्ष्मी जी आइ संग नारद जी भी आए
मैया के होठो पर झुलेगी नथनियाँ
देख झुमेंगे भोले बाबा, भैरु बाबा बजायेंगे बाजा ।।2।।

घर से चलेगी मैया डोली में बैठेगी
धरती पे मैया रानी पाँव ना धरेगी
पदकों की पालकी में मैया को बिठाकर
ले जायेंगे भोले बाबा, भैरू बाबा बजायेंगे बाजा।।3।।

गुरू महिमा

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरूदेव की, जिन गोविन्द दियो बताय॥

कबीर के उपरोक्त दोहे से ही गुरु की महिमा स्पष्ट है। उन्होंने भगवान से भी बढ़कर गुरु को महत्व दिया है। और यह अटल सत्य भी है, क्योंकि गुरू ही हमारा पथ प्रदर्शन करते हुए प्रभु से मिलने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसलिये उनकी महिमा का जितना भी गुणगान किया जाय उतना ही कम है वे हमारी अन्तर्रात्मा पर पड़ी मैली चादर को अपने उपदेश रूपी साबुन से धोकर आत्मा को परमात्मा में लीन कर देते हैं।

गृरु के उपदेश के बिना आत्मतत्व की उपलब्धि नहीं होती। योगवशिष्ट में वशिष्ट देवजी ने कहा भी है-

''गुरूपदेश्च बिना नात्मतत्वागमो भवेत''

आदिकाल में भारतीय संस्कृति में गुरु का बड़ा ऊँचा स्थान रहा है। यद्यपि आज के समय में गुरू शिष्य प्रणाली लुप्त हो चुकी है फलस्वरूप स्कूल कालेजों में फीस देकर पढ़ने वाले छात्रों के हृदय में अपने गुरू के प्रति वह सम्मान का भाव एवं श्रद्धा नहीं होती जो प्राचीन भारत में गुरू वर्ग के प्रति शिष्यों की होती थी। अनायास ही हमारी आँखों के सामने वह तपोवन- कालीन सभ्यता का चलचित्र उभर आता है, जब आज की भाँति विद्या का विक्रय नहीं था, जिसमें निर्धनता के कारण कोई विद्यार्थी शिक्षा से वंचित नहीं रह पाता था और जिसमें राजा रंक के भेदभाव को भुलाकर सभी बालक एक ही वृक्ष की छाया के नीचे कुश आसनों पर बैठकर साथ-साथ विद्याध्ययन किया करते थे। ''सादा जीवन उच्च विचार'' उस

गुरु-कुल का मूल मंत्र था, तप और त्याग पवित्र ध्येय था और लोक हित पर जीवन उत्सर्ग की शिक्षा उनका आदर्श। इन गुरुओं की छत्रछाया से निकलने वाले कपिल, कणाद, गौतम, पाणिनि, शंकर, एकलब्य आदि आज भी विश्व में अपनी सानी नहीं रखते।

इसीलिये कहा गया है-

गुरु बिन ज्ञान न ऊपजै, गुरु बिन भक्ति न होय।
गुरु बिन संशय ना मिटै, गुरु बिन मुक्ति न होय।।

गुरु के बिना जीवन वृथा है। उनके पथ प्रदर्शन बिना इस भवसागर को पार करना कठिन ही नहीं असंभव है। धर्म शास्त्रों में भी कहा गया है कि निगुरे के हाथ से खाने-पीने में बड़ा पाप लगता है, निगुरे का दिया दान, पुण्य, तीर्थ, व्रत, तप सब ही निष्फल हो जाते हैं। यहाँ तक कि देवता भी उसके हाथ का दिया हुआ ग्रहण नहीं करते।

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः ।।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

गुरु-धोबी शिष्य-कपड़ा, साबुन-सिरजनहार।
सुरत-सिला पर धोइये, निकसे रंग अपार।।

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्!

गुरूदेव दया करके

गुर्रूब्रह्मा गुर्रूविष्णु गुर्रूदेवो महेश्वरः।।
गुर्रूसाक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरूदेव नमः।।

गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना ।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों मे जगह देना ।।

1. करुणा निधि नाम तेरा, करुणा दिखला जाओ
सोये हुये भाग्यों को, हे नाथ जगा जाओ।
मेरी नाव भंवर डोले, इसे पार लगा देना ।।

2. पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ,
घर बार छोड़कर मैं, जीवन से खेला हूँ।
दुःख का मारा हूं मैं, मेरे दुःखड़े मिटा देना ।।

3. हे! अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी,
मैं दीन हीन चंचल, अभिमानी अज्ञानी।
तुमने जो नजर फेरी, मेरा कौन ठिकाना है ।।

4. तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो,
इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो।
नित माला जपूं तेरी, नहीं दिल से भुला देना ।।

माता पिता गुरू प्रभु

माता पिता गुरू प्रभु चरणों में प्रणवत बारम्बार।
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया.... ।।टेर।।

माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण जाये न कभी चुकाया,
अंगुली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया।
जिनकी गोद में पलकर हम, कहलाते हैं होशियार।।
हम पर....।।1।।

पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमाकर अन्न खिलाया,
पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया।
जोड़-जोड़ अपनी सम्पत्ति का, बना दिया हकदार।।
हम पर.... ।। 2।।

तत्व ज्ञान गुरू ने बतलाया, अन्धकार सब दूर भगाया,
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, हरि दर्शन का मार्ग बताया।
बिन स्वार्थ ही कृपा करे ये, कितने बड़े हैं उदार।।
हम पर... ।।3।।

प्रभु कृपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज सजाया,
बल बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया।
जो भी इनकी शरण में आता-२, कर देता उद्धार।।
हम पर... ।।4।।

इतनी शक्ति हमें देना

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूल कर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना.......

दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली जिंदगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना दिल में बदले की हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे.........

हम ना सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण
फल खुशियों के बाँटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाये मधुवन
अपनी करूणा का जल तू बहा के, करदे पावन हर एक मन का कोना
हम चलें नेक रस्ते पे.........

हम अंधेरे में हैं, रोशनी दे, खो न दें खुद को ही दुशमनी में हम
सजा पाये अपने किये की, मौत भी हो तो सह ले खुशी से
कल जो गुजरा है फिर से ना गुजरे, आने वाला वो कल ऐसा हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे.........

ॐ अर्हम्

आश्रम में सब

आश्रम में सब आने वाले, अपना नाम लिखाना
भूल ना जाना
आज लगेगी यहां हाजरी, दोनो हाथ उठाना
भूल ना जाना

बैठे है गुरुजी आसन लगाए
आने वाले भक्तों पे नजर जमाए, ओ ओ ओ......
आकर पहले शीश झुकाना, पीछे भजन सुनाना
भूल ना जाना ।।आश्रम।।

गुरुजी के रूप पे नजरे जमावो
गुरुजी की सूरत को मन में बसावो, ओ ओ ओ
कब हो जाए हुक्म नहीं तुम, अपना ध्यान हटाना
भूल ना जाना ।।आश्रम।।

गुरुजी के चेले देखो, भक्ति में डोले
गुरुजी की मूरत आज मुखड़े से बोले, हो हो हो
सबके संग में मिल मिल कर तालियां बजाना
भूल ना जाना ।।आश्रम।।

गुरुवर तुमसे

गुरुवर तुमसे मिलने का, सत्संग ही बहाना है।
जब भी तुम बुलाओगे, हमे दौडे चले आना है।।टेर।।

1) तुमही मेरे माता-पिता, तुम ही मेरे बन्धु सखा।
दुनिया वाले क्या जाने, मेरा मन तो दिवाना है ।।1।।

2) सुरज में ढूंढा तुझे, चन्दा में ही पाया है।
तारों के झिलमिल में, मेरे गुरु का बसेरा है।।2।।

3) कलियों में ढूंढा तुझे, फूलो में ही पाया है।
तुलसी के पत्ते में, मेरे गुरु का बसेरा है ।।3।।

4) दुनियां में ढूंढा तुझे, रामापुरम में पाया है।
भक्तों के हृदय में मेरे, गुरु का ठिकाना है ।।4।।

ॐ अर्हम्

पल पल जो हरि

पल-पल जो हरि गुण गाये-2 ओ मनवा...
तेरा जनम मरण मिट जाये
तेरा जन्म सफल हो जाये.......2

1) क्यों करता प्यार जगत से, और क्यों ना जपे हरि नाम
कुटूम्ब काबिला धन और बाड़ी कोईना देवे काम
तु इनसे दूर हट जारे ओ मनवा......तेरा जन्म

2) बचपन खेलन में खोया, और यौवन युवती के साथ
वृद्ध भये सिर कांपन लागे कोई ना पूछे बात
तू अब भी हरि गुण गाले ओ मनवा......तेरा.....

3) है जाना दूर मुसाफिर, पर पास नहीं कुछ माल
कुछ तो पुण्य कमाई करले, छोड़ जगत जंजाल हो-2
जो मन से प्रभु को ध्याये, ओ मनवा...............

4) ये संतों के वचन अनमोल, प्राणी मत जाना भूल
चार दिनों की जिंदगानी में, तू मत जाना भूल हो-2
जो बात समझ आ जाये, ओ मनवा..............

पल-पल...........................

जाने वाले एक संदेशा

जाने वाले एक संदेशा, गुरुजी से कह देना,
एक दीवानी याद में रोए, उसको दर्शन दे देना।

जिसको गुरुजी खुद बुलाते, किस्मत वाले होते है,
जो गुरुजी से मिल नही पाते, छुप छुप करके रोते है,
जिससे गुरुजी की बात हो जाती, किस्मत वाले होते है,
जिससे गुरुजी की बात न होती, छुप छुप करके रोते है,
जितनी परीक्षा ली है मेरी, और किसी की ना लेना।
एक दीवानी...............................

तुने कौन सा काम किया है, दर पे तुझे बुलाया है,
मैने कौन सा पाप किया है, दिल से मुझे भुलाया है,
एक बार मुझको दर पे बुलाले, इतनी कृपा कर देना।
एक दीवानी...............................

मुझको ये विश्वास है दिल में, मेरा बुलावा आएगा,
गुरुजी मुझे दर्शन देकर, आशीर्वाद लुटाएंगे,
उनको जाकर इतना कहना, मेरा भरोसा टूटे ना।
एक दीवानी...............................

क्या क्या आश्रम में हो रहा है, मुझको जरा बताओ तो,
क्या क्या शिक्षा दे रहे हैं, मुझको जरा सुनाओ तो,
गुरु भाई-बहनो की दुहाई, मेरी तरफ से दे देना।
एक दीवानी...............................

ॐ अर्हम्

मिलती है गुरूवरों की

मिलती है गुरुवरों की संगत कभी-कभी,
होते हैं इनके दर्शन हमको कभी-कभी।

मिलते हैं ऐसे त्यागी जग में कभी-कभी,
मिलती है ज्ञान वाणी इनसे कभी-कभी।

घबरा के मुँह न फेरना इस धर्म मार्ग से।
आते हैं जिन्दगी में ये दिन कभी-कभी।।1।।

यूँ व्यर्थ न गँवाइये, अनमोल जनम को।
उठती है भक्ति भावना मन में कभी-कभी।।2।।

आये हैं इन शरण में तो कुछ लेके जायें हम।
होती हैं गुरुवरों की इनायत कभी-कभी।।3।।

सुन के जरा तो समझो देते हैं ये जो ज्ञान।
लाती है इन शरण में किस्मत कभी-कभी।।4।।

सागर से भी गहरा

सागर से भी गहरा बन्दे, गुरूदेव का प्यार है।
देख लगाकर गोता इकबर, तेरा बेड़ा पार है।।

भव सागर में, इक दिन तेरी, जीवन नैया डूबेगी,
खेते-खेते, एक दिन तो पतवार भी तेरी टूटेगी,
जायेगा उस पार तूँ कैसे, हर तरफ अन्धकार है ।।1।।

सौंप दे नैया, गुरूदेव को, वो ही पार लगा देगें,
पैर पकड़ले, जाकर के तूँ, सोये भाग्य जगा देगें,
पापी से भी, पापी को भी, करते ना इन्कार हैं ।।2।।

सन्त समागम, हरि कथा भी, गुरू कृपा से पाओगे,
खुद आयेंगें, श्याम प्रभु गर, गुरू की ठोकर खाओगे,
'भक्त' गुरू कृपा के बिन, जिन्दगी बेकार है ।।3।।

ॐ अर्हम्

ऐ मालिक तेरे

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हों हमारे करम,
नेकी पर चलें और बदी से टलें, ताकि हँसते हुये निकले दम,
ऐ मालिक तेरे....

है अँधेरा घना छा रहा, मेरा इंसान घबरा रहा,
हो रहा बेखबर, कुछ ना आता नजर, सुख का सूरज छुपा जा रहा,
है तेरी रोशनी में वो दम , जो अमावस को कर दे पूनम,
नेकी पर चलें और बदी से टलें, ताकि हँसते हुये निकले दम
ऐ मालिक तेरे....

जब जुल्मों से हो सामना, तब तूँ ही हमें थामना
वो बुराई करें, हम भलाई करे, नहीं बदले की हो भावना,
बढ़ चले प्यार का हर कदम, और मिटे वैर का ये भरम,
नेकी पर चलें और बदी से टलें, ताकि हँसते हुये निकले दम,
ऐ मालिक तेरे....

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है इसमे कमी,
पर तू जो खड़ा, है दयालु बड़ा, तेरी कृपा से है हम सभी,
दिया तूने हमें जब जनम, हँस करके सहेंगे सितम,
नेकी पर चलें और बदी से टले, ताकि हँसते हुये निकले दम,
ऐ मालिक तेरे....

लताओं पुष्प बरसाओ

लताओं पुष्प बरसाओ, मेरे भगवान आये हैं।
ऐ कोयल मीठे स्वर गाओ, मेरे भगवान आये हैं ।।टेर।।

लगी थी आस सदियों से, हुए हैं, आज वो दर्शन,
निभाने आज वादे को, पधारे खुद पतित पावन,
मेरे कष्टों को हरने को, ये नंगे पांव आयें हैं ।।मेरे।।

करूँ कैसे तेरी पूजा, न मन फूला समाता है,
कहाँ जाऊँ मैं क्या लाऊँ, समझ कुछ भी न आता है,
मुझे अपने ही रंग रंगकर, बढ़ाने मान आये हैं ।।मेरे।।

ना चाहिए धन-दौलत मुझको, तेरी भक्ति मैं चाहता हूँ,
मेरे सिर हाथ हो तेरा, यही वरदान चाहता हूँ,
अधम मुझ नीच, पापी का, करण उद्धार आये हैं ।।मेरे।।

ॐ अर्हम्

सब पाप करम कट जाते हैं

सब पाप करम कट जाते हैं, ब्रह्मर्षि के दर्शन करने से
संशय व भरम मिट जाते हैं, ब्रह्मर्षि वचन चित्त धरने से।।

(1) यह मुरत जग से न्यारी है छवि परम मनोहर प्यारी है।
सुख शांति सभी पा जाते है ब्रह्मर्षि के दर्शन करने से ।।1।।

(2) गुरूवर बड़े उपकारी है सब जीवन के हितकारी है।
सब राग द्वेष छूट जाते है ब्रह्मर्षि के दर्शन करने से।।2।।

(3) ये आतम ध्यान लगाते हैं ये सर्व धर्म के गुरू कहते है,
हम धन्य-धन्य हो जाते हैं, ब्रह्मर्षि के दर्शन करने से।।3।।

(4) शुभ पुष्प उदय अब आया है गुरूदेव के दर्शन पाया है,
निज ज्ञान दीप जल जाते हैं ब्रह्मर्षि के दर्शन करने से।।4।।

दरबार अनोखा

दरबार अनोखा; सरकार अनोखी,
ब्रह्मऋषि गुरुदेव की हर बात अनोखी।

जब भी आता हूँ, दरबार में इनके
मैं खो जाता हूँ, श्रृंगार में इनके
नित नई नवेली, मुस्कान है इनकी
ब्रह्मर्षि गुरुदेव की हर बात...

जादूगर ऐसा, इस कदर लुभाले
बातें क्या दिल की, ये दिल ही चुराले
कुछ होश नही है, मुझको तन मन की
ब्रह्मर्षि गुरुदेव की हर बात......

विपदाओं से दिल, तूं क्यू धबराए
ले नाम गुरुका, गुरूवर पार लगाएँ
करते रखवाली, अपने भक्तों की
ब्रह्मर्षि गुरुदेव की हर बात....

यहाँ मन की मुरादें, पाते हुए देखा
देखी है बदलती, किस्मत की रेखा
"गुरुवर" की फैली है, चहूँ सत्ता इनकी
ब्रह्मर्षि गुरुदेव की हर बात......

दरबार गुरूदेव ने लगाया

दरबार गुरूदेव ने लगाया
दुःख भगतों का हरने आया
गुरुदेव तेरी जय हो-२.....दरबार.........

गुरुदेव तेरी महिमा है न्यारी
गुरुदेव कहलाया, कलि में अवतारी
अपने भक्तों पर प्यार लुटाया।
दुःख भगतो का हरने आया
गुरुदेव तेरी जय हो -2.....दरबार.........

तेरे जैसा, गुरूवर नही देखा
मेट सकता करम की हर रेखा
तुमने सबका नसीबा बनाया
दुःख भगतो का हरने आया
गुरुदेव तेरी जय हो -2.....दरबार.......

गुरुदेव प्यारे, जो तेरे सहारे
उनके जीवन के तुम तो रखवारे
तुमने सबको गले से लगाया
दुःख भगतो का हरने आया
गुरुदेव तेरी जय हो -2.....दरबार.........

प्रेम देना , हमें निज भक्ति देना
गुरुदेव तेरे दरस के हैं प्यासे नैणा
"गुरुदेव" हमने भी रिश्ता बढ़ाया
दुःख भगतो का हरने आया
गुरुदेव तेरी जय हो -2.....दरबार.........

एक बार तो गुरूवर

एक बार तो गुरूवर, हम जैसों से मिलो,
मिलना उसी का नाम है, फुरसत से गर मिलो

हम जैसे भी हैं गुरूवर, तेरे मुरीद हैं
अवगुण हमारे गुरूवर, करके दया ढको
मिलना उसी का नाम 1

आए नही की चल दिए, आना नहीं है ये
आना तो उसका नाम हैं, मिलकर जुदा न हो
मिलना उसी का नाम 2

माना कि मुझमें भक्तों सी कोई कशिश नहीं
एक बार प्यारे गुरूवर, इस दिल की भी सुनो
मिलना उसी का नाम 3

भक्तों के प्यारे गुरूवर, दीनों के नाथ हो
मुझको भी गुरूवर प्रेम में बांधो या बंधो
मिलना उसी का नाम 4

मैने तो इश्क गुरूवर तुमसे बढ़ा लिया
गुरूवर तुम भी तो आगे जरा बढ़ो
मिलना उसी का नाम 5

ॐ अर्हम्

उलझन मेरी गुरूवर प्रभु

उलझन मेरी गुरूवर प्रभु, आपको सुलझानी है
अपने इस सेवक की पीड़ा, तुमको मिटानी है,

अभी तक तो मैंने तुमसे, कुछ न कहा
रक्खा है तुमने जैसे, वैसे में रहा
गुरूवर तुमसे ना मेरी, अनबूझ कहानी है
अपने इस सेवक की...............

हीरे मोती मैं न चाहूँ, चाहूँ नही राज
मै तो बस इतना चाहूँ, जाए नही लाज
उठ जाएगी उंगली तो, गर्दन झुक जानी है
अपने इस सेवक की...............

तुम्हें छोड़ किस दर जाकर, करूँ मै पुकार
तेरे सिवा कौन हमारा, गुरूवर सरकार
नयनों के पल में गुरूवर व्यथा पुरानी है
अपने इस सेवक की...............

दिल में है गुरूवर प्यारे, बड़ा विश्वास
आज तलक कभी न टूटी, भक्तों की आश
''पाय्ल'' करले भजन लाज, गुरूवर को ही बचानी है।
अपने इस सेवक की...............

गुरूदेव से नजरें

गुरूदेव से नजरें मिलाके तो देखो
दिलो जान इन पर, लुटा के तो देखो
गुरूदेव से नजरें...............

नयनों में इनके छुपा कोई जादू
दिल पे रहेगा ना कोई काबू
जरा पास इनके आके तो देखो
गुरूदेव से नजरें..............

स्वर्ण सी सूरत कैसे दमके
ज्यूं पूनम का चंदा चमके
चेहरे पे नजरें टीका के तो देखो
गुरूदेव से नजरें..............

भक्ति ज्ञान अधर पे यूं सज रही है
प्रेम गंगा यूं बह रही है
भक्ति में मन को उलझा के देखो
गुरूदेव से नजरें..............

इस जीवन का क्या है भरोसा
रह जाए ना " सुशील " धोखा
बहे प्रेम नदिया, नहा के तो देखो

ॐ अर्हम्

दानियों में गुंज रहा

दानियों में गुंज रहा नाम आपका।
दीनों को सम्हालना है काम आपका।।

दानियों में दानी, तू गुरु दातार है
आजा ओ, दयालु हमें तेरी दरकार है,
प्यासे-प्यासे नैणों में, उजाला आपका।
दीनों को सम्हालना.............1

हमसे हमारी नाव नही चल पाएगी,
आए जो ना तुम, तो ये नाव डूब जाएगी,
तू ही पतवार गुरूवर, मेरी नाव का
दीनों को सम्हालना.............2

तुमसे उम्मीद हमें तेरा ही सहारा,
ब्रह्मर्षि वाले गुरूवर तू ही है मेरा किनारा
मुझे तो भरोसा गुरूवर बस आपका
दीनों को सम्हालना.............3

दुनिया सराय, मतलब का डेरा
चेहरे पे चेहरा नजर का फेरा
होता रहे शोर "गुरूवर" बिन बात का
दीनों को सम्हालना.............4

दरबार है निराला

दरबार है निराला, गुरूवर के धाम का
जग हो रहा दीवाना, गुरूवर के नाम का

श्री गुरूवर को रिझाने, चले आ रहे दीवाने
धरती पे स्वर्ग उतरा, कोई माने या न माने
कोई माने या न माने
डंका तो बज रहा है, गुरूवर के धाम का
जग हो रहा....................

जयकार गूंजती है, भक्ति को चूमती है
ऐसी लगी लगन के, मस्ती भी झूमती है
मस्ती भी झूमती है
गुणगान हो रहा है, गुरूवर के नाम का
जग हो रहा....................

भक्ति है गजब की, ये निखार है गजब का
धन-धान्य सुख लुटावै, दातार है गजब का
दातार है गजब का
भण्डार लुट रहा है, गुरूवर के धाम का
जग हो रहा....................

" भक्तो " जहाँ में कोई, मेरे गुरूवर सा नही है
दरबार में गुरूवर के, कोई कमी नही है
कोई कमी नही है,
जादू सा छा रहा है, गुरूवर के नाम का
जग हो रहा.................... दरबार है निराला...............

ॐ अर्हम्

जय जय ब्रह्मर्षि गुरुवर

जय जय ब्रह्मर्षि गुरुवर, तुम विश्व संत कहलाए,
मानव को राह दिखाने, तुम दीप शिखा बन आए॥

पावन है नाम तुम्हारा, पावन है आत्म कहानी,
पावन बन जग में छाए, तुम तप की अमर निशानी,
ले तेरा पुण्य सहारा, हम भी पावन बन जाएँ।।1 ।।
मानव को...

हम है कितने सौभागी, तुम जैसे पाए नेता,
जो भक्त अभक्त सभी की, है जीवन नैय्या खेता।
नव-ज्योति किरण से देखो, ज्योतित है, दशों दिशाएं ।।2 ।।
मानव को...

तुम युग चिन्तक युग प्रहरी, तुम युग के एक उजारे,
तुमको प्रणाम ये करते, नभ के साथ चाँद सितारे।
तुम कलाकार मतवाले, अगणित तेरी कल्पनाएँ।।3 ।।
मानव को...

जब व्यथित बनी मानवता, छोड़ा मानव ने सत्पथ,
दमनीय दशा मूल्यों की, खो गए शून्य में इति अथ।
तब तुमने आगे आकर, खोली राहें अनजानी ।।4 ।।
मानव को...

आना गुरु जी आना

आना गुरुजी आना हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी जी आना हमारे गुरु वन्दन में-2

आप भी आना संग गणपत जी को लाना
आप भी आना संग कार्तिक जी को लाना
शिव-पार्वती हो आपके साथ में, हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना......
आकर डमरू बजाना हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना

आप भी आना संग ब्रह्माजी को लाना-2
लक्ष्मी-विष्णु हो आपके साथ में हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना......
आकर शंख बजाना हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना

आप भी आना सियाराम जी को लाना-2
अंजनीके लाला हो आपके साथ में, हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना......
भक्ति का ज्ञान सिखाना हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना

ॐ अर्हम्

...आना गुरु जी आना

आप भी आना कृष्ण-राधे जी को लाना-2
गोपियों हो आपके साथ में हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना......
आकर मुरली बजाना हमारे हरि कीर्तन में
आकर रास रचाना हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना

आप भी आना नव-दुर्गा को लाना-2
शक्ति का दरश कराना हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरु जी आना हमारे.....

आप भी आना साधु-संतो को लाना-2
ऋषि-मुनि हो आपके साथ में हमारे हरि कीर्तन में
आना गुरुजी आना.....
राम की धुन सुनाना हमारे हरि कीर्तन में आना गुरुजी...
भक्ति की गंगा बहाना हमारे............

ओ मेरे गुरुजी प्रणाम हमारा

ओ मेरे गुरुजी प्रणाम हमारा कह देना-2
राम लखन वनवासी को, सीता जनक दुलारी को
भरत शत्रुघ्न भैया को प्रणाम हमारा कह देना
ओ मेरे गुरु जी प्रणाम.....

राजा दशरथ रानी को
सारी वानर सेना को प्रणाम हमारा कह देना
ओ मेरे गुरु जी प्रणाम......

शिव शंकर कैलाशी को, उमा हमारी माता को
दुन्द-दुन्दाले गणपत को, प्रणाम हमारा कह देना
ओ मेरे गुरु जी प्रणाम........

शंख चक्रधारी विष्णु को, कमलासन महारानी को-2
सिंह वाहिनी दुर्गा को प्रणाम हमारा कह देना-2
ओ मेरे गुरु जी प्रणाम........

वासुदेव और देवकी, नन्द और यशोदा को-2
कृष्ण कन्हैया लाल को प्रणाम हमारा कह देना
राधा रूकमण रानी को प्रणाम हमारा कह देना
ओ मेरे गुरु जी प्रणाम........

साधु और सन्यासी को, गऊ हमारी माता को-2
वेद पुराण शस्त्रों को प्रणाम हमारा कह देना-2
ओ मेरे गुरु जी प्रणाम........

तुलसी कृत रामायण को वाल्मिकी रामायण को-2
गीता और भागवत को प्रणाम हमारा कह देना-2
ओ मेरे गुरु जी प्रणाम........

ॐ अर्हम्

चरणों की धूलि हमें दे

चरणों की धूलि हमें दे दीजिये,
दीन भक्तों को शरण ले लीजिये।

तारना हमको तुम्हारा काम है,
दीन बन्धु तो तुम्हारा नाम है,
थाम लो पतवार, करूणा कीजिये।।

मन के मन्दिर में तुम्हारा वास हो,
हे प्रभु, सिर पर तुम्हारा हाथ हो,
मन के मन्दिर में उजाला कीजिये।

झुकता हूँ झुकता रहूँगा दर तेरे,
हरता है तूँ हर समय संकट मेरे,
सरस्वती का दान, मुझको दीजिये।।

अर्जी कर सकता हूं, मर्जी आपकी,
कुछ तो लज्जा रखो, अपने दास की,
मेरे दुःख को नाथ अब, हर लीजिये।।

श्री राम दरबार

नीलाम्वुजश्यामलकोमलागं
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महाशायकचारुचाप
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

श्री राम वन्दना

ॐ जय जानकी नाथा, प्रभु जय श्रीरघुनाथा।
दोऊ कर जोड़्याँ बिनवौं, प्रभु मेरी सुन बाता॥
ॐ जय॥

तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता, ओ प्रभु प्राण पिता माता।
तुम हो सजन संगाती, आप हो सजन संगाती भक्ति मुक्ति दाता॥
ॐ जय ॥

चौरासी प्रभु फंद छुड़ाओ, मेटो जम त्रासा, ओ प्रभु मेटो जम त्रासा।
निशिदिन प्रभु मोहि राखो, सब दिन हरि मोहि राखो, अपने संग साथा॥
ॐ जय ॥

सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुघन संग चारों भैया।
जगमग ज्योति विराजत, झिलमिल जोत बिराजत शोभा अति लैया॥
ॐ जय ॥

हनुमत् नाद बजावत नेवर ठुमकाता, प्रभु नेवर ठुमकाता।
कंचन थाल आरती, सुवरन थाल आरती, करत कौशल्या माता॥
ॐ जय ॥

क्रीट मुकुट कर धनुष बिराजत शोभा अति भारी, ओ प्रभु शोभा अतिभारी।
मनीराम दर्शन करि, तुलसीदास दरसन कर पल-पल बलिहारी॥
ॐ जय ॥

जय जानकी नाथा हो प्रभु, जय श्री रघुनाथा।
हो प्रभु जय सीता माता, हो प्रभु जय लक्ष्मण भ्राता।
हो प्रभु जय चारौ भ्राता, हो प्रभु जय हनुमत दासा।
दोऊ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुनो बाता ॥
ॐ जय ॥

रामायणः पढ़ने का ग्रंथ नहीं जीने का शास्त्र

राजर्षि दशरथ- तीर्थराज प्रयाग हैं। वे पुण्यश्लोक हैं। आर्यत्व के आदर्श और राजधर्म के प्रतीक हैं। पवित्रता के वे पर्याय है। निष्काम और निस्वार्थ पुत्रवत्सलता उनसे ग्रहण करो।

तीनों माताएँ- दशरथ रूपी प्रयाग को पवित्र करने वाली गंगा, यमुना, सरस्वती रूप त्रिवेणी हैं। कौशल्या और सुमित्रा की महिमा तो विश्वविदित है। छोटी माता की महिमा सरस्वती के समान गुप्त है। सरस्वती नहीं तो प्रयाग नहीं। कैकेयी नहीं तो रामकथा नहीं। कैकेयी माता ही रामकथा का मूल है। जो भरत जैसा पुत्र उत्पन्न करे, उसी का मातृत्व सार्थक है। इस तत्व को समझो।

लक्ष्मण- शौर्य और स्नेह के साकार समन्वय हैं। त्याग और तपश्चर्या के ज्वलन्त स्वरूप है। वे इन्द्रियजीत हैं। जो इन्द्रियजीत है वही इन्द्रजीत (मेघनाद) को जीत सकता है। संसार को जीतना चाहो तो इन्द्रियों को जीतो।

भरत- अर्थात् शुचिता की प्रतिमूर्ति। निर्मलता के साक्षात् अवतार भरत जैसी निर्मलता पा लेने पर कुछ और पाना शेष नहीं रहता। तुम्हें भगवान को खोकर भोग मिले तो तुम भरत के समान भोगों को ठुकरा दो और भगवान की शरण में पहुंच जाओ। भगवान को पाने के लिये भोग छोड़ो।

शत्रुघ्न- समर्पित कर्तव्यनिष्ठा के आदर्श हैं। कर्तव्य ही जीवन को उत्कर्ष पर पहुंचाता है। स्वयं को पीछे रखकर धर्म को आगे बढ़ाओ। यश की कामना नहीं, सत्य के शासन की कामना करो। शत्रुघ्न के चरित्र का यही सार है।

उर्मिला, माण्डवी और श्रुतिकीर्ति- कुलवधुओं का शील सौन्दर्य इन तीन देवियों में मूर्तिमान हो गया है। भोग नहीं, पति के अन्तःकरण से अपने अन्तःकरण का योग ही दाम्पत्य को दिव्यता देता है। दिव्य दाम्पत्य कैसा होता है? ये तीन देवियाँ यही सिखाती है। दिव्य दम्पति बनो। "हैप्पी कपल" बनना सरल है, दिव्य दम्पत्ति बनना कठिन है।

हनुमानप्रभु- भक्ति सेवा और कर्म के साकार स्वरूप हैं। धर्म के लिये समर्पित शौर्य और सामर्थ्य ही पुरूषार्थ की सार्थकता है। अधर्म को मिटाने और धर्म की स्थापना करने का व्रत हनुमान प्रभु से सीखो। असत्य और अन्याय का प्रतिकार का साहस उनसे ग्रहण करो। अधर्म को मिटा दो। धर्म को स्थापित करो।

विभीषण- के लिए न्याय और सत्य ही सर्वोपरि है। न्याय सबसे ऊपर और सत्य सबसे मूल्यवान है। न्याय और सत्य के लिए परिवार, धन सम्पदा और सर्वस्व को भी छोड़ देना चाहिये।

सुग्रीव- मैत्री के आदर्श हैं। मैत्री कैसे निभाई जाती है, उनसे सीखो।

जटायु- का जीवन चन्दन है। प्रभु चरणों में जटायु के समान चन्दन बनकर समर्पित होना ही जीवन की सार्थकता है।

रावण- ने सिद्ध कर दिया कि अद्बितीय शौर्य, असीम सामर्थ्य, अजेय शक्ति, अटूट वैभव ओर अद्बितीय ज्ञान भी सदाचार के बिना निरर्थक है। सदाचार ही चरम पुरुषार्थ है। रावण के विकास और सर्वनाश से यही मन्त्र ग्रहण करना चाहिये।

सीता माँ- धैर्य धूरी, शील की आधारशिला, पावनता की गंगोत्री और सतीत्व की ज्वलन्त ज्वाला हैं। वे मूर्तिमयी करूणा हैं। अटूट और अविचलित आस्था सीता माँ के रूप में साकार हुई। सीता माता का अनुसरण ही नारीत्व की धन्यता है।

भगवान- तो साक्षात् धर्म हैं। "रामो विग्रहवान् धर्म।" धर्म को देखना हो तो श्रीराम प्रभु को देखो। देखो ओर उन्हें जीवन में उतार लो। धर्म को जानने के लिये मर्यादा पुरुषोत्तम राम को जानो।

सावधान! रामायण, पढ़कर आलमारी में रख देने का ग्रन्थ नहीं है। वह जीवन में उतारने का, जीने का शास्त्र है। रामायण को केवल पढ़ो मत। उसे जीओ। जो रामायण को जीयेगा, रामायण में जीयेगा वह स्वयं श्रीराम स्वरूप हो जायेगा।

ॐ अर्हम्

श्री रामचन्द्र कृपालु

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारूणं।
नवकंज-लोचन, कंज मुख, कर कंज पद कंजारूणं।।

कंदर्प अगनित अमित छवि, नव नील नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरं।।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ नंदनं।।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शरचाप-धर, संग्राम जित खरदूषणं।।

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरू, कामादि खल दल गंजनं।।

मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान शील सनेहु जानत रावरो।।

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषीत अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

सो० जानि गौरी अनुकूल सिय, हिय हरषु न जाई कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम, अंग अंग फरकन लगे।।

।। सियावर रामचन्द्र की जय।।

आ लौट के आज्या मेरे राम

आ लौट के आज्या मेरे राम, तुझे भाई भरत बुलाते हैं।
सुना पड़ा अवध का राज, तुझे भाई भरत बुलाते है।।टेर।।

माता कैकई ने भेज्या तोहे बन में दुःख हुआ मेरे मन में,
एक पल ना रहूँ अयोध्या आग लगी मेरे तन में,
कैसे भूल ज्याउँ तोहे राम, नयन मेरे भर भर आते हैं।।१।।

सीता बन में बाड़ी बाई मृग सोने का आया,
इस मृग की मोहें अंगिया सिलादो, यह मृग मन भाया,
राम लिए धनुष को तांण, मृग को मारन जाते हैं।।२।।

लक्ष्मण-लक्ष्मण बोली सुनकर, बोली सीता माता,
तेरे भाई में भीड़ पड़ी है, याद करे तेरे भ्राता,
लक्ष्मण गये राम के पास, सिया को रावण चुराता है।।३।।

सिया चुराके रावण ले गयो, ले गयो लंका मांही,
श्री राम के पायक श्री हनुमन्ता, सीता की सुधी लाई,
गये सात समुन्दर पार, जाय लंका को जलाते हैं।।४।।

रावण मार राम घर आये, घर घर बँटत बधाई,
मात कौशल्या करत आरती, 'तुलसीदास' जस गाई,
राम करे अवध को राज, भक्तजन मंगल गाते हैं।।५।।

ओ केवट नाव ले

ओ केवट नाव ले आओ, हमें उस पार जाना है।
प्रभुजी चरण धुलवाओ, अगर उस पार जाना है ।।टेर।।

भला होगा तेरा केवट, हमें उस पार तुम कर दो,
जरूरी है हमें जाना, जरा उपकार तुम कर दो,
ना अब यों देर लगाओ, हमें उस पार जाना है।।1।।

प्रभु मैं जानता हूं आपकी महिमा बड़ी भारी,
चरण रज में वो जादू है, शिला भी बन गई नारी,
मेरा सन्देह मिटाओ, अगर उस पार जाना है।।2।।

बड़े जिद्दी हो तुम केवट, कहा यों राम ने हँस कर,
बढ़ाये चरण धोने को, सियाजी, लखन और रघुवर,
लो अब तो मान भी जाओ, हमें उस पार जाना है ।।3।।

लगा धोने चरण केवट, खुशी मन में हुई भारी,
हुई बरसात पुष्पों की, जमीं भी खुश हुई सारी,
सदा रघुवर के गुण गावो, अगर उस पार जाना है।।4।।

बैठाया नाव में तीनों को, केवट खुश हुआ मन में,
मगर कुछ सोच 'ताराचन्द', गिरा रघुवर के चरणों में,
भक्ति अपनी दे के जाओ, अगर उस पार जाना है।।5।।

सीताराम, सीताराम

सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये ।।टेर।।

मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में,
तू अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में,
विधि का विधान जान, हानि-लाभ सहिये ।जाहि.।।1।।

किया अभिमान तो फिर, मान नहीं पायेगा,
होगा प्यारे वही जो, श्रीरामजी को भायेगा,
फल आशा त्याग शुभ, काम करते रहिये।जाहि.।।2।।

जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के,
महलों में राखे चाहे, झोपड़ी में बास दे,
धन्यवाद निर्विवाद, राम राम कहिये ।जाहि.।।3।।

आशा एक रामजी, से, दूजी आशा छोड़ दे,
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे,
साधु संग राम रंग, अंग-अंग रंगिये,
काम रस त्याग प्यारे, राम रस पीजिये ।जाहि.।।4।।

कभी कभी भगवान

कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े।
जाना था गंगा पार प्रभु केवट की नाव चढ़े ।। टेर।।

अवध छोड़ प्रभु वन को धाये, सिया राम लखन गंगा तट आये।
केवट मन ही मन हरषाये, घर बैठे प्रभु दर्शन पाये।
हाथ जोड़कर प्रभु के आगे, केवट मगन खड़े ।। जाना था।।

प्रभु बोले तुम नाव चलावो, पार हमें केवट पहुँचाओ।
केवट कहता सुनो हमारी चरण धूलि की माया न्यारी।
मैं गरीब नैया मेरी, कहीं नारी ना होय पड़े।। जाना था।।

केवट दौड़ के जल भर लाया, चरण धोय चरणामृत पाया।
वेद ग्रन्थ जिनके यश गावे, केवट उनको नाव चढ़ावे।
बरसे फूल गगन से ऐसे, भक्त के भाग्य बड़े ।। जाना था।।

चली नाव गंगा की धारा, सियाराम लखन को पार उतारा।
प्रभु देने लगे नाव उतराई, केवट बोला नहीं रघुराई।
पार किया मैंने तुमको, अब तूँ मोहे पार करे ।। जाना था।।

दाता एक राम

दाता एक राम
भिखारी सारी दुनिया, पुजारी सारी दुनिया।
दाता एक राम...

द्वारे पे उनके जाके कोई भी पुकारता।
परम कृपा से अपनी भव से उबारता।
ऐसे दीनानाथ से, बलिहारी सारी दुनियाँ।
दाता एक राम...

दो दिन का जीवन प्राणी करले विचार तू।
प्यारे प्रभु को अपने मन में निहार तू।
बिना हरिनाम के दुखियारी सारी दुनियाँ।
दाता एक राम...

नाम का प्रकाश जब अन्दर लगाएगा।
प्यारे श्री राम का तू दर्शन पायेगा।
ज्योति से जिसकी, उजियारी सारी दुनियाँ।
दाता एक राम...

जग में सुन्दर है

जग में सुन्दर है दोउ नाम।
चाहे कृष्ण कहो या राम ॥
बोलो राम राम राम, बोलो श्याम श्याम श्याम।

एक कंस पापी को मारे।
एक दुष्ट रावण संहारे।।
दोनों दीनों के दुख हरते हैं।
दोनों बल के धाम-बोलो राम-राम।।

एक राधिका के संग राजे।
एक जानकी संग विराजे।।
चाहे सीता राम कहो।
या बोलो राधे-श्याम श्याम श्याम।।

माखन व्रज में एक चुरावे।
एक बेर भिलनी के खाये।।
दया प्रेम से भरे हुये हैं।
दोनों एक समान। बोलो राम-राम।।

श्री रामजी

रघुपति राघव राजा राम

रघुपति राघव राजा राम, पतित-पावन सीताराम।
सीताराम सीताराम, भज प्यारे तू सीताराम।।

राम कृष्ण हैं तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान।
दीन दयालु राजा राम, पतित-पावन सीताराम।।
भज प्यारे तू सीताराम।।

जय रघुनन्दन जय सियाराम, जानकी-वल्लभ सीताराम।
जय यदुनन्दन, जय घनश्याम, रुक्मिणी-वल्लभ राधेश्याम।।
भज प्यारे तू सीताराम।।

जय मधुसूदन, जय गोपाल, जय मुरलीधर जय नन्दलाल।
जय दामोदर, कृष्ण मुरारी, देवकी नन्दन सर्वोधार।।
भज प्यारे तू सीताराम।।

जय गोविन्द-जय गोपाल, केशव माधव दीनदयाल।
राधाकृष्ण जय कुंज बिहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी।।
भज प्यारे तू सीताराम।।

दशरथ नन्दन अवध किशोर, यशुमति सुत जय माखन चोर।
कौशल्या के प्यारे राम, यशुमति जय घनश्याम।।
भज प्यारे तू सीताराम।।

वृंदावन मथुरा में श्याम, अवधपुरी में सीताराम।
जय गिरिजापति जय महादेव,
जय-जय शम्भो जय-जय महादेव।।
जय जय दुर्गा मां तारा, जय गणेश जय शुभ आगारा।
सीताराम सीताराम भज प्यारे तू सीताराम

कभी राम बनके

कभी राम बनके , कभी श्याम बनके,
चले आना प्रभुजी चले आना।

कभी राम बनके, कभी श्याम बनके,
चले आना प्रभुजी चले आना।
कभी राम रूप में आना,
सीता साथ लेके, धनुष हाथ लेके, चले आना।
प्रभुजी चले आना.....
कभी श्याम रूप में आना,
राधा साथ लेके, मुरली हाथ लेके, चले आना।
प्रभुजी चले आना.....
कभी शिव रूप में आना,
गौरी साथ लेके, डमरू हाथ लेके, चले आना।
प्रभुजी चले आना.....
कभी विष्णु रूप में आना,
लक्ष्मी साथ लेके, सिद्धि हाथ लेके, चले आना।
प्रभुजी चले आना.....
कभी हनुमान रूप में आना,
ध्वजा साथ लेके, गदा हाथ लेके, चले आना।
प्रभुजी चले आना.....

राम से बड़ा

राम से बड़ा राम का नाम,
अन्त में निकला ये परिणाम।। टेर।।

सुमरिये राम रूप बिन देखे, इसमें लगे ना कौड़ी दाम
प्रीत की डोरी से बँधकर के, आयेंगे श्रीराम ।।1 ।।

नामी को चिन्ता ये रहती, नाम न हो बदनाम
द्रौपदी ने जब तुम्हें पुकारा, झट आये घनश्याम ।।2 ।।

बिना सेतु के सागर को भी, लाँध सके ना राम
लाँघ गये हनुमान उसी को, लेके राम का नाम ।।3 ।।

वो अभिमानी डूब जायेंगे, जाँ मुख नहीं है राम
वो पत्थर भी तर जायेंगे, लिखा राम का नाम ।।4 ।।

ॐ अर्हम्

हे राम...

तू अंत्र्यामी, सबका स्वामी
तेरे चरणों में, चारों धाम
हे राम, हे राम.....

तू ही बिगाड़े, तू ही सँवारे
इस जगत के सारे काम
हे राम, हे राम.....

तू ही जग दाता, विश्व विधाता
तू ही सुबह, तू ही शाम
हे राम, हे राम.....

जग में सांचो, तेरो नाम
हे राम, हे राम.......

तू ही माता, तू ही पिता है
तू ही है तो राधे का श्याम
हे राम, हे राम.....

न जाओ दीनबन्धु

न जाओ दीनबन्धु हमें छोड़कर,
लगा रोने केवट, नयन आये भर ।।टेर।।

छोटी सी अर्ज प्रभु मेरी मान लो,
नाव को ही अब प्रभु वन जान लो,
करूँगा मैं सेवा तुम्हारी रधुवर ।।1।।

रहूँगा मैं नाथ, आपकी ही शरण में,
गिर गया केवट, प्रभु के ही चरण में,
ना छोड़ू चरण, अब तुम्हारे रघुवर।।2।।

धोये है चरण आंसुओं की धार से,
राम ने लगाया गले बड़े प्यार से,
लगी आंसुओं की झड़ी वहाँ पर ।।3।।

देख करके भक्ति ऐसे बोली है सीया,
धन्य धन्य केवट बड़ा पुण्य तू किया,
रहेगी सदा तेरी भक्ति अमर।।4।।

सच्ची तेरी भक्ति केवट सच्चा तेरा प्यार,
द्वापर में मिलूँगा तुमसे बोले करतार,
बनोगे सुदामा तुम मैं बनू गिरधर।।5।।

देकर के वरदान राम गये वन में,
"ताराचन्द" केवट सोच रहा मन में,
रहा देखता ना भरी है नजर ।।6।।

ॐ अर्हम्

मेरी छोटी सी है नाव

मेरी छोटी सी है नाव, तेरे जादू भरे पाँव,
मोहे डर लागे राम, कैसे बैठाऊँ तोहे नाव में ।।टेर।।

जब पत्थर से बन गई नारी, यह तो काठ की नाव हमारी।
करूँ यही रुजगार, पालूँ सारा परिवार, सुनो सुनो जी सरकार,
कैसे बैठाऊँ तोहे नाव में ।।1 ।।

एक मानो तो बात बताऊँ, तेरे चरणों की धूल हटाऊँ।
मेरा संशय हो जाये दूर, अगर तुम्हें हो मंजूर,
सुनो सुनो जी हजूर, पाछै बैठाऊँ तोहे नाव में ।।2 ।।

बड़े प्रेम से चरणों को धोया, पाप जनम जनम का खोया।
हुआ बड़ा प्रसन्न, किया राम दर्शन, संग सिया और लखन,
आओ, बैठो प्रभुजी मेरी नाव में ।।3 ।।

धीरे धीरे नाव चलाता, वो तो गीत ख़ुशी के गाता।
सोचे यही मन में, सूरज डूबे छिण में, नहीं जायें वन में
बैठे रहें प्रभुजी मेरी नाव में ।।4 ।।

ले लो ले लो मल्लाह उतराई, मेरे पास कछु नहीं भाई।
ये तो कर लेना स्वीकार, तेरा बेड़ा हो जाये पार,
तेरी होगी जै जैकार, बैठ आये रे तेरी नाव में ।।5 ।।

जैसे तुम हो खेवया वैसे हम हैं, भाई-भाई से लेना शरम है।
मैने नहीं कराई पार, करना भवसागर से पार,
परमानन्द की पुकार, बैठे रहो जी मेरी नाव में ।।6 ।।

राम नाम अनमोल है प्यारे

राम नाम अनमोल है प्यारे, सुबह शाम तुम लिया करो।
जो कोई आये द्वार तुम्हारे, उसकी सेवा किया करो।।
ना मालूम किस वेष में तुमको, नारायण मिल जायेगा।
राम नाम से लगन लगा, बैकुण्ठ द्वार खुल जायेगा।।
रुखी-सुखी खाय के भैया, ठण्डा पानी पिया करो।
जो कोई आये द्वार तुम्हारे.........।

अच्छी करनी करो हमेशा और अच्छा व्यवहार करो।
सदा करो सतसंग प्रभु का, परमेश्वर से प्यार करो।
रोज सबेरे नित्य नियम से राम का दर्शन किया करो।
जो कोई आये द्वार तुम्हारे.........।

मात-पिता और गुरु चरणों में, सबसे प्रथम प्रणाम करो।
रामायण को पढ़ो हमेशा, गीता जी का ध्यान धरो।
जो कुछ देवें तुम्हें रामजी, सन्तोष उसी में किया करो।
जो कोई आये द्वार तुम्हारे.........।

राम नाम को भजो चतुर नर, समय बीतता जाता है।
ऐसा अवसर बार-बार नहीं, जीवन में फिर आता है।
पाँच अँगुलियाँ प्रभू ने दी है, परमपुण्य कुछ किया करो।
जो कोई आये द्वार तुम्हारे.........।

देखा भैया राम नाम ही, साथ तुम्हारे जायेगा।
सच्चे मन से भक्ति कर लो, जनम सफल हो जायेगा।
राम नाम का ये अमृत रस, घोंट घोंटकर पिया करो।
जो कोई आये द्वार तुम्हारे.........।

ॐ अर्हम्

तेरे मन में राम तन में राम

तेरे मन में राम तन में राम, रोम रोम में राम रे
राम सुमिर ले ध्यान लगा ले छोड़ जगत के काम रे...

माया में तू उलझा उलझा दर-दर धूल उड़ाये
अब करता क्यों मन भारी जब माया साथ छुड़ाये
दिन तो बीता दौड़ धूप में ढल जाए ना शाम रे...

तन के भीतर पांच लुटेरे डाल रहे हैं डेरा
काम क्रोध मद लोभ मोह ने मुझको ऐसा घेरा
भूल गया तू राम रटन भूला पूजा का काम रे...

बचपन बीता खेल खेल में भरी जवानी सोया
देख बुढ़ापा सोचे अब तू क्या पाया क्या खोया
देर नहीं है अब भी बन्दे ले ले उसका नाम रे...

राम प्यारे से जिसका सम्बन्ध है

राम प्यारे से जिसका सम्बन्ध है,
उसे हरदम आनन्द ही आनन्द है,

1. लेके सच्चे प्रभु का सहारा झूठी दुनियां से करके किनारा
   जिसमें प्रभु की हो मेरे रजामन्द है।।

2. जिसकी वाणी में कोयल सी चंहक है
   जिसकी करनी में फूलों सी महक है।
   जिसमे पाखण्ड और न घमण्ड है।।

3. निन्दा चुगली न जिसको सुहाये
   बुरी संगत न जिनको भाये
   जिसे सत्संग प्रवचन पसन्द है।।

4. बनके सेवक भला सबका कीजे,
   दीन दुखियों के दुख को हर लीजे,
   फैले दुनियां में उनकी सुगन्ध है।।

5. कहते शिवमंगल सुनो मेरे भाई,
   करलो जीवन की सच्ची कमाई
   अनन्तराम कहें जय सच्चिदानन्द हैं।

श्री राम का सुमिरन किया करो

श्री राम का सुमिरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो
जो दुनिया का मालिक है नाम उसी का लिया करो

1. सुर दुर्लभ मानव तन तूने बड़े भाग्य से पाया है,
   विषयों में फँस कर के बन्दे हीरा जन्म गँवाया है।
   दुष्ट संग मत किया करो–सज्जनों का गुण लिया करो।।

2. पता नहीं कब रुक जाये ये चलते चलते स्वांसा है
   एक क्षण में सब खत्म हो जाये जग का सभी तमासा है,
   सुबह शाम जप किया करो नाम प्रभु का लिया करो।।

3. हर प्राणी से प्यार करो प्रभु सबमें वही समाया है,
   मिलकर रहना सब हैं अपने कोई नहीं पराया है,
   द्वेष भाव मत किया करो दुख न किसी को दिया करो।।

4. स्वामी शिवमंगल की विनती भगवन से तुम प्यार करो,
   घर आये मेहमान की सेवा से तुम न इनकार करो,
   भजन अनन्त का सुना करो नाम कीर्तन किया करो।।

रामनाम के हीरे मोती

रामनाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली गली।
लेलो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली गली।।

माया के दीवाने सुनलो एक दिन ऐसा आयेगा,
हाथी घोड़े माल खजाना, यहीं पड़ा रह जायेगा,
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चरचा होगी गली-गली।।

क्यों करता है मेरा मेरा, यह तो मेरा मकान नहीं,
झूठे जग में फंसा हुआ जो, वो सच्चा इन्सान नहीं,
जग का मेला दो दिन का है, अन्त में होगी चला-चली।।

जिन जिन ने ये मोती लूटे, वोह तो मालामाल हुवे,
धन दौलत के वे न पुजारी, आखिर वो कंगाल हुवे,
चांदी सोने वाले सुनलो, बात सुनाऊँ खरी-खरी।।

दुनियां को तू कब तक, पगले मेरी कहता जायेगा,
ईश्वर को तो भूल गया है, अंत समय पछतायेगा,
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कली कली।।

प्रेममुदित मनसे कहो राम

प्रेममुदित मनसे कहो राम राम राम।
श्री राम राम राम, श्री राम राम राम।।

पाप कटैं, दुख मिटैं, लेन राम-नाम।
भव-समुद्र सुखद नाव एक राम-नाम।।

परम सांति-सुख-निधान नित्य राम-नाम।
निराधारको अधार एक राम-नाम।।

परम गोप्य, परम इष्ट मंत्र राम-नाम।
संत-हृदय सदा बसत एक राम-नाम।।

महादेव सतत जपत दिव्य राम-नाम।
काशी मरत मुक्त करत कहत राम-नाम।।

माता-पिता, बंधु-सखा, सबहि राम-नाम।
भक्त-जनन-जीवन-धन एक राम-नाम।।

भगवान तुम्हारे चरणों में

भगवान तुम्हारे चरणों में, मै तुम्हें रिझाने आई हूं।
वाणी में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आई हूं।

प्रभु का चरणामृत लेने को, है पास मेरे कोई पात्र नहीं।
आंखों के दोनों प्यालों में, कुछ भीख मांगने आई हूं।।
भगवान तुम्हारे चरणों में....

तुम से लेकर क्या भेंट धरुं, भगवान आपके चरणों में।
मैं भिक्षुक हूं तुम दाता हो, सम्बन्ध बताने आई हूं।।
भगवान तुम्हारे चरणों में....

सेवा को कोई वस्तु नहीं, फिर भी मेरा साहस देखो।
रो-रोकर आज आंसुओं का, मैं हार चढ़ाने आई हूं।।
भगवान तुम्हारे चरणों में....

नाथ मैं थारो जी थारो

नाथ मैं थारो जी थारो!
चोखो, बुरो कुटिल अरु कामी जो कछु हूँ सो थारो,
बिगड़्यो हूँ तो थारो बिगड्यो, थे ही मनै सुधारो।
नाथ मैं थारो जी थारो!

सुधर्‌यो तो प्रभु सुधर्‌यो थारो, थां सूं कदे न न्यारो,
बुरो बुरो मैं भोत बुरो हूँ, आखर टाबर थारो।
नाथ मैं थारो जी थारो!

बुरो कहाकर मैं रह जास्यूं, नांव बिगड़सी थारो,
थारो हूं थारो ही बाजूं, रहस्यूं थारो थारो।।
नाथ मैं थारो जी थारो!

मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल पल छिन छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है.....
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों और अंधेरा हो।
पर चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है.....
चाहे अग्नि में भी जलना हो, चाहे कांटों पर ही चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है.....
चाहे गृहस्थ का फर्ज निभाना हो, चाहे घर-घर अलख जगाना हो।
चाहे दुश्मन सारा जमाना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है.....
चाहे बीच भंवर में नैया हो, चाहे कोई न उसका खिवैया हो।
भवसागर पार उतरने को, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है.....
चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है.....

भजो रे मन, राम-नाम सुखदाई

भजो रे मन, राम-नाम सुखदाई ॥

राम-नाम के दो अक्षरमें, सब सुख शान्ति समाई।।भजो०।।1।।

रामको नाम लेत मुखसे, भवसागर तर जाई।।भजो०।।2।।

राम-नाम भज ले मन मूरख, बनत-बनत बन जाई।।भजो०।।3।।

राम-नामके कारण बन गई, पागल मीरा बाई।।भजो०।।4।।

गणिका गिद्ध अजामिल तारे, तारे सदन कसाई।।भजो०।।5।।

जूठे बेरनमें शबरीके, भर गई कौन मिठाई।।भजो०।।6।।

मीठे समझके ना प्रभु खाये, प्रेमकी थी अधिकाई।।भजो०।।7।।

पायो जी म्हे तो राम

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।
बस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो ।।

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।
बस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।

जनम जनमकी पूँजी पाई, जगमें सभी खोवायो।
खरचै नहि कोइ चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।।

सतकी नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायो।।

भज मन रामचरन सुखदाई

भज मन रामचरन सुखदाई ।।ध्रु०।।

जिहि चरननसे निकसी सुरसरि संकर जटा समाई।
जटासंकरी नाम पर्‌यो है, त्रिभुवन तारन आई।।

जिन चरननकी चरनपादुका भरत रह्यो लव लाई।
सोय चरन केवट धोइ लीने तब हरि नाव चलाई।।

सोइ चरन संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई।
सोई चरन गौतमऋषि-नारी परसि सरमपद पाई।।

दंडकबन प्रभू पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई।
सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा सँग धाई।।

कपि सुग्रीव बंधु भय-ब्याकुल तिन जय छत्र फिराई।
रिपु को अनुज बिभीषन निसिचर परसत लंका पाई।।

सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सेष सहस मुख गाई।
तुलसिदास मारुत-सुतकी प्रभु निज मुख करत बड़ाई।।

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार, उदास मन काहे को करे।
नैना तू कर दे प्रभुके हवाले, लहर-लहर हरि आप सँभाले
हरि आप ही उतारे भार, उदास मन.।।1।।

ये काबूमें मँझधार उसी के, हाथों में पतवार उसी के।
बाजी जीत लेवो चाहे तुम हार, उदास मन०।।2।।

गर निर्दोश तुझे क्या डर है, पग पग पर साथी ईश्वर है।
जरा भावना से कीजिये पुकार, उदास मन०।।3।।

सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा।
डोरी सौंप दे उसी के सब हाथ, उदास मन०।।4।।

भजले मनवा साँझ सबेरे

भजले मनवा साँझ सबेरे,
एक माला हरिनाम की।
जिस माला में राम नाम नहीं,
वो माला किस काम की ।।टेर।।

ये संसार कागज की पुड़िया, बूंद पड़े गल जायेगी।
तेरी मेरी छोड़ बावरे, धुन लगा हरि नाम की।।

नैणा दिये दरश करने को, कान दिये सुण ज्ञान रै।
जीभ देई हरि, गुण गाने को, बोलो सियावर राम की।।

पवन गणिका गिध अजामिल, तिर गये हरिनाम से।
ध्रुव-त्यारे प्रह्लाद उबारे, बोलो कृपा निधान की।।

जब तकहै तेरी जिन्दगी

जब तक है तेरी जिन्दगी, फुरसत न मिलेगी काम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्रीराम से।।

जय राम, जय राम, जय जय राम।
श्री राम जय राम, जय जय राम।।

राम नाम के दो अक्षर की, महिमा है अति भारी।
राम कृपा जिसके ऊपर वो, सुखी रहे संसारी।।
राम नाम नित बोल तू बन्दे, जीवन बिना आराम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।।

पांच पहर धन पाने खातिर, यहां वहां तू खोए।
तीन पहर तू तान के चादर, गहरी नींद में सोए।।
एक पहर तो सुमिरन कर ले, राम का विश्राम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।।

बचपन बीता खेल-खेल में, और जबानी राग-रंग।
सारा जीवन बीत गया, किया न साधु संग।।
राम रंग में रंग जा अब तो, सेवा कर निष्काम से।
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी की पुनः आध।
तुलसी संगत साधु की, कटे कोटि अपराध।।
पत्थर भी सागर में तर गए, राम नाम के नाम से
ऐसा कोई समय निकालो, प्रीत बने श्री राम से।।

'राम नाम' का जीवन में महत्व

पार्वतीजी ने एक बार शिवजी से पूछा – ''महाराज! आप राम नाम इतना लेते हैं और इसका इतना महात्म्य बतलाते हैं, संसार के लोग भी तो इस नाम को रटते हैं, फिर क्या कारण है कि उनका उद्धार नहीं होता?'' महादेवजी बोले–''उनका राम नाम की महिमा में विश्वास नहीं है''। वे परीक्षा के लिये काशी के एक घाट पर बैठ गये, जहाँ से लोग रामनाम रटते हुये गंगास्नान करके लौटते थे। महादेवजी एक कीचड़ भरे गड्ढे में गिर पड़े और पार्वतीजी ऊपर बैठी रही। जो भी व्यक्ति उस मार्ग से निकालता पार्वतीजी उससे कहती – ''मेरे पति को गड्ढे से निकालदो''। जो निकालने जाता उससे कहती – ''जो निष्पाप हो वही निकाले, अन्यथा भस्म हो जायगा।'' इस प्रकार एक पर एक लोग आते और शर्त सुनकर वापस लौट जाते। शाम हो गई, पर कोई निष्पाप निकालने वाला न मिला। अन्त में गोधूलि बेला में गंगास्नान करके एक व्यक्ति आया और रामनाम रटता हुआ वहाँ पहुंचा। वह निकालने के लिये बढ़ा तो पार्वतीजी ने कहा कि निष्पाप व्यक्ति होना चाहिये। इस पर वह बोला – गंगा स्नान कर चुका हूं राम नाम ले रहा हूं, फिर भी पाप लगा है ? पाप तो एक बार राम के नाम स्मरण से ही छूट जाता है। मैं सर्वथा निष्पाप हूं और मैं इस व्यक्ति को निकालूंगा। ठीक इसी प्रकार हम हैं। गंगास्नान करते है, राम नाम लेते हैं, परन्तु हम सर्वथा निष्पाप नहीं है, क्योंकि नाम में हमारी पूर्ण आस्था नहीं है। जितनी शक्ति नाम में पाप नाश की है, उतनी शक्ति तो महापापी में पाप करने की भी नहीं है। नाम अन्तःकरण को मधुमय, प्रकाशमय और आनन्दमय बना देता है।

"राम नाम" गोपनीय मन्त्र है। इसका मूल्य लोग अपने ज्ञान और दृष्टि के अनुसार ही लगाते हैं। मणि का गुण सब्जी बेचने वाला नहीं जान सकता, उसका मूल्य तो जौहरी ही लगा सकता है। जिसकी जितनी पहूँच है उतना ही अधिक मूल्यवान उसके लिये राम नाम है। राम नाम की अनन्त महिमा है। नाम महिमा का वर्णन सहस्त्र जिह्वा के शेष नाग भी नहीं गा सके। फिर अन्यों की तो बात ही नहीं कही जा सकती।

"राम" शब्द में तीन अक्षरों का समावेश है-

र + आ + म = राम

र – अक्षर सूर्य की शक्ति रखता है।
आ– अक्षर अग्नि की शक्ति रखता है।
म– अक्षर चन्द्रमा की शक्ति रखता है।

अर्थात – "राम" शब्द के अन्दर सूर्य, चन्द्र और अग्नि की शक्ति निहित है। राम नाम के जापक को तीनों शक्तियों का महान तत्व प्राप्त होता है। सूर्य ज्ञान को उत्पन्न करता है, अग्नि पाप का नाश करती है एवं चन्द्रमा अमरत्व प्रदान करता है। इस तरह केवल एक "राम" के नाम द्वारा अनन्त तत्व की प्राप्ति हो जाती है।

राम-नाम के दो अक्षर में क्या जाने क्या बल है।
नामोच्चारण से ही मन का धुल जाता सब मल है।।
गद्‌गद् होता कण्ठ, नयन से स्त्रवित होता जल है।
पुलकित होता हृदय, ध्यान आता प्रभु का पल पल है।।
यही चाह है नाथ! नाम जप का यह तार न टूटे।
सब छूटे तो छूटे प्रभु! तेरा ध्यान कभी न छूटे।।

श्री हनुमान जी

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्री रामदूतं शरणम् प्रपद्ये।।

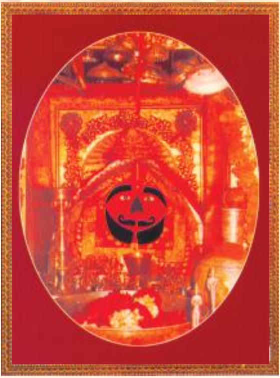

श्री सालासर हनुमान जी

श्री हनुमान जी

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।।1।।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।।
चौंकि महामुनि शाप दियो तब, चाहिये कौन विचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के शोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ।।2।।

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौं हम सों जुं, बिना सुधि लाए इहां पगु धारो।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया-सुधि प्राण उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ।।3।।

रावण त्रास दई सिये को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सिय अशोक सों आगि सु, दे प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ।।4।।

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावण मारो।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु-बीर उपारो।
आनि संजीवनि हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्राण उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ।।5।।

रावण युद्ध अजान कियो तब, नाग की फांस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ।।6।।

बंधु समेत जबै अहिरावण, लै रघुनाथ पाताल सिधारो।
देवहिं पूजि भली विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो।
जाय सहाय भयो तबही, अहिरावण सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ।।7।।

काज किए बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो।
बेगि हरौ हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो ।।8।।

दोहा-- लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
ब्रज देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

श्री बजरंग बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

जय हनुमान सन्त हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै॥
जैसे कूदि सिन्धु महिपारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥
आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुरलोका॥
जाय विभीषन को सुख दीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा॥
बाग उजारि सिन्धु महं बोरा। अति आतुर जमकातर तोरा॥
अक्षय कुमार को मारि संहारा। लूम लपेट लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर में भई॥
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर्यामी॥
जय जय लखन प्राण के दाता। आतुर होइ दुःख करहु निपाता॥
जै गिरिधर जै जै सुख सागर। सुर समूह समरथ भटनागर॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहि मारू बज्र की कीले॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो॥
ॐकार हुंकार महाप्रभु धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥
ॐह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा॥
सत्य होहु हरि शपथ पायके। राम दूत धरु मारु जायके॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥
पांय परौं कर जोरि मनावौं। येहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

श्री हनुमानजी

जय अंजनि कुमार बलवन्ता। शंकर सुवन वीर हनुमन्ता।।
बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक।।
भूत, प्रेत, पिशाच निशाचर। अग्नि बैताल काल मारी मर।।
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की।।
जनकसुता हरि दास कहावो। ताकी शपथ विलम्ब न लावो।।
जै जै जै धुनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा।।
चरण शरण कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरवौं।।
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई। पांय परौं कर जोरि मनाई।।
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता।।
ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल दल।।
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय आनंद हमारो।।
यह बजरंग बाण जेहि मारै। ताहि कहो फिर कौन उबारै।।
पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की।।
यह बजरंग बाण जो जापै। ताते भूत प्रेत सब कांपै।।
धूप देय अरु जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहै कलेशा।।

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।

श्री हनुमान कथा

सुनलों भगतों हम हनुमत की, कुछ अनुपम कथा सुनाते हैं।
किस कारण से बजरंग बली इस जग में पूजे जाते हैं।
बोलो सब बोलो, बजरंगबली की जै बोलो।

बाबा की है क्या पहचान, लाल लंगोटा लाल निशान।
लाल लंगोटा लाल निशान, जै बजरंगी जै हनुमान ।।टेर।।
बालाजी ने बालपन में, ऐसा बल दिखलाया है।
जग के उजियारे रवि को, मुख में अपने लिया दबाया है।
देव कहे हे कपि आज गर तूँ हठ पर आ जायेगा।
विधना का समलेख जगत में ही झूठा हो जायेगा।
इतनी विनती सुनी कपि ने, रवि को मुख से छोड़ा था।
हठीले हनुमन्ता ने कभी ना, धर्म से नाता तोड़ा था।
उसी समय से देव सभी, बाला जी से घबराते हैं।
इसीलिए बजरंग बली इस जग में पूजे जाते हैं।।1।।
युद्ध में जब अर्जुन ने कर्ण के, रथ को चकनाचूर किया।
कर्ण ने भी अर्जून के उपर, वार एक भरपूर किया।
अहंकार में बोले अर्जुन, तूँ मुझ जैसा वीर नहीं।
तोड़े अर्जुन का रथ तेरे पास कोई भी तीर नहीं।
उसी समय श्रीकृष्ण प्रभु अर्जुन को समझाते हैं।
किस कारण ये बचा है रथ, अर्जुन को ज्ञान कराते हैं।
पहला कारण रथ पर बैठा, खुद मोहन त्रिपुरारी।
दूजा कारण मुकुट मेरा जो तीन लोक से भारी है।
तीजा कारण एक बलकारी, बना है अपना रखवाला।
ध्वजा लिए बैठा है रथ के, उपर वो बजरंग बाला।
जिसपर मेहर करे हनुमन्ता, निश्चित विजय दिलाते हैं।।2।।
राम लखन दोनो को ही जब, अहिरावण हर लाया था।

स्वामी का सांचा सेवक, पाताल भी पहुंचा पाया था।
होनी का भी खेल देखिये, क्या क्या रंग दिखाती है।
पवन पुत्र को बेटे से, पाताल में जाय मिलती है।
उस अपने अनमोल रतन को, हनुमत गले लगाते हैं।
जिन राहों पर चले थे खुद वो बेटे को समझाते हैं।
सदा धर्म का साथ निभना, एक पिता की अर्ज है ये।
स्वामी खातिर मिट जाना, सच्चे सेवक का फर्ज है ये।
और तो मैं भी कुछ ना जानूँ, जो तुमको बतलाऊँगा।
रोक सको तो रोक लों मैं, स्वामी से मिलने जाऊँगा।
उधर सोचते हैं अहिरावण, आज तो काम बनाऊँगा।
देवी के सम्मुख राम लखन दोनों की बली चढ़ाऊँगा।
जितने घात हुए हैं कुल पर, बदले सभी चुकाऊँगा।
बोलो क्या अंतिम इच्छा है, वो पूरी करवाऊँगा।
लखन लाल कहे एक तमन्ना, बस होठों पर आती है।
हनुमत से मिलवा दो, संकट में वो सच्चा साथी है।
फिर बली चढ़ाकर अहिरावण की, राम लखन को लाते हैं।।3।।
जाने कितने पार उतारे, साधु, सन्त, फकीरों को।
आन सवारो बाबा मेरी बिगड़ी हुई लकीरों को।
पूजा विधी ना जाने हम, बस इतना ही कर पाते हैं।
जहाँ दिखाई देते हो, हम नत मस्तक हो जाते हैं।
आशा की झोली फैला कर, मांगे तुमसे ये वरदान।
भजन तुम्हारे ही गायें जब, लग हो अपने घट में प्राण।
पूरा कर दिजो हे बाबा, इस सेवक का ये अरमान।
अपने भक्तों की सूची में, लिखलो सेवक मायाराम।
"मोती" गुरु के शब्द आज भी, हृदय में लहराते हैं।
कि श्रद्धालू की नैया हनुमत, निश्चित पार लगाते हैं।।4।।

भरोसो भारी है

बजरंग बाला, जपू थारी माला।
राम दूत हनुमान, भरोसो भारी है।।टेर।।

लाल लंगोटे वालो तू, अंजनी मां को लालो तूं।
राम नाम मतवालो तूं, भक्तों का रखवालो तूं।
सालासर तेरा भवन बना है, सुन ले पवन कुमार।
भरोसो भारी है....

शक्ति लक्ष्मण के लागी, पल माहीं मूर्छा आगी।
द्रोण गिरी पर्वत लाओ, साचों है तू अनुरागी।।
घोल संजीवन लखन पिलाये, जाग उठे बलवान।
भरोसो भारी है....

तूने लंका जारी रे, मारे अत्याचारी रे।
हुक्म की ताबेदारी रे, बाल जती ब्रह्मचारी रे।
अहिरावण की भुजा उखाड़ी, लाओ तू भगवान।
भरोसो भारी है....

बड़े बड़े कारज सारे, दुष्टों को दलने वाले।
सच्ची भक्ति के बल से, झट से राम दिखा डाले।
चीरा कलेजा तू दिखलाया, मग्न भये भगवान।
भरोसो भारी है....

बल को तेरो पार नहीं, ना तुझसो दिलदार कोई।
शंकर को अवतार तू ही, साचो हिम्मतदार तू ही।
शरण पड़े न आन उबारो, भक्त करे पुकार।
भरोसो भारी है....

ओ सालासर के सांवरिया

ओ सालासर के सांवरिया, तेरे दर पर भिखारी आया है,
आशा की झोली है कर में, तेरे द्वार पर अलख जगाया है।
ओ सालासर के...

भरते हो हजारों के दामन, तब ही प्रभु राम कहाए हो,
मैं दीन अनाथ हूं, श्याम प्रभू, भर दो मेरी खाली झोली।
ओ सालासर के...

मेरा निश्चय है बस एक यही, एक बार तुम्हें, मै पा जाऊं,
अर्पण कर दूं, दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।
ओ सालासर के...

माता की सुध तुम लाए थे, लंका को तुम्हीं जलाए थे,
मेरा कर दो, बेड़ा पार प्रभू, चरणों में, तेरे मैं आया हूं।
ओ सालासर के...

दुष्टों को मार भगाओ तुम, भक्तों को पार लगाओ तुम,
अब संकट सबके दूर करो, चरणों में तेरे आया हूं।
ओ सालासर के...

मैं दीन अनाथ हूं, श्याम प्रभु, तुम हो दीनन के हितकारी,
कर दे ओ दया स्वामी मुझ पे, क्यों दिल से मुझे भुलाया है।
ओ सालासर के...

मेरी विनती सुनो

मेरी विनती सुनो हनुमान धरूं मैं थारो ध्यान।
पवन का प्यारा अंजनी के लाल दुलारा।।

सिर मुकुट गले फूल माला श्री लाल लंगोटे वाला
थारे कुण्डल झलके कान ज्यों चन्द उजियारा ।। अंजनी के...

शिव शंकर के अवतारी, श्रीराम के आज्ञाकारी।
जय पवन पुत्र बलवान तेज अति भारा ।। अंजनी के...

लक्ष्मण के प्राण बचाये, अहिरावण मार गिराए
श्रीराम के भक्त सुजान करो निस्तारा ।। अंजनी के...

नित नाम रटूं मैं बाबा तेरा दुख संकट हरियो मेरा
कहे भक्त करो कल्याण, मैं दास तुम्हारा ।। अंजनी के...

ॐ अर्हम्

तेरे तन में बसे राम

तेरे तन में बसे राम, तेरे मन में बसे हैं राम।
तेरे रोम-रोम में राम, तुम तो बजरंगबाला हो।
तुम्ही तो अंजनी लाला हो ।।टेर।।

हे पवन पुत्र बलधारी, तेरी महिमा जग में भारी।
हे बालजति ब्रह्मचारी, शिवशंकर के अवतारी।
तेरी महिमा, गुण गरिमा, गाते हैं वेद-पुराण।।तेरे तन में।।

मस्तक पर मुकुट विशाला, कानों में कुण्डल बाला।
जपे राम नाम की माला, है लाल लंगोटे वाला।
तेरी सूरत, बनी मूरत, पुनरासर तेरा धाम ।। तेरे तन में।।

रावण की लंका जलाकर, सुधि सीताजी की लाये।
संजीवन बूंटी लाकर, लछ्मन के प्राण बचाये।
इस कारण, जगतारण, माने तेरा एहसान ।। तेरे तन में।।

नित उठ तेरा ध्यान लगाऊँ, चरणों में शीश नमाऊँ।
निश दिन तेरी ज्योत जलाऊँ, श्रद्धा के सुमन चढ़ाऊँ।
तेरी सेवा, जगमेवा, मेरा जीवन विश्राम ।। तेरे तन में।।

यह 'भक्तमण्डल' प्रभु तेरा है, है भक्त जनों का डेरा।
जीवन में ज्योति जलाकर, करदो अब दूर अन्धेरा।
गुण गायें, तर जायें, देदो ऐसा वरदान ।। तेरे तन में।।

लाल लंगोटो हाथ

लाल लंगोटो हाथ में घोटो, थारी जय हो पवनकुमार
वारी जाऊँ बाला जी।।

सालासर थारो देवरो।
थारे नौबत बाजै द्वार।। वारी जाऊँ.........

चैत सुदी पूनम को मेलो,
थार आव भगत अपार।। वारी जाऊँ.........

गठ जोड़ा की जात जडुला,
देवे लाखों ही नर नार।। वारी जाऊँ.........

ध्वजा नारियल चढ़े चुरमो,
कोई सिर पर छत्र हजार।। वारी जाऊँ.........

घर-घर थारी ज्योत जगै है,
थारां भक्त करै जय जयकार।। वारी जाऊँ.........

घृत सिन्दूर चढ़ावै थांरै,
कोई मंगल और शनिवार।। वारी जाऊँ.........

भक्तां का थे कारज सारो,
थारी महिमा अपरम्पार।। वारी जाऊँ.........

'भक्तां' की विनती बाबा,
म्हारो बेड़ो लगा दिज्यों पार ।। वारी जाऊँ.........

ॐ अर्हम्

आ लौट के आजा

आ लौट के आजा हनुमान, तुम्हे भगवान बुलाते है,
बचा लछमण के अब तूं प्राण, तुम्हे श्रीराम बुलाते हैं।।

गए संजीवन लाने पवनसुत, क्यों ना अब तक आये,
सेनापति सुग्रीव पुकारे, नर बानर कुम्हलाये,
सब लोग भए रे सुनसान, तुम्हे भगवान.....।।1।।

कभी तड़फते कभी बिलखते, राम प्रभु हैं रोते,
हाय लखन तुम अपनी माता के, बेटे हो इकलौते,
प्रभू करते रूदन महान, तुम्हे भगवान...।।2।।

देखो रात ये बीती जाये, कुछ ही पल है बाकी,
देख देख कर राह तुम्हारी, मेरी अंखियां थाकी,
कहीं उदय ना हो जाये भान, तुम्हे भगवान...।।3।।

प्रातः समय हनुमान संजीवन, ले धरती पे आये,
धन्य धन्य बजरंगी तुम ने, लक्ष्मण प्राण बचाये,
झट जाग उठे बलवान, तुम्हे भगवान... ।।4।।

दुनियां चले ना श्रीराम के बिना

पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहिं सूर भूप।।

दुनियां चले ना श्रीराम के बिना।
रामजी चले ना हनुमान के बिना ।।टेर।।
जब से रामायण पढ़ ली है,
एक बात मैंने समझ ली है,
रावण मरे ना श्रीराम के बिना,
लंका जले ना हनुमान के बिना ।।1।।
लक्ष्मण का बचना मुश्किल था,
कौन बुँटी लाने के काबिल था,
लक्ष्मण बचे ना श्रीराम के बिना,
बुँटी मिले ना हनुमान के बिना ।।2।।
सीता हरण की कहानी सुनो,
"बनवारी" मेरी जुबानी सुनो,
वापस मिले ना श्रीराम के बिना,
पता चले ना हनुमान के बिना ।।3।।
बैठे सिंहासन पर श्रीरामजी,
चरणों में बैठे हैं हनुमान जी,
मुक्ति मिले ना श्रीराम के बिना,
भक्ति मिले ना हनुमान के बिना ।।4।।

झालर शंख नगाड़ा

झालर शंख नगाड़ा बाजै रे, बाजै रे,
सालासर रै मंदिर में हनुमान बिराजै रै।।

भारत राजस्थान में जी सालासर एक धाम,
सूरज सामो बण्यो देवरो, महिमा अपरम्पार,
थांरै, लाल ध्वजा फहरावै रे-२, सालासर...।।

नारेला री गिणती कोनी, सुवरण छत्र हजार,
दूर देश से दर्शन करनै, आवै नर और नार,
थांरै, जात झडूला लागै रै-२, सालासर...।।

चैत सुदी पूनम रो मेलो, भीड़ लगै अति भारी,
नर नारी थांरा दर्शन करणै, आवै बारी बारी,
बाबो, अटक्या कारज सारै रै-२, सालासर...।।

राम दूत अंजनी रै सुत रो, धरो हमेशा ध्यान,
''भक्त मंडल'' चरणां रो चाकर, लाज रखो हनुमान,
बाबो, बेड़ो पार लगावै रे-२, सालासर...।।

बजरंगबली मेरी नाव

बजरंगबली मेरी नाव चली
मेरी नाव को पार लगा देना
मुझे माया मोह ने घेर लिया
संताप हृदय का मिटा देना..........

मैं दास तो आप का जन्म से हूँ
बालक और शिष्य भी धर्म से हूँ
निर्ल्लज विमुख निज कर्म से हूँ
चित से मेरा दोष भुला देना.............

दुर्बल गरीब और दीन भी हूँ
निज कर्म क्रियागत हीन भी हूँ
बलवीर तेरे आधीन हूँ मैं
मेरी बिगड़ी बात बना देना...............

बल मुझ को दे निर्भय कर दो
यश शक्ति मेरी अक्षय कर दो
मेरा जीवन अमृतमय कर दो
संजीवन मुझे पिला देना...................

करूणानिधि नाम तो आपका है
तुम रामदूत अविराम कहो
छोटा सा है एक काम मेरा
श्री राम से मोहे मिला देना..............

ॐ अर्हम्

चालो भक्तों चालां

चालो भक्तों चालां, म्हारै बाबै के दरबार में,
म्हारै बाबै के दरबार में, बालासा के दरबार में।

बालाजी का दरसण करस्याँ, ध्वजा चढ़ास्याँ जाय जी,
रोट, चुरमो भोग लगास्याँ, फैरी देस्याँ साथ जी,
सागीड़ी ज्योत जगास्याँ, म्हारै बाबै के दरबार में।।

महिमा अपरम्पार है आँ की, पार न कोई पायो है,
रोम रोम में राम नाम, निष्काम भक्त कहलायो है,
चरणां में धोक लगास्याँ, म्हारै बाबै के दरबार में।।

संकटमोचन नाम प्रभु को, सबका कष्ट मिटावे है,
शरणागत हो जो भी आवे, किरपा कर अपनावे है,
श्रद्धा का फूल चढ़ास्याँ, म्हारै बाबै के दरबार में।।

मन में है विश्वास अगर तो, जो माँगो मिल जावेगो,
आस लिया जो दर पर आयो, खाली हाथ न जावेलो,
झोली भरकर के ल्यास्याँ, म्हारै बाबै के दरबार सै।।

जैकारा बजरंगवली का, सगला खूब लगावांला,
'भक्तमंडल' के बालक सारा, मिलकर अरज सुणावाँला,
अबकै अरजी सिकरास्याँ, म्हारै बाबै के दरबार में।।

ओ सुन अंजनी

ओ सुन अंजनी के लाला,
मुझे तेरा एक सहारा,
मुझे अपनी शरण में ले लो,
मैं बालक भक्त तुम्हारा ॥टेर॥

माथे पर तिलक विशाला, कानों में सुन्दर बाला।
थारे गले राम की माला, ओ लाल लंगोटे वाला।
थारा रूप जगत से न्यारा, लगता है सबको प्यारा॥॥ 1 ॥
प्रभु सालासर के मांही, थारों मन्दिर है अति भारी।
नित दूर-दूर से आवे, थारे दर्शन को नर नारी।
जो लाये घृत सिन्दूरा, पा जाये वो फल पूरा॥ ॥ 2॥
सीता का हरण हुआ तो, श्रीराम पर बिपदा आई।
तुम जा पहुँचे गढ़ लंका, माता की खबर तो लगाई।
बानर मिलकर सब तेरे, करे नाम की जय-जयकार॥॥ 3॥
जब शक्ति बाण लगी तो, लक्ष्मणजी को मूर्छा आई।
बानर सेना घबराई, रोये रामचन्द्र रघुराई।
तुम लाय संजीवन बूंटी, लक्ष्मण के प्राण उबारे॥॥ 4 ॥
प्रभु बीच भँवर के मांही, मेरी नाव हिलोरा खाती।
नहीं होता तेरा सहारा, तो डूब कभी की जाती।
अब दे दो इसे किनारा, तुम बनकर खेवन हारा॥॥ 5 ॥
प्रभु तारे भक्त अनेकों, चाहे नर हो या बाला नारी।
अब बोलो पवनकुमारा, मेरी कब आयेगी बारी।
ये 'भक्त मण्डल' के बालक, चाहते हैं तेरा सहारा॥॥ 6 ॥

ॐ अर्हम्

छम-छम नाचे देखो

छम-छम नाचे देखो वीर हनुमाना।

कहते हैं लोग इसे राम का दीवाना।।

छम-छम नाचे देखो वीर हनुमाना।

पांवों में घुंघरू बांध के नाचे।।

रामजी का नाम इसे प्यारा लागे।

राम ने भी देखो इसे खूब पहचाना।। छम-छम नाचे...

जहां-जहां कीर्तन होता श्रीराम का।

लगता है पहरा वहां वीर हनुमान का।।

राम के चरण में है जिनका ठिकाना।। छम-छम नाचे...

नाच-नाच देखो श्रीराम को रिझाए।

'बनवारी' रात दिन नाचे ही जाए।।

भक्तों में भक्त बड़ा दुनिया ने माना।।छम-छम नाचे...

राम राम सिया राम, राम राम सिया राम।

लहर लहर लहराए रे

लहर लहर लहराए रे झण्डा बजरंगबली का।
बजरंगबली का झण्डा बजरंगबली का।

इस झण्डे को हाथ में लेकर-2 रामा साथ में लेकर
लंका जाय जराई रे, झण्डा बजरंगबली का । लहर लहर....
इस झण्डे को हाथ में लेकर-2 रामा साथ में लेकर
माता की सुध लायो रे, झण्डा बजरंगबली का । लहर लहर....
इस झण्डे को हाथ में लेकर-2 रामा साथ में लेकर
संजीवनी लेकर आए रे, झण्डा बजरंगबली का । लहर लहर....
इस झण्डे को हाथ में लेकर-2 रामा साथ में लेकर
लक्ष्मण के प्राण बचाए रे, झण्डा बजरंगबली का । लहर लहर....
इस झण्डे को हाथ में लेकर-2 रामा साथ में लेकर
सीता राम मिलाए रे, झण्डा बजरंगबली का । लहर लहर....
इस झण्डे को हाथ में लेकर-2 रामा साथ में लेकर
भूतों को मार भगाए रे, झण्डा बजरंगबली का । लहर लहर....
इस झण्डे को हाथ में लेकर-2 रामा साथ में लेकर
भक्तों की लाज बचाई रे, झण्डा बजरंगबली का । लहर लहर....
इस झण्डे को हाथ में लेकर-2 रामा साथ में लेकर
लंका जाय जराई रे, झण्डा बजरंगबली का । लहर लहर....

मंगलवार तेरा है

मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है,
बजरंगी सम्भालो परिवार तेरा है,

शनिवार सिन्दुर चढ़ाऊँगा मैं,
मंगलवार को मन्दिर आऊँगा मैं।
मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है,
साँचा-बजरंगी दरबार तेरा है ।।

नैया छोड़ी है तेरे सहारे,
अब लगानी पड़ेगी किनारे ।
मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है,
बजरंगी हमें तो आधार तेरा है ।।

तुने संकट में साथ निभाया,
और मुसीबत से हमको बचाया ।
मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है,
हम गरीबों पे बजरंगी उपकार तेरा है ।।

हम गरीबों का तू है सहारा,
सच्चा साथी समझ कर पुकारा ।
मंगलवार तेरा है, शनिवार तेरा है,
"बनवारी" बतादो क्या विचार तेरा है ।।

श्रीराम की गली में तुम जाना

श्री राम की गली में तुम जाना,
वहां नाचते मिलेंगे हनुमान।

उनके तन में हैं राम उनके मन में हैं राम
अपनी आँखों से देखे वो कण-कण में राम,
श्री राम का वो हो गया दीवाना ।।वहां नाचते....

ऐसे रामजी से जोड़ लिया नाता,
जब भी देखो उन्ही के गुण गाता,
श्री राम के चरणमें ठिकाना ।।वहां नाचते......

उनसे कहना राम-2, वो कहेंगे राम - 2
कुछ भी सुनते नही, बस सुनेंगे राम - 2
महामंत्र है ये भूल नही जाना ।।वहां नाचते......

इतनी भक्ति वो "बनवारी" करने लगे,
उसके सीने में राम सिया रहने लगे
इस कहानी को जानता जमाना ।।वहां नाचते......

ॐ अर्हम्

सालासर वाले बाबा

सालासर वाले बाबा, वीर हनुमाना।
भँवर में फँसी है नैया, पार लगाना।
अंजनी दुलारा, पवन कुमारा,
मन के ताप मिटाना ।।टेर।।

बालरूप में रवि को तूंने, मुख में धर लीन्हा,
देवों की पुकार सुनकर, मुख से बाहर कीन्हा।
महिमा अपार थारी, सारा जग जाना।।
भँवर में फँसी है नैया.... ।।1 ।।

मात सिया को धीरज देने, रूप विराट दिखाया,
कारागार से शनिदेव को, बन्धंन से छुड़ाया,
लंका को जलाने वाले, मुझे ना भुलाना।।
भँवर में फँसी है नैया.... ।।2 ।।

लक्ष्मण जिलाने बाबा, संजीवन ले आये,
अहिरावण को मार मिटाने, गदा भी उठाये,
लाल लंगोटा बाँधे, सिंदूर है सुहाना।।
भँवर में फँसी है नैया.... ।।3 ।।

भरी सभा में सीता की दी, सुन्दर माला तोड़ी,
सीना फाड़ दिखाये सबको, सियाराम की जोड़ी,
"शंकर" भी प्यासा बाबा, दरश दिखना।।
भँवर में फँसी है नैया.... ।।4 ।।

भजले प्यारे साँझ सवेरे

भजले प्यारे साँझ सवेरे, एक माला हरी नाम की।
जिस माला में राम नाम नहीं, वो माला किस काम की।।टेर।।

नाम के बल पर बजरंगी ने, सागर शीला तिराई थी,
बाण लगा जब लखन लालको, संजीवनी पिलाई थी,
नाम के बल पर देखो भाई, बन आई हनुमान की।।
भजले प्यारे साँझ सवेरे...।।1 ।।

नाम के बल पर अंगदजी ने, रावण को ललकारा था,
लेकर नाम प्रभुजी का वो, सभा में पग को रोपा था,
महिमा अगम अपार है, श्री रामचन्द्र भगवान की।।
भजले प्यारे साँझ सवेरे...।।2 ।।

एक माला तो मात जानकी, बजरंगी को दान दिया,
बजरंगी ने तोड़ तोड़ कर, भूमि के ऊपर डाल दिया,
बजरंगी के हृदय बसी थी, मूरत सीताराम की।।
भजले प्यारे साँझ सवेरे...।।3 ।।

बड़े भाग्य से तुमने भाई, मानव तन यह पाया है,
गर्भकाल में कोल किया था, बाहर आ बिसराया है,
सब मिलकर अब जय बोलोजी, पवन पुत्र हनुमान की।।
भजले प्यारे साँझ सवेरे...।।4 ।।

कथा सुनाऊं सबको मैं

कथा सुनाऊं सबको मैं पवन पुत्र बलवान की
जय बोलो हनुमान की, जय बोलो।

बालापन में बजरंगी ने अपना बल दिखलाया
हुआ अंधेरा पृथ्वी पर तब इन्द्र सामने आया
दे वरदान तब देवराज ने सूरज को छुड़वाया
सभी देवता करें बड़ाई बजरंगी बलवान की
जय बोलों...

मात सिया की सुधि लेने अशोक वाटिका आए
भूख लगी जब बाग उजाड़े, तोड़-तोड़ फल खाये
खबर लगी रावण को तो तब पकड़ लिया बलदाय
पूंछमें जिस दम आग लगाई, लंका दई जलाय।
मात सिया को दी अंगूठी, यह निशानी राम की।
जय बोलों...

पाताल पुरी में मकरध्वज ने, आकर करी लड़ाई
अहिरावण को मारूंगा तू हट जा रे बलदाई
पेड़ के पीछे छिपकर के फिर खाए माल मिठाई
अहिरावण को मार के फिर देवी को बलि चढ़ाई
राम-लक्षन को संग में लाए खेल के बाजी जान की।
जय बोलों...

और सुनो फिर गद्दी पर बैठे इक दिन श्रीराम
मोती की माला पहनाई मात सिया ने आन
इक-इक मोती तोड़-तोड़ के फेंक दिए हनुमान,
बोले जिसमें राम नहीं उससे मेरा क्या काम
चीर दिखाया सीना, हैं बैठे रघुवर जानकी।।
जय बोलों...

मुझे माफ करो श्री राम

मुझे माफ करो श्री राम मैंने तोड़ के खाये आम,
इसमें उस रावण का क्या गया,
फल खाना जुल्म क्या हो गया,
मैं क्या करता क्या करता ।।टेर।।

जब मैंने फल ये खाये, तब राक्षस दौड़े आये,
मुझको पत्थर से मारा और भाले भी चुभाये,
मेरा घोटा चालू हो गया, मैं क्या करता-क्या करता,
रावण झगड़ालू हो गया, मैं क्या करता-क्या करता ।।1 ।।

फिर अक्षय लड़ने आया, आते ही मुझे डराया,
उसने भी आँख दिखाई, मैंने तो लात चलाई,
वो राम नाम सत हो गया, मैं क्या करता-क्या करता,
रावन झगड़ालू हो गया, मैं क्या करता-क्या करता ।।2 ।।

फिर मेघनाद को भेजा, उसने भी खाया भेजा,
फिर मैंने पेड़ उखाड़ा, और मेघनाद पर फेंका,
वो चक्कर खाके सो गया, मैं क्या करता-क्या करता
रावन झगड़ालू हो गया, मैं क्या करता-क्या करता ।।4 ।।

फिर उसने रुई मंगाई, मेरी पूछ में आग लगाई,
एक घर से दूजे घर तक, मैंने भी लंका जलाई,
लंका का कबाड़ा हो गया, मैं करता-क्या करता,
रावन झगड़ालू हो गया, मैं क्या करता-क्या करता ।।5 ।।

ॐ अर्हम्

ना स्वर है ना सरगम है

ना स्वर है ना सरगम है, ना लय ना तराना है।
बजरंग के चरणों में, एक फूल चढ़ाना है ।।टेर।।

तुम बाल समय में प्रभु, सूरज को निगल डाले।
अभिमानी सुरपति के, सब दर्प मसल डाले।
बजरंग हुये तब से, संसार ने जाना है ।।1।।

सब दुर्ग ढहा करके, लंका को जलाये तुम।
सीता की खबर लाये, लक्ष्मण को बचाये तुम।
प्रिय भरत सरिस तुमको, श्रीराम ने माना है ।।2।।

जब राम नाम तुमने, पाया ना नगीने में।
तुम फाड़ दिये सीना, सिया राम थे सीने में।
विस्मित जग ने देखा, कपि राम दिवाना है ।।3।।

हे अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी।
ये दीन-हीन चंचल, अभिमानी अज्ञानी।
तुमने जो नजर फेरी, फिर कौन ठिकाना है ।।4।।

कीर्तन की है रात बाबा

कीर्त्तन की है रात बाबा, आज थानै आणों है,
थानै कोल निभाणो है ।।टेर।।

दरबार सांवरिया, ऐसो सज्यो प्यारो, दयालू आपको,
सेवा में सांवरिया, सगला खड्या डीक, हुकुम बस आपको,
सेवा मं थारी-२ म्हान आज बिछ जाणों है,
थानै कोल निभाणों है...... ।।1 ।।

कीर्त्तन की है त्यारी, कीर्त्तन करां जमकर, प्रभू क्यूं देर करो,
वादो थारो दाता, कीर्त्तन मं आण को, धणी क्यूं देर करो,
भजना सुं थान-२ म्हान आज रिझाणों है,
थानै कोल निभाणों है...... ।।2 ।।

जो कुछ बणयो म्हासूं, अर्पण प्रभु सारो, प्रभु स्वीकार करों
नादान सूं गल्ती, होती ही आई है, प्रभु मत ध्यान धरो,
नन्दू सांवरिया-२, थारो दास पुराणों है,
थानै कोल निभाणों है...... ।।3 ।।

ॐ
अर्हम्

बानर बाँको रे

बानर बाँको रे लंका नगरी में मच गयो हाँको रे
मच गयो हाँको, मच गयो हाँको, मच गयो हाँको

मात सिया तूँ बोली रे बेटा, फल खाई तू पाको रे,
इतने मांही कुदया हनुमत, मार फदाको रे ।।1 ।।

रुख उखाड़ पटक धरती पर, भोग लगायो फलाँ को रे,
रखवालो जब पकड़न लाग्यो, दिया झड़ाको रे ।।2 ।।

राक्षसिया अल्ड़ावे सारा, काल आ गयो म्हाकों रे,
मुँह पर मार पड़े मुक्काँ री, फाड़े बाको रे ।।3 ।।

हाथ टाँग तोड़े सिर फोड़े, घट फोड़े ज्यूँ पाको रे,
उथल-पुथल सब करियो बगीचो, बिगड़यो खाको रे ।।4 ।।

उजड़ी पड़ी अशोक वाटिका, ज्यूँ मारण सरड़ाको रे,
लुक छिपकर कई घर म घुसग्या, पड़ गयो फाको रे ।।5 ।।

जाय पुकार करी रावण स्यूँ, दिन खोटो असुरां को रे,
कपि आय एक घुस्यो बाग में, जबर लड़ाको रे ।।6 ।।

भेज्यो अक्षय कुमार भिड़ण नै, हनुमत स्यामी झाक्यों रे,
एक लात की पड़ी असुर पर, पी गयो नाको रे ।।7 ।।

धन्य धन्य रघुवर का प्यारा, अतुलित बल है थाँको रे,
तू ही जग में मुकुटमणी है, सब भक्तांको रे ।।8 ।।

अंजनी माँ के हुयो है लाल

अंजनी माँ के हुयो है लाल, बधाई सारे भक्ताँ ने,
बाज्यो रे बाज्यो देखो थाल, बधाई सारे भक्ताँ ने ।। टेर।।

आज यो आगंणो धन्य हुयो रे,
बजरंग बली को जन्म हुयो रे,
नाचाँ रे नाचाँ नौ नौ ताल, बधाई सारे भक्ताँ ने ।। अंजनी...

खुशखबरी या सबने सुनावां,
झुमां रे नाचां म्हें तो मौज मनावां,
बालाजी लियो अवतार, बधाई सारे भक्ताँ ने ।। अंजनी...

महलां में अंगणो अंगणे में पलनो,
पलने में झूल रहयो, अंजनी को ललनो,
निजर उतारा बार-बार, बधाई सारे भक्ताँ ने ।। अंजनी...

चालो जी अंजनी माता के चाला
बालक निरखस्याँ, थुथकारो घाला,
आओ सजावां पूजन थाल, बधाई सारे भक्तां ने ।। अंजनी...

ॐ अर्हम्

आज हनुमान जयंती है

आज हनुमान जयंती है, आज हनुमान जयंती है...२
होऽऽऽ ऐसा लगता है सारे संसार में मस्ती है, आज...

आज दिन खूबसूरत, बड़ा अच्छा मुहर्त
चैत सुदी पूनम का दिन, सभी का हर्ष रहा मन
माँ अंजनि का जाया, प्रभु की देखो माया
रुप वानर का पाया, वे शिव का रुद्र कहाया
होऽऽऽ माँ अंजनि के द्वारे सखियां मंगल गाती है।।आज...
एक दिन का है झगड़ा, सूर्य को जाकर पकड़ा
देव सब ही घबराये, पवन के द्वारे आये
इन्द्र ने बज्र है मारा, हनुमत ने उसे संहारा-2
होऽऽऽ तबसे यह दुनियां इनको बजरंगी कहती है।।आज...
सिया की जा सुधि लाये, राम के मन को भाये
लंका में धूम मचाये, सारी लंका को जलाये
असुर सब ही घबराये, देव मन में हर्षाये-2
हो ऽऽऽ अजर अमर हो मेरे लाला, सीता कहती है।।आज...
सालासर धाम तुम्हारा, मेहन्दीपुर धाम तुम्हारा
भक्तजन ध्यान लगावें ऽऽऽ सभी तेरे गुण गावें
तेरा कोई पार न पाये, असुर सुनकर घबराये - 2
होऽऽऽ किसी को मारे किसी को तारे, तेरी मर्जी है।।आज...
मैं भी हूँ बालक, तेरा, 'अमर' चरणों का तेरा
नाम जपता हूँ तेरा, मान तू रखना मेरा
तुझे हरदम मैं मनाऊँ कभी ना तुझको भुलाऊँ-2
होऽऽऽ 'रिसड़ा मण्डल' पे हनुमत वीरा, कृपा तेरी है।।आज...

तेरे जैसा राम भक्त

तेरे जैसा राम भक्त कोई हुआ न होगा मतवाला।
एक जरा सी बात पे तूने सीना फाड़ दिखा डाला।।टेर।।

आज अवध की शोभा लगती तीन लोक से भी प्यारी।
चौदह वर्ष बाद राम के राजतिलक की तैयारी।
हनुमत के दिल की मत पूछो, झूम रहा है मतवाला।। एक...(1)
सजा राम दरबार सभा में बहुत से राजा थे आए।
ले उपहार सभा में पहूँचे भर भर थाल सजा लाए।
लंकापति ने भेंट में दे दी रत्न जड़ित मणियों की माला ।। एक...(2)
मणियों की सुन्दर माला चक रही थी अति भारी।
राम प्रभु ने खुश हो करके सीता जी को दे डाली।
माला दी हनुमत को सिया ने, इसको पहन मेरे लाला ।। एक...(3)
माला हाथ में लेकर हनुमत घुमा फिराकर देख रहे।
खाली चमक दमक देखी तो तोड़ तोड़ कर फैंक रहे।
लंकापति मन में पछताया, पड़ा है बन्दर से पाला ।। एक...(4)
लंकापति का धीरज छूटा, क्रोध की भड़क उठी ज्वाला।
भरी सभा में बोल उठा, क्या पागल हो अंजनि लाला।
माला को क्यों तोड़ा तुमने, पेड़ का फल है समझ डाला।। एक...(5)
लंकापति से हनुमत बोले, मुझे नहीं है माला से काम।
मेरे काम की चीज वही है जिसमें बसते है मेरे राम।
राम नजर नहीं आया इसमें यूँ बोला बजरंग बाला।। एक...(6)
इतनी सी बात सुनी हनुमत की बोल उठा लंका वाला।
तेरे में क्या राम बसे हैं भरी सभा में कह डाला।
चीर के सीना हनुमत ने सिया राम का दर्श करा डाला।
भरी सभा में गूँजे जयकारा, जय जय जय अंजनि लाला।। एक...(7)

ॐ अर्हम्

आना पवनकुमार

आना पवनकुमार हमारे हरिकीर्तन में ।।टेर।।

आप भी आना, संग में रामजी को लाना।
लाना जनकदुलारी, हमारे हरिकीर्तन में ।।आना।।

भरतजी को लाना, संग लक्ष्मणजी को लाना।
लाना सब परिवार, हमारे हरिकीर्तन में ।। आना।।

कृष्णजी को लाना, संग राधाजी को लाना।
लाना सब परिवार, हमारे हरिकीर्तन में ।।आना।।

शिवजी को लाना, संग नारदजी को लाना।
डमरु वीणा बजाना, हमारे हरिकीर्तन में ।।आना।।

सुमति को लाना, और कुमति हटाना।
करना बेड़ा पार, हमारे हरिकीर्तन में ।।आना।।

'रिसड़ा मण्डल' पर कृपा करके,
सुनलो नाथ पुकार, हमारे हरिकीर्तन में ।।आना।।

हे दुःख भंजन, मारूति नन्दन

हे दुःख भंजन, मारुति नन्दन
सुनलो मेरी पुकार पवनसुत विनती बारम्बार-२॥ हे दुःख.

अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता, दुःखियों के तुम भाग्य विधाता,
सिया राम के काज संवारे-२, मेरा कर उद्धार।
पवनसुत विनती...

अपरम्पार है शक्ति तुम्हारी, तुम पर रीझे अवध बिहारी,
भक्ति भाव से ध्यायें तोहे-२, कर दुःखों से पार ।
पवनसुत विनती...

जपत निरंतर नाम तुम्हारा, अब नहीं छोड़ूँ तेरा द्वारा,
राम भक्त मोहे शरण में लीजे-२, कर भव सागर पार ।
पवनसुत विनती...

ॐ अर्हम्

उठे तो बोले राम.....

उठे तो बोले राम, बैठे तो बोले राम
श्री राम भक्त हनुमान, बोलै राम राम राम ।।टेर।।

इनमें राम नाम की शक्ति, इनमें राम नाम की भक्ति।
इनको राम चरण में ध्यान, बोलै राम राम राम।।
उठे तो बोले राम ...।।

इनके नैणा माँही राम, इनके हिरदै माँही राम।
इनके रोम-रोम में राम, बोलै राम राम राम।।
उठे तो बोले राम ...।।

ये राम सिया का प्यारा, अँजनी का लाल दुलारा।
इनका राम चरण में ध्यान, बोलै राम राम राम।।
उठे तो बोले राम ...।।

कोई भक्त नहीं है ऐसा, मेरे बालाजी के जैसा।
गावै दास भगत गुणगान, बोलै राम राम राम।।
उठे तो बोले राम ...।।

दुनिया में देव हजारों हैं

दुनिया में देव हजारों हैं, बजरंग बली क्या कहना।
इनकी शक्ति का क्या कहना, इनकी भक्ति का क्या कहना ।। टेर।।

ये सात समुन्दर लांघ गए, ये गढ़ लंका में कूद गए,
रावण को डराना क्या कहना, लंका को जलाना क्या कहना।।
दुनिया में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना।
इनकी शक्ति का क्या कहना, इनकी भक्ति का क्या कहना ।। टेर।।

जब लक्ष्मण जी बेहोश हुए, संजीवनी बूटी लाने गए,
पर्वत को उठाना क्या कहना, लक्ष्मण को जिलाना क्या कहना ।
दुनिया में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना।
इनकी शक्ति का क्या कहना, इनकी भक्ति का क्या कहना ।। टेर।।

भक्तों इनके सीने में सियाराम की जोड़ी बैठी है,
ये राम दिवाना क्या कहना, गुण गाए जमाना क्या कहना।।
दुनिया में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना।
इनकी शक्ति का क्या कहना, इनकी भक्ति का क्या कहना ।। टेर ।।

ॐ अर्हम्

मंगल मूर्ति राम दुलारे

मंगल मूर्ति राम दुलारे - २, आन पड़े अब तेरे द्वारे-२
हे बजरंगबली हनुमान, हे महावीर, करो कल्याण।।
हे महावीर, करो कल्याण ।।टेर।।

तीनों लोक तेरा उजियारा, दुखियों का तुने ताप उतारा।
हे जगवन्दन केशरी नन्दन, कष्ट हरो हे दया निधान ।
हे महावीर, करो कल्याण ।।टेर।।

तेरे द्वारे जो भी आया, खाली कभी नहीं लौटाया-२
दुर्गम काज बनावन हारे, मंगलमय दीज्यो वरदान ।
हे महावीर, करो कल्याण ।।टेर।।

तेरा सुमिरन हनुमत वीरा, नासै रोग हरे सब पीरा।
राम लखन सीता मन बसिया, शरण पड़े पर दीज्यो ध्यान ।
हे महावीर, करो कल्याण ।।टेर।।

आज मंगलवार है, महावीर का वार

आज मंगलवार है, महावीर का वार है, यह सच्चा दरवार है।
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।।
चैत सुदी पूनम मंगल को जन्म वीर ने पाया है।
लाल लंगोटा गदा हाथ में सिर पर मुकुट सजाया है।।
शंकर का अवतार है, महावीर का वार है।।

ब्रह्मा जी से ब्रह्म ज्ञान का बल भी तुमने पाया है।
राम काज शिवशंकर ने वानर का रुप धराया है।
लीला अपरम्पार है, महावीर का वार है।।

बालापन में महावीर ने हरदम ध्यान लगाया है।
श्राप दिया ऋषियों ने तुमको बल का ध्यान भूलाया है।
राम नाम आधार है, महावीर का वार है।।

राम जन्म जब हुआ अयोध्या में कैसा नाच नचाया है।
कहा राम ने लक्ष्मण से यह वानर मन को भाया है।
लक्ष्मण से प्यार है, महावीर का वार है।।

पंचवटी से सीता को रावण जब लेकर आया है।
लंका में जाकर तुमने माता का पता लगाया है।
अक्षय को दिया मार है, महावीर का वार है।।

अर्हम्

मेघनाद ने ब्रह्मपाश में तुमको आन फंसाया है।
ब्रह्मपाश में फंस करके ब्रह्मा का मान बढ़ाया है।
बजरंगी की बांकी मार है, महावीर का वार है।।

लंका जलाई आपने रावण भी घबराया है।
श्री राम लखन को आन करके सीता संदेश सुनाया है।
सीता शोक अपार है, महावीर का वार है।।

शक्ति बाण लग्यो लक्ष्मण के बूटी लेने धाए हैं।
लाकर बूटी लक्ष्मण जी के तुमने प्राण बचाए हैं।
राम लखन का प्यार है, महावीर का वार है।।

राम चरण में महावीर ने हरदम ध्यान लगाया है।
राम तिलक में महावीर ने सीना फाड़ दिखाया है ।
सीने में राम दरवार है, महावीर का वार है।।

नाम तेरा है बजरंग बाला

नाम तेरा है बजरंग बाला,
कब तेरा दर्शन होगा।
जिसकी रचना इतनी सुन्दर,
वो कितना सुन्दर होगा।
सीताराम-सीताराम बोलिये,
राधेश्याम-राधेश्याम बोलिये॥

जिसने तारे लाखों प्राणी, ये सन्तो की वाणी है।
तेरी छबि पे ओ मेरे बाबा, ये दुनिया दिवानी है।
भक्ति भाव से किर्तन कराऊँ, घर मेरा पावन होगा।
जिसकी रचना इतनी सुन्दर....

सुरनर मुनिजन, जिन चरणों में, निशदिन ध्यान लगाते है।
जो गाते हनुमान की महिमा, वो सब कुछ पा जाते है।
अपना कष्ट मिटाने को प्रभु, चरणों में वन्दन होगा।
जिसकी रचना इतनी सुन्दर....

हनुमान को खुश करना

हनुमान को खुश करना आसान होता है,
सिन्दुर चढ़ाने से हर काम होता है।।टेर।।

करले भजन दिल से हनुमान प्यारे का
जिसको भरोसा हो अंजनी दुलारे का,
वहाँ आनन्द है जहाँ गुणगान होता है।।
हनुमान को....

हनुमान के जैसा न कोई देवता दूजा,
सब से बड़ी जग में हनुमान की पूजा,
वो घर मन्दिर जहाँ इनका सम्मान होता है।।
हनुमान को....

श्री राम के आगे पूरा जोर है इनका,
बनवारी दुनियाँ में शोर है इनका,
जो मुख मोड़े हनुमान से परेशान होता है।।
हनुमान को....

श्री हनुमानचालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लषन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हारो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।
चारो जुग परताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस वर दीन्ह जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई।।

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाई। कृपा करहु गुरु देव की नाई।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मँह डेरा।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

श्री हनुमान जी

यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनम्। तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।।
वाष्पवारि परिपुर्ण लोचनं। मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्।।

श्री दुर्गाजी माता

ॐ सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ते।।

श्री कालीजी माता

ऊँ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

श्री लक्ष्मीजी माता

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

श्री सरस्वतीजी माता

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वंदिता।
सा माम पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा।।

श्री नव दुर्गाजी माता

दुर्गा नामावली स्तोत्र

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्धिनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।।

दुर्गतोद्धरिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्रमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला।।

दुर्गमार्गप्रदा दुर्गबविद्या दुर्गमाश्रिता।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गध्यानभासिनी।।

दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरुपिणी।
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।।

दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।।

नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानः।
पठत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः।।

जगदम्बे थे तो

जगदम्बे थे तो आकर ओढ़ो ए,
थारा सेवक ल्याया माँ तारा री चुनड़ी।।। टेर।।

सुहागण मिल चाव स बाँधी ए,
श्रद्धा के रंग में रंगाई चुनड़ी। ।। 1 ।।

सुरतारो झीणी पोत मंगायो ए,
मनड़े की पेटी में म्हें लाया चुनड़ी। ।। 2 ।।

आशा का तो खुब लगाया ए,
मोती की लूमा लगाई चुनड़ी। ।। 3 ।।

माँ साँचा तारा, साँचो ही गोटो ए,
म्हान प्यारी लागे माँ तारा री चुनड़ी। ।। 4 ।।

चुनड़ का तारा चमचम चमके ए,
म्हारो मनड़ो हर लीन्यो तारा री चुनड़ी। ।। 5 ।।

माँ टाबर गावे चुनड़ उढ़ावे ए,
थे आकर ओढ़ो माँ तारा री चुनड़ी ।। 6 ।।

रख दे सर पे

रख दे सिर पर हाथ मैय्या, तेरा क्या घट जाएगा,
ये बालक भी तर जाएगा,
छोड़ तेरा द्वार मैय्या, और कहां ये जाएगा,
ये बालक भी तर जाएगा।।

दे दिया तुम ने सब को सहारा माँ, जो द्वारे आया है,
भर दिया दामन, सब का खुशी से माँ, जो अर्जी लाया है,
मुझ को देने से, खजाना कम नहीं हो जाएगा ।।1।।

है पुराना माँ, रिस्ता हमारा जो, उसे तुम याद करो,
अहसान कर दो माँ, बालक तुम्हारा हूँ, अब सिर पर हाथ धरो,
प्यार का रिस्ता, हमारा टूटने ना पायेगा ।।2।।

कश्ती हमारी माँ, तेरे हवाले है, हमे तुम पार करो,
गर दे दिया तुमने, इसको सहारा माँ, तो ये विश्वास करो,
ये तेरा दरबार, जय जयकारों से गुंजायेगा ।।3।।

ये जिन्दगानी माँ, लिख दी है, अब हम ने तुम्हारे नाम पे,
हम बेसहारा हैं, भटके कहां कहां, तूँ आ के थाम ले,
"बनवारी" अहसान, भक्त भूलने ना पाएगा ।।4।।

देना हो तो दीजिये

देना हो तो दीजिये, जन्म-जन्म का साथ
मेरे सिर पे रख दो मैया, अपने ये दोनों हाथ।।

इस जन्म में सेवा देकर, बहुत बड़ा अहसान किया,
तूं ही नैया तूं ही खैवैय्या, मैंने तुम्हें पहचान लिया,
मेरा रस्ता रोशन कर दे, छायी अंधियारी रात ।।1।।

झुलस रहे हैं गम की धूप में, प्यार की छैंया कर देना,
बिन पानी के नाव चले ना, अब पतवार पकड़ लेना,
हम साथ रहे कई जन्मों, बस रखना इतनी बात ।।2।।

हमने सुना है शरणागत को, अपने गले लगाती हो,
ऐसा हमने क्या मांगा जो, देने में सकुचाती हो,
चाहे सुख में रख या दुःख में, बस होती रहे मुलाकात।।3।।

मैय्या नवरातों

मैय्या नवरातों में, जब धरती पे आती है,
किस को क्या देना, यह सोच के आती है।।

पहले नवराते में, माँ सब की खबर लेती,
दूजे नवराते में, अपने खाते में लिख लेती,
तीजे नवराते में-२, बात आगे बढ़ाती है ।। 1 ।।

चौथे नवराते में, माँ आसन लगाती है,
पांचवै नवराते में, माँ भोग लगाती है,
छठे नवराते में-२, सब को दर्शन कराती है ।। 2 ।।

सातवें नवराते में, माँ खोलती खजाने है,
आठवें नवराते में, लग जाती लुटाने है,
नवें नवराते तक-२, दोनों हाथों से लुटाती है ।। 3 ।।

दशवें दिन माता की, जब विदाई भी आती है,
सारी धरती के लोगों की, आंखे भर आती है,
'भक्त' फिर आऊंगी-२, वादा करके चली जाती है ।। 4 ।।

मुझे दर्शन दे गयी माँ

मुझे दर्शन दे गयी माँ, कल रात सोते सोते
फिर बीती रात मेरी, माँ से बात होते होते॥

मुझे याद है अभी भी, वह रात का नजारा,
माँ सामने खड़ी थी-२, आभास होते होते।।1।।

जैसी सामने ये मूरत, वैसी ही मैंने देखी,
मैं तो चरणों में पड़ा था-२, यूं निहाल होते होते।।2।।

वो गिले वो सारे शिकवे, जो जरा मैं माँ से कहता,
सब भूलते ही जाये-२, मुझे याद होते होते।।3।।

मुझे गोद में बिठाया, और प्यार से माँ बोली,
क्यों तू अब भी रो रहा है, मेरे पास होते होते।।4।।

जिसे जिन्दगी में चाहा, और दिल से मैंने पूजा,
वो झलक दिखा गयी थी-२, सुप्रभात होते होते।।5।।

माता जिनको याद करे

माता जिनको याद करे, वो लोग निराले होते हैं।
माता जिनका नाम पुकारे, किस्मत वाले होते हैं।।

चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है।
ऊँचे पर्वत पे रानी माँ ने दरबार लगाया है।

वैष्णव देवी के मन्दिर में लोग मुरादें पाते हैं।
रोते-रोते आते है, हँसते-हँसते जाते हैं-2
होऽऽऽ मैं भी माँग के देखूँ जिसने जो माँगा वही पाया है।।
चलो बुलावा आया है...।।1।।

सारे जग में एक ठिकाना, सारे गम के मारों का-2
रस्ता देख रही है माता अपनी आँख के तारों का-2
होऽऽऽ मस्त हवाओं का एक झोंका ये संदेशा लाया है।।
चलो बुलावा आया है...।।2।।

प्रेम से बोलो, जय माता दी, सारे बोलो, जय माता दी,
अरे जय माता दी कहते जाओ, आने जाने वालों को,
चलते जाओ तुम मत देखो, अपने पाँव के छालों को,
होऽऽऽ जिसने जितना दर्द सहा वो उतना चैन भी पाया है।।
चलो बुलावा आया है...।।3।।

जगदम्बे भवानी मैय्या

जगदम्बे भवानी मैय्या, तेरा त्रिभुवन में छाया राज है,
सोहे वेष कसुमल नीको, तेरे रत्नों का सिर पे ताज है।।

जब जब पीड़ पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे,
अधम उद्धारण तारण मैय्या, युग युग रूप अनेक धरे,
सिद्ध करती तूँ भक्तों के काज है, नाम तेरो गरीब निवाज है।।1।।

जल पर थल और थल पर सृष्टि, अद्‌भुत थारी माया है,
सुर, नर, मुनि जन ध्यान धरै नित, पार नहीं कोई पाया है,
थारै हाथों में सेवक की लाज है, लियो शरणों तिहारो मैय्या आज है।।2।।

जरा सामने तो आओ मैय्या, छुप छुप छलने में क्या बात है ?
यूं छुप ना सकोगी मेरी मैय्या, मेरी आत्मा की ये आवाज है।।
मैं तुम को बुलाऊं, तुम नहीं आवो, ऐसा कभी ना हो सकता,
बालक अपनी मैय्या से बिछुड़कर, सुख से कभी ना सो सकता,
मेरी नैय्या पड़ी मझधार है, अब तूँ ही तो खेवनहार है,
आजा रो रो पुकारे मेरी आत्मा, मेरी आत्मा की ये आवाज है।।3।।

ॐ अर्हम्

जगदम्बे माँ भवानी एक बार

जगदम्बे माँ भवानी एक बार तो आ जाओ।
इतना न तरसाओ......................॥

(1)

सुनता हूँ मैया तेरी महिमा बड़ी निराली...............2
जिसने तुझे मनाया, उसकी ही विपदा टाली।
हो हो ....
क्या भूल है हमारी, मैया हमें बताओ
एकबार आ जाओ................

(2)

तेरे दरश की प्यासी, अँखियाँ हुई दीवानी
रोका है कितना फिर भी, रूकता नहीं है पानी
हो हो ....
धीरज न टूट जाये, इतना ना माँ सताओ
एकबार आ जाओ................

(3)

मानो या तुम ना मानो, यह मर्जी है तुम्हारी
आन पड़ेगा मैया, गर माता हो हमारी
हो हो
भक्त कहे ओ मैया, भक्तो को ना भुलावो
एकबार आ जाओ................

मेंहदी ओ मेंहदी इतना बता दे

मेंहदी ओ मेहंदी इतना बता दे,
कौन सा काम किया है।
मैया ने खुश होकर तुमको,
हाथों में थाम लिया है।

मेंहदी बोलना, मेंहदी बोलोना, मेंहदी बोलो-ना।।
तेरी किस्मत सबसे बड़ी है, मैया ने अपनाया।
मैया तुमसे प्यार करें क्यूं कोई जान न पाया।
मैया की कृपा होने से, दुनिया में नाम किया है।
मैया ने खुश होकर.........

लाल चुनड़ी लाल ही चूड़ा, लाल रोली का टीका।
एक दिन मैने देखा, माँ का हाथ है फीका फीका।
इन फीके फीके हाथो को, मैने लाल किया है।
मैया ने खुश होकर.........

सब को अपनाया मेरी मैया, मुझको भी अपनाले।
मुझको अपना लाल समझकर, अपने गले लगाले।
मेंहदी का ये भेद अनोखा, मैने जान लिया है।।
मैया ने खुश होकर.........

ॐ अर्हम्

मेरे घर के आगे माँ

मेरे घर के आगे माँ, तेरा मंदिर बन जाए,
जब खिड़की खोलूँ तो तेरा दर्शन हो जाए।।

जब आरती हो तेरी, घंटी सुनायी दे,
मुझे रोज सवेरे माँ, मूरत दिखायी दे,
जब भजन करे कोई, मुझ को भी सुन जाए।।

आते जाते मैय्या, तुम को प्रणाम करूं,
जो मेरे लायक हो, वो तेरा काम करूं,
तेरी सेवा करने से, मेरी किस्मत खुल जाए।।

नजदीक रहेंगे तो, आना जाना होगा,
माँ बेटा का मैय्या, मिलना-जुलना होगा,
'बनवारी' पास रहें, जल्दही वो दिन आए।।

मेरा आप की कृपा से

मेरा आप की कृपा से, हर काम हो रहा है-२
करती हो तुम मैय्या, मेरा नाम हो रहा है॥

मेरी जिन्देगी में तूँ है,
मेरे पास क्या कमी है,
मुझे और अब किसी की,
दरकार भी नहीं है,
मुझे ये भी पता नहीं है,
ये क्या हो रहा है ॥१॥

करता नहीं मैं फिर भी,
हर काम हो रहा है,
माता तेरी बदौलत,
आराम हो रहा है,
बस होता रहे हमेशा,
जो कुछ भी हो रहा है॥२॥

पतवार के बिना ही,
मेरी नाव चल रही है,
"बनवारी" बिना ही मांगे,
हर चीज मिल रही है,
मर्जी है तेरी मैय्या,
अच्छा ही हो रहा है ॥३॥

ॐ अर्हम्

ऐ माँ मुझको ऐसा घर दो

ऐ माँ मुझको ऐसा घर दो, जिसमें तुम्हारा मन्दिर हो,
ज्योत जले दिन रैन तुम्हारी, तुम मन्दिर के अन्दर हो।।

एक कमरा हो जिसमें तुम्हारा
आसन मैय्या सजा रहे,
हर पल हर क्षण भक्तो का
जहां आना जाना लगा रहे,
छोटे बड़े का उस घर में माँ
एक समान ही आदर हो।।

उस घर से कोई भी सवाली,
खाली कभी भी जाए ना,
चैन ना पाऊं तब तक मैय्या,
जब तक चैन वो पाए ना,
मुझे दो वरदान दया का,
तुम तो दया की सागर हो।।

हर प्राणी उस घर का मैय्या,
तेरी महिमा गाता रहे,
तूँ रखे जिस हाल में माता,
हर पल शुक्र मनाता रहे,
कभी ना हिम्मत हारे वो तो,
चाहे समय भयंकर हो।।

जब कोई नही आता

जब कोई नही आता, मेरी मात आती है।
मेरे दुःख के दिनो में माँ,
बड़ी काम आती है ।।टेर।।

मेरी नाव चलती है, पतवार नही होती।
किसी और की अब मुझको दरकार नहीं होती।
मैं डरता नहीं राहें, सुन सान आती है ।।
मेरे दुःख के...।।1।।

कोई याद करे इसको, ये उसकी हो जाए।
कोई प्रेम करे इससे, दुःख हल्का हो जाए।
ये बिन बोले दुःख को, पहचान जाती है।।
मेरे दुःख के...।।2।।

ये इतनी बड़ी होकर दीनों से प्यार करे।
चाहे छोटे हो या बड़े, सबको स्वीकार करे।
भक्तों का कहना, माँ मान जाती है।।
मेरे दुःख के...।।3।।

मेहंदी रची थारे हाथां में

मेहन्दी रची थारे हाथां में, घुल रह्यो काजल आंख्या में।
चूनड़ी को रंग सुरंग, माँ राणी सती, माँ राणी सती।।
फूल खिल्या जाण बागां में चांद उग्यो वो रातां में।
थारो इसो सुहाणो रूप, माँ राणी सती, माँ राणी सती।।

रुप सुहाणो जद सूँ देख्यो, नींदड़ली नहीं आख्या में।
मेरे मन में जादू कर दियो, थारी मीठी बाताँ ने।।
भूल गयी सब कामां न, याद करुं थारे नामा ने।
माया को छूट्यो फन्द, माँ राणी सती, माँ राणी सती।।

थे कहो तो दादी थारी, नथली बण जाऊँ मैं।
नथली बण जाऊँ थारे होठां से लग जाऊँ मैं।।
चूड़ो बण थारे हाथाँ में बोर बणूँ थारे माथा मैं।
बस जाऊँ बाजूबन्द, माँ राणी सती, माँ राणी सती।।

थे कहो तो दादी थारी पायलड़ी बन जाऊँ मैं।
पायलड़ी बण ज्याऊँ मैं थारे चरणां में रम जाऊँ मैं।।
हार बणूँ थारे गल मांय, मोती बण जाऊँ झूमके माँय।
नैणा में करल्यू बन्द, माँ राणी सती, माँ राणी सती।।

आओ भक्तों तुम्हें

आओ भक्तों तुम्हें बताऊँ महिमा राजस्थान की,
उस मिट्टी को नमन करो, वह धरती देवस्थान की,
जय जय राजस्थान... प्यारा राजस्थान...॥

रणथम्भोर में श्री गजानन, देवों के सिरमोर हैं,
पुष्कर में ब्रह्मा का मंदिर, महिमा चारों ओर है,
उदयपुर में एकलिंगजी, दर्शक भाव विभोर हैं,
मेवाड़ी मीरां की भक्ति, कृष्ण प्रेम की बानगी ॥1॥

ओसियां जाकर माँ सच्चियाय को, जिसने शीष झुकाया है,
भक्ति से शक्ति मिल जाती, खाली नहीं लौटाया है,
मोरखाणा सुसवाणी माता, अदभुत उनकी माया है,
भक्त काम हित दौड़ी आवै, देवी वो भुंवाल की ॥2॥

सालासर दरबार निराला, रामभक्त वहाँ रहते हैं,
तोलियासर के भैरूं बाबा, सब के संकट हरते हैं,
नाथद्वारा श्रीनाथजी, सबको दर्शन देते है,
जयपुर की आमेर भवानी, खाटू नगरी श्याम की ॥3॥

रूणीचै रा रामदेवजी, लीले रा असवार है,
चुरू वाले बाबोसा की, महिमा अपरंपार है,
झुंझुनुं में है राणीसतीजी, समझो नैय्या पार है,
करणी माता देशनोक में, देवी है संसार की ॥4॥

रणकपुर में भव्य मूर्ति है, पार्श्वनाथ भगवान की,
आबू पर्वत छटा निराली, महावीर भगवान की,
सिरियारी में करो वंदना, श्री भिक्षु के नाम की,
"विमल" समाधि गंगाशहर में, गुरूवर तुलसीराम की ॥5॥

अर्हम्

झिलमिल-झिलमिल चूनड़ी में तारा चमके

झिलमिल-झिलमिल चूनड़ी में तारा चमकै ।
आज्या ए भवानी, तेरा सेवक तरसै ।।
सेवक तरसै, ऐ मैया बालक तरसै ।
आज्या ए भवानी, तेरा सेवक तरसै ।।

लाल सुरंगी मेहंदी थारै, हथैल्यां राचै लाल।
धाम है तेरो झुंझनू मैया, मन्दिर बण्यो विशाल।
सिंह पर बैठ्या माता जी ने, सेवक निरखै। । आज्या ए भवानी ...

हाथां सोवै लाल चुड़ो मां, गल बीच नौलखहार।
लाल कसूमल कबजो सोहे, लम्पी की बहार।
काना मांहीं झुमका मां, मोती चमकै।। आज्या ए भवानी ...

माथे सोहे बोरलो नैणा काजलिया री रेख।
पलकां तो उघाड़ो मैया, टाबरियां नै देख।
कद सैं खड्या पुकारां, थारा सेवक बिलखै।। आज्या ए भवानी ...

पग पैंजनियां कमर तागड़ी, सिर पर चंवर ढुलै।
जगमग थारी ज्योति जगै मां, छप्पन भोग लगै।
देख-देख थारो रुप सुहाणो, मनड़ो हरषै।। आज्या ए भवानी ...

लाल ध्वजा फहरे मन्दिर पे, नौबत बाजै द्वार।
रतन सिंहासन बैठी म्हारी, तीन-लोक सरकार।
सेवक करे गुणगान, गगन से अमृत बरसै।। आज्या ए भवानी ...

ये सुन्दर श्रृंगार सुहाना लगता है

ये सुन्दर श्रृंगार सुहाना लगता है,
भक्तों का तो दिल दिवाना लगता है,
ज्यादा मत देखो नजर लग जायेगी,
कीर्तन की यह रात दुबारा आयेगी ।।

खुशबूदार फूलों से, बनाया हार तेरा है,
बड़ा न्यारा, सजा दरबार तेरा है,
माँ तेरा, परिवार सुहाना लगता है।।1।।

सजी चुनड़ी में मैय्याजी, तेरा तो रूप निराला है,
तुझे जिसने सजाया वो, बड़ा तकदीर वाला है,
ये तेरा, अन्दाज पुराना लगता है।।2।।

अगर मैं धूल होता तो, तेरे चरणों से लग जाता,
भक्ति का उपहार सुहाना लगता है।।3।।

तेरे दरबार में आकर, बड़ा आराम मिलता है,
तेरे चरणों में मैय्या जी, बड़ा सम्मान मिलता है,
भक्तों के, दिल पे निशाना लगता है।।4।।

ॐ अर्हम्

साच्चा है दरबार शेरां

सच्चा है दरबार शेरां वाली दा
बण जा सेवादार तूं शेरां वाली दा, भगता बण जा...

मां बख्श रही भण्डारे है बैठी गुफा के अन्दर
ना महिमा वरणी जाए ऐसा है सुन्दर मन्दिर
मेहरां वाली दा, बण जा सेवादार शेरां वाली...

है जगदम्बे महारानी-बख्शे कई अवगुण हमारे
मां रूप निराला गावे और पापी दुष्ट संहारे
रूप धरा काली दा, बणजा सेवादार शेरां बाली...

दखियों के दुख यह हरती, जो आके सर को झुकावे
निश्चय है जिनके मन में, यह द्वार वही तो पावें
भवनों वाली दा "बनजा सेवादार" शेरां वाली....

इस महामाया की माया - कोई भी समझ न पाया
कोई माने या ना माने निर्बल ने भेद को पाया।
कथा निराली दा, बणजा सेवादार शेरां वाली...

श्री राधाकृष्णजी

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षस्थले कौस्तुभम नासाग्रे
बर मोक्तिकम कर तले वेणु करे कंकनं सर्वागें
हरि चंदन सु ललितं कंठे च मुक्तावली गोपस्त्री
परिवेष्टी तो बिज्यते गोपाल चुरामणी

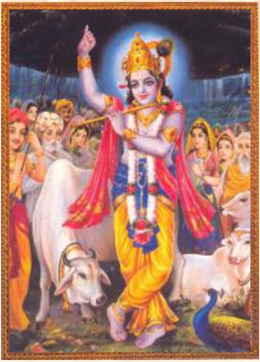

श्री गोवर्धनजी महाराज

वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरूम्
मूकं करोति वाचालं पंगु लंघयते गिरिम्।
यत्कृपातमहंवन्दे परमानन्द माधवम्।

गोविन्द जय-जय

गोविन्द जय-जय गोपाल जय जय,
राधा रमण हरि गोविन्द जय जय ॥ टेर॥

ब्रह्मा की जय जय, विष्णु की जय जय,
उमा पति शिवशंकर की जय जय।।1।।

राधा की जय जय, रुक्मणि की जय जय।
मोर मुकुट बंसी वाले की जय जय।।2।।

गंगा की जय जय, यमुना की जय जय।
सरस्वती, त्रिवेणी की जय जय।।3।।

राम की जय जय, श्याम की जय जय।
दशरथ कुमार चारों भैया की जय जय।।4।।

कृष्ण की जय जय, लक्ष्मी की जय जय।
कृष्ण-बलदेव दोनों भाइयों की जय जय।।5।।

ॐ अर्हम्

अच्युतं केशवं

अच्युतं केशवं कृष्ण दामोदरं
लक्ष्मी नारायणं जानकी बल्लभं

कौन कहते हैं भगवान आते नहीं-२
तुम मीरा के जैसे बुलाते नहीं
अच्युतं केशवं ....

कौन कहते हैं भगवान सोते नहीं-2
माँ जशोदा के जैसे सुलाते नहीं
अच्युतं केशवं ....

कौन कहते हैं भगवान नाचते नहीं-2
गोपियों की तरह तुम नचाते नहीं
अच्युतं केशवं ....

कौन कहते है भगवान खाते नहीं-2
बैर सबरी की तरह तुम खिलाते नहीं
अच्युतं केशवं ....

कौन कहते हैं गुरुजी आते नहीं
तुम दिल से उनको बुलाते नहीं
तुम प्रेम से उनको बुलाते नहीं
अच्युतं केशवं ....

छोटी छोटी गैय्या

छोटी छोटी गैय्या, छोटे छोटे ग्वाल,
छोटो सो-२ मेरो, मदन गोपाल॥

आगे आगे गैय्या, पीछे पीछे ग्वाल,
बीच में मेरो, मदन गोपाल...॥

घास खावै गैय्या, दूध पीवे ग्वाल,
माखन खावे मेरो, मदन गोपाल...॥

काली काली गैय्या, गोरे गोरे ग्वाल
श्याम वर्ण मेरो, मदन गोपाल...॥

छोटी छोटी लखूटी, छोटे छोटे हाथ,
बंसी बजावै मेरो, मदन गोपाल...॥

छोटी छोटी सखियां, मधुवन बाग,
रास रचावै मेरो, मदन गोपाल...॥

थाली भरकर ल्याई

थाली भरकर ल्याई खीचड़ो, ऊपर घी की बाटकी,
जीमो म्हारा श्याम धणी, जीमावै बेटी जाट की।।

बाबो म्हारो गावं गयो है, ना जाणै कद आवैलो,
बां के भरोसे बैठ्यो सांवरा, भूखो ही रह ज्यावैलो,
आज जीमाऊं तनै खीचड़ो, काल राबड़ी छाछ की।।

बार बार मंदिर नै जड़ती बार बार मैं खोलती,
कंईयां कोनी जीमो रे मोहन, करड़ी करड़ी बोलती,
तूँ जीमै जद मैं जीमूंली, मांनू ना कोई लाट की।।

परदो भूल गई सांवरिया, परदो फेर लगायो जी,
घाबलिये की ओट बैठकर, श्याम खीचड़ो खायो जी,
भोला भगतां स्यूं सांवरिया, कंईया है कोई आंट की।।

भक्ति हो तो करमां जैसी, सांवरियो घर आवै लो,
"भक्त", प्रभु रा, हरख हरख गुण गावै लो
सांचो प्रेम प्रभु स्यूं हूं तो, मूरत बोलै काठ की।।

जाने वाले एक

जाने वाले एक सन्देशा, श्याम प्रभु से कह देना।।
एक दीवाना याद में रोये, उसको दर्शन दे देना।।

जिनको बाबा श्याम बुलाये, किस्मत वाले होते है,
जो बाबा से मिल नहीं पाते, छुप-छुप करके रोते है,
जितनी परीक्षा ली है मेरी, और किसी की ना लेना।।

तूँने कौन सा काम किया है, दर पे तुझे बुलाया है,
मैंने कौन सा पाप किया है, दिल से मुझे भुलाया है,
एक बार मुझको दर पे बुलाले, इतनी कृपा कर देना।।

मुझको ये विश्वास है दिल में, मेरा बुलावा आयेगा,
शीश का दानी दर्शन देकर, मुझको गले लगायेगा,
उसको जाकर इतना कहना, मेरा भरोसा टूटे ना ।।

कैसा लगता है मेरा बाबा, मुझको जरा बताओ तो,
क्या-क्या लीला करता है वो, मुझको जरा सुनाओ तो,
'बनवारी' भक्तों की दुहाई मेरी तरफ से दे देना ।।

आओ कन्हैया आओ मुरारी

आओ कन्हैया आओ मुरारी।
तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी ।।टेर।।

क्या मैं बताऊं, क्या मैं सुनाऊं,
एक दुःख नहीं जो मैं मन में छूपाऊँ ।
घट घट की जानत हो, तुम तो मुरारी।।1।।

नैनों में आंसू उठे न कदम है,
फटे हुए कपड़े हैं, तुम्हें सब खबर है ।
आकर के देखो, दशा तुम हमारी ।।2।।

आवाज मेरी पहुंची नहीं क्या,
दरबान ने तुमको खबर ही न दी क्या ।
क्यो नींद में तुम, सोये मुरारी ।।3।।

क्या मुझसे दोष हुआ, हुआ क्या गुनाह है,
दीनों के नाथ तू क्यूं निष्ठुर बना है ।
पाप किया क्या मैंने, इतना है भारी ।।4।।

आओ कन्हैया छुटे अब तो दम है,
अगर अब ना आये तुझको माँ की कसम है,
माँ की कसम सुनकर, पहुंचे मुरारी ।।5।।

नींद भी आयेगी

नींद भी आयेगी, चैन भी आयेगा,
दिल में अगर विश्वास है पक्का श्याम भी आयेगा,
ये विश्वास का धागा श्याम को, खींच के लायेगा ॥
नींद भी आयेगी............॥

ये विश्वास वो ताकत है जो पत्थर को पुजवाये,
ये टुटे तो हो जाते हैं, खून के रिश्ते पराये,
लेकिन हर हालत में रिश्ता, श्याम निभायेगा।।
नींद भी आयेगी............।।

इस विश्वास के बल पे नरसी, भात भरण को चाले,
इस विश्वास ने ध्रुव प्रहलाद के, संकट पल में टाले,
एक भरोसा श्याम का जिसको, वो सुख पायेगा ।।
नींद भी आयेगी............।।

दुनियाँ की नजरों के आगे, सूरज कभी ना रोना,
हो चाहे जितनी तकलीफें, ये विश्वास ना खोना,
मिनख मंजूरी दे तो सांवरा, क्यूं रख पायेगा ।।
नींद भी आयेगी............।।

जय श्री श्याम

राधे-राधे रटो

राधे-राधे रटो, चले आर्येंगे बिहारी।
आर्येंगे बिहारी चले आर्येंगे बिहारी।

राधे मेरी चन्दा चकोर है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी तन है तो प्राण है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी गंगा तो धार है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी मीसरी तो स्वाद है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी सागर तो तरंग है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी गोरी तो साँवले है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी नथनी तो कंगन है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी भोली-भाली तो चंचल है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी मोहनी तो मोहन है बिहारी (राधे....)
राधे मेरी मुरली तो तान है बिहारी (राधे....)

अरदास हमारी है

अरदास हमारी है, आधार तुम्हारा है।
स्वीकार करो बाबा, प्रणाम हमारा है।।

नैनों में रमे हो तुम, मेरे दिल में बसे हो तुम,
एक पल भी ना बिसराऊँ, इस तन में रमे हो तुम।
मत मुझसे बिछड़ जाना, ये दास तुम्हारा है।।
स्वीकार...

बिन सेवा लिये तेरी, मुझे चैन न आता है,
बिन ज्योत लिये तेरी, मेरा मन धड़काता है।
होठें पे रहे बाबा, नित नाम तुम्हारा है।।
स्वीकार...

मेरी जीवन नैया को, तेरा ही सहारा है,
तुम मात पिता मेरे और सतगुरु प्यारा है।
नैया का खेवैया तू, श्री श्याम हमारा है।।
स्वीकार...

अरजी स्वीकार करो, भवसागर पार करो,
सिर हाथ फिरा करके, मेरा उद्धार करो।
गिरते को उठाना तो, प्रभु काम तुम्हारा है।।
अरदास हमारी है...

मैया मोरी मैं

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।

भोर भयो गैयन के पाछे,
मधुवन मोहि पठायो।
चार पहर बंशीवन भटक्यो,
साँझ परे घर आयो।।1।।

मैं बालक बहियन को छोटो,
छींको किहि बिधि पायो।
ग्वाल-बाल सब बैर परे है,
बरबस मुख लपटायो।।2।।

तू जननी मन की अति भोरी,
इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजिहै,
जानि परायो जायो।।3।।

यह लै अपनी लकूटि कमरिया,
बहुतहि नाच नचायो।
'सूरदास' तब बिहँसि यशोदा,
ले उर-कंठ लगायो।।4।।

यशोमति मैया से

यशोमति मैया से, बोले नन्दलाला,
राधा क्यूं गोरी, मैं क्यूं काला ॥टेर॥

बोली मुस्काती मैया, ललन को बताया,
काली अंधियारी आधी, रात में तू आया।
लाडला कन्हैया मेरा होऽऽऽऽ
लाडला कन्हैया मेरा, काली कमली वाला, इसीलिए काला।।
यशोमति मैया से...

बोली मुस्काती मैया, सुन मेरे प्यारे,
गोरी-गोरी राधिका के नैन कजरारे।
काले नैनों वाली ने होऽऽऽ,
काले नैनों वाली ने, ऐसा जादू डाला, इसीलिए काला।।
यशोमति मैया से...

इतने में राधा-प्यारी आई इठलाती,
मैंने ना जादू डाला, बोली बलखाती।
लाडला कन्हैया तेरा होऽऽऽ,
लाडला कन्हैया तेरा, जग से निराला, इसीलिए काला।।
यशोमति मैया से...

ॐ अर्हम्

मेरा छोटा सा संसार

मेरा छोटा सा संसार हरि आ जाओ इक बार।
मेरा छोटा सा परिवार हरि आ जाओ इक बार।
मेरे प्राणों के आधार हरि आ जाओ इक बार।
हरि आ जाओं, हरि आ जाओ।।टेर।।
यह जग इक गहरा सागर है, सिर धरी पाप की गागर है।
कुछ हल्का कर दो भार।।
हरि आ जाओ...

जोगी का भेष बना करके, इस तन पे भस्म लगा करके।
मैं अलख जगाऊं तेरे द्वार।।
हरि आ जाओ...

मैं तेरा हूं, तू मेरा है, मैं तो जन्म-जन्म से तेरा हूं।
मैं तुझमें हूं तू मुझमें है, मेरी विनती है बारम्बार।
घनश्याम मुरारी मधुसूदन।।
हरि आ जाओ...

आ जाओ मेरे प्यारे मनमोहन।
यह दास करे पुकार।। हरि आ जाओ...

ऐसी लागी लगन

ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन,
वो तो गली-गली, हरी गुन गाने लगी
ऐसी लागी....

महलों में पली, बन के जोगन चली,
मीरा रानी दिवानी कहाने लगी
ऐसी लागी....

कोई रोके नहीं, कोई टोके नहीं,
कोई रोके नहीं कोई टोके नहीं,
मीरा गोविन्द, गोपाल गाने लगी।।
ऐसी लागी....

बैठी सन्तों के संग, रंगी मोहन के रंग,
मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी।
वो तो गली-गली हरी गुन गाने लगी।।
ऐसी लागी....

राणा ने विष दिया मानो अमृत दिया,
मीरा सागर में सरिता समाने लगी।।
ऐसी लागी....

दुख लाखों सहे, मुख से गोविन्द कहे,
मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी।
वो तो गली-गली हरी गुन गाने लगी।।
ऐसी लागी....

श्याम तेरी मुरली

श्याम तेरी मुरली बजे धीरे धीरे-2
बजे धीरे धीरे बजे होले होले।। श्याम।।

मुरली की धुन सुन देखो राधा रानी,
सखियों के संग नाचे जमुना के तीरे ।।1।।

ग्वाल बाल धुन सुन मुरली की,
झूम के बजायें ढ़ोलक मंजीरे ।।2।।

लूट सको तो लूट लो मस्ती,
भर भर प्याला प्यारे, श्याम रस पी रे ।।3।।

श्याम नाम धन भर लो खजाना,
लुटो रे लुटाऊँ श्याम नाम जी के हीरे ।।4।।

सुन मुरली की धुन नाचै मीराबाई,
'श्याम सुन्दर' हित दुनिया तजी रे ।।5।।

जो मैं होता साँवरे

जो मैं होता साँवरे मोर तेरे बागों का।
उड़कर तेरे द्वारे आता, पंखों का मैं छत्तर बनाता।
तुझको नाच के दिखाता, अपने श्याम को रिझाता।
ओ तेरेऽऽऽऽ, तेरे रज-रज दर्शन पाता, ओ दाता जो मैं....

जो मैं होता साँवरे, नीर तेरी जमुना का।
तेरा पक्षालन करवाता, तेरे चरणों को नहलाता।
तेरा चरणामृत बन जाता, भक्तों के मैं कष्ट कटाता।
ओ तेरीऽऽऽऽ, तेरी सखियों के मन भाता, ओ दाता जो मैं....

जो मैं होता साँवरे, फूल तेरी बगिया का।
तेरी माला में गुँथ जाता, तेरी महक से मैं मुस्काता।
तेरा मैं श्रृंगार सजाता, तेरे चरणों में चढ़ जाता।
ओ तेरीऽऽऽऽ, तेरी खुशबु खूब लुटाता, ओ दाता जो मैं....

जो मैं होता साँवरे, धूल तेरी खाटू का।
तेरे चरणों की रज पाता, जो भी द्वार तिहारे आता।
उनको तेरा पथ दिखलाता, धरती धोरांरी बन जाता।
मेरेऽऽऽऽ, मेरे श्याम का सौरभ लूटाता, ओ दाता जो मैं....

जो मैं होता साँवरे पत्थर तेरे मन्दिर का।
तेरी सेवा तो कर पाता, अपने कर्मों पर इतराता।
तेरी देहली मैं बन जाता, चाहे पत्थर ही हो जाता।
ओ तेराऽऽऽऽ, तेरा अनुपम भवन बनाता, ओ दाता जो मैं....

मुरली जोर की बजाई

मुरली जोर की बजाई रे, नन्द लाला।
नन्द लाला रे भया गोपाला॥

मुरली की आवाज मैं तो, बागां में सुणी थी।
फुलड़ा तोड़ती भाग्याई रे, नन्दलाला ।।1।।

मुरली की आवाज मैं तो, पनघट पर सुनी थी।
मटकी कुआ पटक्याई रे, नन्दलाला ।।2।।

मुरली की आवाज मैं तो, चोका मैं सुनी थी।
फल्को बेलती छोड्याई रे, नन्दलाला ।।3।।

मुरली की आवाज मैं तो, महला में सुनी थी।
ललवो रोवतो छोड़याई रे, नन्दलाला ।।4।।

मुरली की आवाज मैं तो, सेजां में सुनी थी।
परण्यो उघंतो छोड्याई रे, नन्दलाला ।।5।।

मुरली की आवाज मैं तो, बाड़े में सुनी थी।
बछड़ो चुंगतो छोड्याई रे, नन्दलाला ।।6।।

मुरली की आवाज मैं तो, कीर्तन में सुनी थी।
घूमर घालती भाग्याई रे, नन्दलाला ।।7।।

मुरली की आवाज मैं तो, चन्द्रसखी ने सुनी थी।
चितड़ों चरणां में ले आई रे, नन्दलाला
सब कुछ छोड़ भाग्याई रे नन्दलाला ।।8।।

इतना तो करना स्वामी

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले,
गोविन्द नाम लेकर, मेरे प्राण तन से निकले।

श्री गंगाजी का तट हो, यमुना का बंशीवट हो,
मेरा सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले।
श्री बृन्दावन स्थल हो, मुखड़े में तुलसी दल हो,
मेरा सांवरा खड़ा हो, बंसी का स्वर भरा हो,
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले।
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पे काली कट हो,
वह ध्यान मेरा झट हो, जब प्राण तन से निकले।
उस वक्त जल्दी आना, नहीं श्याम भूल जाना,
राधे को साथ लाना, जब प्राण तन से निकले।
मेरे प्राण निकले सुख से तेरा नाम निकले मुख से,
बच जाऊं घोर दुख से, जब प्राण तन से निकले।
जब कष्ट प्राण आवे, कोई रोग न सतावे,
यम दर्श न दिखावे, जब प्राण तन से निकले
पीताम्बरी कसी हो, छवि मन में ये बसी हो,
होंठों पे कुछ हंसी हो, जब प्राण तन से निकले।
इस भक्त की है अर्जी, खुदगर्ज की है गर्जी,
आगे तुम्हारी मर्जी, जब प्राण तन से निकले।
इक नेक सी अरज है, मानो तो क्या हरज है,
कुछ आपका फरज है, जब प्राण तन से निकले।

ॐ अर्हम्

अरे द्वारपालो

अरे द्वारपालो, हरी से ये कह दो,
गरीब सुदामा दर पे है आया,

अरे द्वारपलो, हरी से ये कह दो
गरीब सुदामा दर पे है आया,
तन पे है कपड़े, मैले कुचैले,
नंगे है पांव, मिलने है आया। अरे द्वारपलो.....

हरी ने सुना जब, मेरे है द्वारे,
मित्र सुदामा मिलने है आया,
झटपट उठे वो, दौड़े हैं आए,
और सुदामा को गले से लगाया। अरे द्वारपलो.....

गले से लगाकर, सुबक के हैं रोए
और सुदामा भी रोने लगे थे,
आसुओं की ऐसी झड़ी है लगी थी,
कि सारे के सारे रोने लगे थे। अरे द्वारपलो.....

महल में ले जाकर, चरण उनके धोए,
चरण उनके धो के कपड़े पहनाए
बदल डाला देखो, पल में हैं जीवन
हरी की है माया, अजब निराली। अरे द्वारपलो.....

हरी ने कहा जब, सुदामा है मेरा,
ना भूलूंगा इसको सुदामा है मेरा,
लौट के आए, जब ओ सुदामा,
ना झोंपड़ी वहां थी, ना गन्दी वो बस्ती।अरे द्वारपलो.....

जरा क गाड़ी डाट भगत

जरा क गाड़ी डाट भगत म्हानै, जाणो नगर अन्जार,
बात मेरी मान ले।
सुस्या बोल्या टूटी गाड़ी बूढ़ा बैलबीमार
भगत म्हारी मान ले ।।टेर।।

ज्ञानदास यूँ कहण लाग्यो, म्हारै सागै के करसी।
गाड़ी मांही भीड़ घणी, तेरा तूमड़ा किस धरसी।
तुम्बा पड़सी टूट्या सरसी, म्हारै इकतारै को तार ।। 1 ।।

कारीगर सब कामां को, किसनो मेरो नाम है,
भगतां की सेवा करणी, यो ही मेरो काम है,
बलदां की बिमारी मेटूं, गाड़ी देऊँ सुधार ।। 2 ।।

ध्यानदास जद यूँ बोल्यो, किसी यो गाड़ी ठीक करै,
मिसल बिठावे बैठण की, ई बिना के कोनी सरै,
नरसीजी थे गाड़ी हांको, मतना करो ऊंवार।।3 ।।

किसनों बोल्यो भगतों थाने, चोखा भजन सुणाऊँगा,
थे सगला आराम करो, पगल्या थारा दबाऊँगा।
थारे सागै मनै भी मिलसी, चोखी जीमणवार।।4 ।।

मान दास जद यूँ बोल्यो, यो तो कोई ठगोरो है।
बाता मं यो भुला रियो, बड़ों ही चालू छोरो है।
सगला रियो सम्भल कै नहीं, य करसी तूमड़ा पार।।5 ।।

तेरी मोर छड़ी के आगे

तेरे मोर छड़ी के आगे, तेरी मोर छड़ी के आगे।
झुक गये बड़े-बड़े सरदार, तेरी मोड़ छड़ी के आगे॥

तेरे आगे मान दिखाये,
चाहे कोई अकड़ दिखाये,
टूटा अहंकार हर बार ।।तेरी।।

राजा को रंक बनाये,
नौकर भी सेठ कहाये,
झुक गये लाखों साहूकार ।।तेरी।।

चाहे कोई घात लगाये,
चाहे प्रतिघात लगायें,
कट गई बड़ी-बड़ी तलवार ।।तेरी।।

'सूरज' तेरी महिमा गाये,
चरणों में शीश झुकाये,
झुक गया कलयुग में संसार ।।तेरी।।

मोर छड़ी लहराई रे

मोर छड़ी लहराई रे SSSS रसिया ओ सांवरा,
तेरी बहुत बड़ी सकलाइ रे, ओ SSSS ॥टेर॥

मोर छड़ी का जादू निराला, इसको थामे है खादू वाला।
लीले चढ़के दौड़ा ये आये SSSS-2,
सारे संकट पल में मिटाये, रसिया ओ सांवरा,
तेरी बहुत बड़ी सकलाई रे, ओ SSSS ॥1॥

श्याम बहादुर दर्शन को आये, ताले मन्दिर के बन्द पाये,
मोर छड़ी से तालों को खोला SSSS-2,
शीश झुका कर बाबा से बोला, रसिया ओ सांवरा,
तेरी बहुत बड़ी सकलाई रे, ओ SSSS ॥2॥

मोर छड़ी की महिमा है भारी, श्याम धणी को लागे है प्यारी,
'हर्ष' कहे रोतों को हंसाये SSSS-2,
हाथों में जब तेरे लहराये, रसियाओ सांवरा,
तेरी बहुतबड़ी सकलाई रे, ओ SSSS ॥3॥

यशोदा माँ के हुया लाल

यशोदा माँ के हुयो लाल, बधाई सारे भक्ताँ ने,
बाज्यो रे बाज्यो देखो थाल, बधाई सारे भक्ताँ ने ।।टेर।।

आज यो आंगणो धन्य हुयो रे,
श्री कृष्ण को जन्म हुयो रे,
नाचाँ रे नाचाँ नौ नौ ताल, बधाई सारे भक्ताँ ने ।। यशोदा माँ...

खुशखबरी या सबने सुनावां,
झूमां रे नाचां म्हें तो मोज मनावां
कृष्णजी लियो अवतार, बधाई सारे भक्ताँ ने ।। यशोदा माँ...

महलां में अंगणो अंगणें में पलनों,
पलने में झूम रहयो यशोदा को ललनो,
निजर उतारा बार-बार, बधाई सारे भक्ताँ ने ।। यशोदा माँ...

चालो जी यशोदा माता के चाला,
बालक निरखस्याँ, थुथकारा घाला,
आओ सजावाँ पूजन थाल, बधाई सारे भक्ताँ ने ।। यशोदा माँ...

एजी म्हारा नटवर नागरिया

एजी म्हारा नटवर नागरिया, भगतां रे क्यूँ नहीं आयो रे।
भगतां रे क्यूँ नहीं आयो रे, साधाँ रे क्यूँ नहीं आयो रे, ॥टेर॥

धन्नू भगत काई भगत पुरबलो, जिणरो खेत निपजायो रे।
बीज लेय साधां न बाँट्यों, बिना बीज निपजायो रे ॥1॥

सेन भगत काई सुसरो लागे, जिणरो कारज सार्‌यो रे।
बगल रछांनी नाई बण गयो, नृप को शीश सँवार्‌यो ॥2॥

नामदेव काई नानो लागे, जिणरो छप्पर छायो रे।
मार मँडासो छांवण लाग्यो, लिछमी बन्ध खिंचायो रे ॥3॥

परसो काई थारा फूँफो लागे, जिणरो पेड़ो पूठ्यो रे।
बिना बुलायो आप ही आयो, रात्यूँ लकड़ो कूट्यो रे ॥4॥

कबिरो काई थारो काको लागे, ज्यां घर बालद ल्यायो रे।
खाँड खोपरा गिरी छुँहारा, आप लदावण आयो कव्यो रे ॥5॥

करमाँ काईं थारी काकी लागे, जिण रो खीचड़ खायो रे।
घाबलिये रो पड़दो कीन्हो, रुच रुच भोग लगायो रे ॥6॥

मीराँ काईं थारी माँसी लागे, जिणरो विषड़ो जार्‌यो रे।
राणो बिष का प्याला भेज्या, विष अमरित कर डार्‌यो रे ॥7॥

भिलणी काईं थारी भूवा लागे, जिणरो जूठण खायो रे।
ऊँच नीच की कांण न मानी, रुच रुच भोग लगायो रे ॥8॥

पहिले तो तु आतो रे कान्हा, फिर-1 सारया काम रे।
नानी बाई को माहेरो भरतां, घर का लागें दाम रे ।।9।।

कह नरसीलो सुन साँवरिया, आणों है तो आव रे।
ब्याही सगाँ में भूंडा लागौं, यूं काँई लाज गमावे रे।।10।।

मैं तो आयो थारे भरोसे, संग साधों ने ल्यायो रे।
म्हारो तो प्रभु कुधु न बिगड़े, बिरद लाज-सी थारो रे।।11।।

मैं तो आयो ईश्वर जानकर, लीन्हो चरण सहारो रे।
तू तो काली कपटी निकल्यो, कृष्ण द्वारिका वालो रे।।12।।

के राधा रुक्मण बिलमायो, के सुख सो गयो सारो रे।
के भगतां की करत नौकरी, ले गयो देश निकारो रे।।13।।

लाज न मारो प्रभुजी, लाज न मारो रे।
अब की चेर सुनो प्रभु मोरी, नरसी भगत तिहारो रे।।14।।

राधिका गौरी से

राधिका गौरी से, बृज की छोरी से
मैया करा दे मेरो ब्याह
उमर तेरी छोटी है, नजर तेरी खोटी है
कैसे करा द्यूं तेरो ब्याव
कि जिद है नन्दलाल की... राधिका....

जो नहीं ब्याह करावै, तेरी गैया नाहिं चराऊँ
आज के बाद मोरि मइया, तेरी देहली पे न आऊँ
आयेगा रे मजा, रे मजा, अब जीत हार का – राधिका....

चन्दन की चौकी पर, मैया तुझ को बैठाऊँ
अपनी राधिका से मैं, माँ चरण तेरे दबवाऊँ
भोजन मैं बनवाऊँगा, छत्तीस प्रकार के – राधिका....

छोटी सी दुलहनियाँ, जब अंगना में डोलेगी,
तेरे सामने मैया, वो घुंघट ना खोलगी,
दाऊ से जा कहो जा कहो बैठेगें द्वार पे – राधिका...

सुन बातें लाला की, मैया बैठी मुस्काये
लेके बलैया मैया, हिवड़े से अपने लगाये,
नजर कहीं लग जाये ना, जाये ना मेरे नन्दलाल को – राधिका...

इक आस तुम्हारी है

इक आस तुम्हारी है विश्वास तुम्हारा है।
अब तेरे सिवा बाबा कहो कौन हमारा है ॥ टेर ॥

फूलों में महक तुमसे तारों में चमक तुमसे,
मेरे बाबा .... इतना बता दो कहां तुम नहीं है,
ये सबको पता है कि तुम हर कहीं हो,
अगर तुम न होते तो दुनिया ना होती,
अंधेरा मिटाती है तेरी ही ज्योति।
बर्फो में शीतलता अग्नि में धधक- तुमसे - 2
जिस ओर नजर डालूं तेरा ही नजारा है,
अब तेरे सिवा बाबा कहो कौन हमारा है
मझधार में नैया है मजबूर खिवैया है
कन्हैया .... विशवास मेरा ये टूटे ना प्यारे,
तुम्हीं को लगानी हे नैया किनारे
चले आओ ढूंढो ना कोई बहाना,
सोचो जरा है ये रिस्ता पुराना।

सरवरीया के तीर खड़ी या

सरवरीया के तीर खड़ी या, नानी नीर बहाव है।
माँ का जाया बीर बिना कुण, भात भरण न आव है ।।टेर।।

एक दिन म्हारो भोलो बाबुल, अरबपति कहलायो थो,
अन्न धन रा भण्डार घणेरा, ओर – छोर नहीं पायो थो,
ऊँचा-ऊँचा महल मालिया, नगर सेठ कहलायो थो,
अन-गिनती का नौकर चाकर, याद मने सब आव है ।।1 ।।

लाड प्यार मं पली लाडली, बड़ा घरां जद ब्याही थी,
दान दायजो हाथी घोड़ा, दास-दासियाँ ल्याई थी,
सोना, चाँदी, हीरा, मोती, गाड़ा भर-भर ल्याइ थी,
बीती बाता याद करुँ जद, हिवड़ों भर-भर आव है ।।2 ।।

तेरे भरोसे सेठ साँवरा, भोलो बाबुल आयो है,
गोपी चन्दन और तुमड़ा, साधा न संग ल्यायो है,
घर.घर माँगत फिरे सुरीया, म्हारो मान घटायो हे,
देवरियो म्हाने ताना मारे, नणदन जीव जलाव है ।।3 ।।

और सगा न महल मालिया, टूटी टपरी नरसी न,
और संगा न शाल दुशाला, फाटी गुदरी नरसी न,
और सगा न माल मलीदा, रुखीसूखी नरसी न,
डुब मरुँ पर घर नहीं जाँऊ, बाबुल म्हाने लजाव है ।।4 ।।

विकल होय जद नानी बाई, श्याम प्रभु न ध्यायो है,
राधा-रुकमण संग लेयकर, सेठ साँवरो आयो है,
भात भरण न दान दायजो, बालद भर-भर ल्यायो है,
साँवरिया न निरख बावली, बातां यूं बतलाव है ।।5।।

कुण स नगर पधारोला थे, कुण का हो लणिहारजी,
नानी बाई को भात-भरणन, ज्यास्या नगर अंजारजी,
नरसीजी म्हारो सेठ पुरानो, म्हारो अन्नदातारजी,
नानी बाई म्हारी धरम की बहना, यूँ साँवरियो समझाव है ।।6।।

बात सुनी जब साँवरिया की, सारो दुखड़ो दूर हुयो,
रंग बधावा गाती गाती, घर-घर यो संवाद कह्यो,
'मण्डल' थारी महिमा गावे, कब से बाट उड़ीक रह्यो,
विप्र 'रामअवतार' प्रभु का, हर्ष-हर्ष गुण गाव है।।7।।

बड़ी देर भई नन्दलाला

बड़ी देर भई नन्दलाला तेरी राह तके बृजबाला
ग्वाल बाल ईक-इक से पूछे कहां है मुरली वाला

बड़ी देर भई नन्दलाला तेरी राह तके बृजबाला
ग्वाल बाल ईक-इक से पूछे कहां है मुरली वाला
कोई न जाए कुंज गलिन में तुम बिन कलियां चुनने को
तरस रहे हैं यमुना के तट धुन मुरली की सुनने को
संकट में है आज वो धरती जिस पर तूने जन्म लिया
पूरा करदे आज वचन गीता में जो तूने दिया
कोई नहीं है तुझ बिन मोहन भारत का रखवाला
बड़ी देर भई.........

नटवर नागर नन्दा

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
श्यामसुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।।टेर।।

तूँ ही नटवर, तूँ ही नागर, तूँ ही बाल मुकुन्दा।।1।।

सब देवन में कृष्ण बड़े है, ज्यूँ तारा बिच चन्दा ।।2।।

सब सखियन में राधाजी बड़ी है, ज्यूँ नदियाँ बिच गंगा ।।3।।

ध्रुव तारे, प्रहलाद उबारे, नरसिंग रूप धरन्ता ।।4।।

कालीदह में नाग ज्यों नाथो, फण फण निरत करन्ता ।।5।।

वृन्दावन में रास रचायो, नचत बाल मुकुन्दा ।।6।।

मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, काटो राम का फन्दा ।।7।।

राधे तेरे चरणों की

राधे तेरे चरणों की, श्यामा तेरे चरणों की,
गर धूल जो मिल जाये।
सच कहता हूँ मेरी, तकदीर सवँर जाये।।
राधे...

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है।
एक बून्द जो मिल जाये, मेरे मन की कली
खिलजाये।।
राधे...

यह मन मेरा बड़ा चंचल है, कैसे तेरा भजन करूँ।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाये।।
राधे...

नजरों से गिराना ना, चाहे जितनी सजा देना।
नजरों से जो गिर जाये, मुश्किल ही सम्हल पाये।।
राधे...

राधे इस जीवन की, बस एक तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे, और प्राण निकल जाये
।।राधे।।

होगा तुमसे प्यारा कौन

होगा तुमसे प्यारा कौन
हमको तो तुमसे है,
है कान्हा, है कान्हा आ आहा आहा
साँसों की रवानी, कहती है यह कहानी

हो जन्म-जन्म तक, तेरे हुए हम (2)
तुझ बिन तो सहारा कौन
हमको तो तुमसे है.........।।होगा।।

दिल यह हर पल गाता
बिन तेरे कुछ न भाता
तो जायें भी, तो जायें कहाँ रे (2)
तुम बिन तो हमारा कौन
हमको तो तुमसे है.........।।होगा।।

छोड़ी दुनिया सारी
जोड़ी तुमसे यारी (2)
हो गये हम दिवाने, साँवरेऽऽऽ
तुमसे बढ़कर यारा कौन
हमको तो तुमसे है.........।।होगा।।

सुख के सब साथी

सुख के सब साथी, दु:ख में ना कोई।
मेरे राम मेरे राम, तेरा नाम एक साँचा, दुजा ना कोई॥
जीवन आनी जानी छाया-२

झूठी माया झूठी काया फिर काहे को सारी उमरिया
पाप की गठरी ढोए।।

ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा, ये जग जोगी वाला फेरा
राजा हो या रंक सभी का, अंत एक सा होई।।

बाहर की तू माटी फाँके, अपने भीतर क्यूँ ना झाँके
उजले तन पर मान किया, और मन की मैल न धोई।।

माया का एक सिंह बनाया

माया का एक सिंह बनाया, डाल के उसमें प्राण चले,
लेने परीक्षा मोरध्वज की, अर्जुन और भगवान चले,
अर्जुन और भगवान चले ।।टेर।।

तीनों पहुँच गये राजधानी, द्वारे अलख जगाते है,
तीन रोज के भूखे, पहरेदारों को बतलाते है।
सुन करके ये बात साधु की, कहने को दरवान चले।।
लेने परीक्षा मोरध्वज की ...

जय होवे महाराजा जी, दो साधु द्वारे आये हैं,
तीन रोज के भूखे हैं, और साथ में सिंह भी लाए हैं ।
इतनी सुन करके राजा, सजवा थालों पकवान चले।।
लेने परीक्षा मोरध्वज की ...

भोजन खिलवाना हो तो पहले, सिंह को भोजन दो राजा,
नर भक्षी हैं सिंह हमारा, नर का मांस ही दो राजा।
गैर का सुत न कटने पाये, अपने पर कृपाण चले।।
लेने परीक्षा मोरध्वज की ...

अपने सुत को मारने से पहले, एक बात सुन महादानी,
एक तरफ पकड़ो तुम आरा, एक तरफ पकड़े रानी।
आँखो से ना आँसु निकले, आरा शीश दरम्यान चले।।
लेने परीक्षा मोरध्वज की ...

जो आज्ञा कहकर राजा ने सुत पर आरा फेर दिया,
अपने लाल के टुकड़े करके, सिंह के आगे ढ़ेर किया।
जाहिर कुछ ना होने दिया, चाहे दिल में अनेक तूफान चले,
लेने परीक्षा मोरध्वज की...

अब हम खोयेंगे भोजन राजा, पाँच थाल तुम सजवा लो,
देकर के आवाज तीन तुम, अपने सुत को बुलवा लो।
सुन कर के बात साधु की, राजा हो हैरान चले,
लेने परीक्षा मोरध्वज की...

नाम रहेगा जग में रोशन, जब तक चाँद सितारे हैं,
हम सेवक हैं श्री बाबा के, वो गुरुदेव हमारे हैं।
देकर के वरदान राजा को, तीनों अपने धाम चले,
लेने परीक्षा मोरध्वज की...

ॐ अर्हम्

कैसे आऊँ रे कन्हाई

कैसे आऊँ रे कन्हाई तेरी गोकुल नगरी।
बड़ी दूर नगरी........

इत मथुरा उत गोकुल नगरी,
बीच बहे यमुना गहरी ।
बड़ी दूर नगरी ....
पाँय धरूँतो पायल मोरी भीजैं,
पार करुँतो बह जाऊँ सगरी ।
बड़ी दूर नगरी ....
धीरे-धीरे चलूँ कान्हा कमर मेरी लचके,
झपट चलूँ तो छलकाये गगरी ।
बड़ी दूर नगरी ....
रात को आऊँ कान्हा डर मोहे लागे,
दिन को आऊँ तो देखे सारी नगरी।
बड़ी दूर नगरी ....
सखी संग आऊँ कान्हा लाज मोहि लागै,
अकेली आऊं तो भूल जाऊं डगरी ।
बड़ी दूर नगरी ....
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर,
तेरे बिना में तो हो गई बावरी।
बड़ी दूर नगरी ....

मीठे रस से भरोड़ी

मीठे रस से भरोड़ी राधा रानी लागे।
म्हाने कारो-कारो यमुना जी रो पानी लागे ॥
कान्हाजी तो सांवर-सांवर, राधा गोरी-गोरी ॥
वृन्दावन में धूम मचावे, बरसाने की छोरी ॥
बृजधाम राधा जू की, राजधानी लागे.२ ॥म्हाने....

कान्हा नित मुरली में टेरे, सुमिरें बारम्बार ।
कोटिन रुप धरै मन मोहन, तउ न पावें पार ।।
रुप रंग की छबीली, पटरानी लागे-2।। म्हाने ...

ना भावे मन माखन मिश्री, अब ना कोई मिठाई ।।
म्हारी जीभड़िया ने भावै, राधा नाम मलाई ।।
वृषभानु की लली तो, गुड़धानी लागे-2।। म्हाने ....

राधा-राधा नाम रटत है, जो नर आठो याम।
तिनकी वाधा दूर करत है, राधा राधा नाम।।
राधा नाम में सफल जिन्दगानी लागे-2 ।। म्हाने ....

कठे से आयो श्याम

कठे से आयो श्याम, कठे से आयो शंकर।
कठे से आयो रे माता अंजनी थारो लालो॥ टेर॥
खाटू से आयो श्याम, काशी से आयो शंकर।
यो सालासर से आयो ऐ, माता अंजनी थारो लालो॥
कठे से आयो ....

क्यां पर आयो श्याम, क्यां पर आयो शंकर।
क्यां पर आयो ऐ, मां अंजनी थारो लालो।
लीले पर आयो श्याम, नन्दी पर आयो शंकर।
पवन वेग से आयो ऐ, मा अंजनी थारो लालो ।।
कठे से आयो....

क्यां सुं रिझे श्याम, यो क्यां सुं रिझे शंकर।
क्या सुं रिझे ऐ, माता अंजनी थारो लालो ।
चुरमा से रिझे श्याम, बिजीया से रिझे शंकर।
लड्डुवन से रिझे ऐ, माता अंजनी थारो लालो।।
कठे से आयो....

कांई देवै श्याम, कांई देवै शंकर।
कांई देवै ऐ, माता अंजनी थारो लालो।।
संकट काटे श्याम, जीवन देवै शंकर।
दुःख दूर करे ऐ, माता अंजनी थारो लालो।।
कठे से आयो....

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

सबसे ऊँची प्रेम सगाई-२
दुर्योधन की मेवा त्यागी, साग विदुर घर खाई-२
सबसे ऊँची.........

झूंठे फल शबरी के खाये, प्रेम विवश रघुराई-2
सबसे ऊँची ....

प्रेम के वश अर्जुन रथ हांका, भूल गये ठकुराई-2
सबसे ऊँची ....

ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन, गोपियन नाच नचाई-2
सबसे ऊँची ....

सूरदास इस लायक नाँहि-२ केही लग करे बढ़ाई-2
सबसे ऊँची ....

इक बार तुम तो राधा

इक बार तुम तो राधा बन कर देखो सांवरियां...
राधा यूँ रो रो कहे....
क्या होते है आँसू, क्या पीड़ा होती है,
क्यूँ दर्द उठता है, क्यूँ आँखे रोती है,
इक बार तो आँसू बहा कर, देखो सांवरियाँ...।।
राधा....

तुम क्या जानो मोहन, ये प्रेम की भाषा,
क्या होती है आशा, क्या होती निराशा,
इक बार तुम भी प्रेम कर के देखो सांवरियां...।।
राधा....

पनघट पे, मधुवन में, वो इंतजार करना,
हे श्याम तेरे खातिर, वो घुट - घुट कर मरना,
इक बार किसी का इंतजार कर, देखो सांवरिया...।।
राधा....

श्री राधे गोविन्दा

श्री राधे गोविन्दा, गोपाला तेरा प्यारा नाम है।
गोपाला तेरा प्यारा नाम है , नन्दलाला तेरा प्यारा नाम है ॥ टेर॥

मोर मुकुट माथे तिलक विराजे, गल बैजन्ती माला।
कोई कहे वसुदेव के नन्दन, कोई कहे नन्दलाला।।1।।
जमुना किनारे कृष्ण कन्हैया, मुरली मधुर बजावे।
ग्वाल बाल के संग में कान्हा, माखन मिश्री खावे।।2।।
चुरा-चुरा नित माखन खाकर, माखन चोर कहाये।
वृन्दावन में रास रचाकर गोपियन के मन भाये।।3।।
अर्जुन का रथ तुमने हाँका, भारत भई लड़ाई।
नाम को लेकर विष को पी गई, देखो मीरा बाई।।4।।
द्रोपदी ने जब तुम्हें पुकारा, साड़ी आन बढ़ाई।
भक्तों के खातिर आप बने, प्रभु आकर नन्दा नाई।।5।।
जल में गज को ग्राह ने घेरा, जल में चक्र चलाये।
जब-जब भीड़ पड़ी भक्तों पर, नंगे पावों आये।।6।।
दुर्योधन के मेवा त्यागे, साग विदुर घर खाये।
ऐसे प्रेम पुजारी प्रभुजी, भक्तों के मन भाये।।7।।
इन्द्र कोप कियो ब्रज उपर, नख पर गिरवर धार्‌यो।
माता पिता को बन्दी छुड़ाकर मामा कंस को मार्‌यो।।8।।
नरसी के सब कारज सारे, मुझको मत विसरायो।
जन्म-जन्म का तेरा ही सेवक, तेरा ही नाम पुकारयो।।9।।
श्री राधे गोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है।
गोपाला तेरा प्यारा नाम है, नन्दलाला तेरा प्यारा नाम है।।10।।

ॐ अर्हम्

हर जनम में सांवरे का

हर जनम में सांवरे का साथ चाहिए,
सिलसिला ये टूटना नहीं चाहिए,
मुझको बस इतनी सी सौगात चाहिये ।।टेर।।

मेरी आंखों के तुम तो तारे हो,
जान से ज्यादा मुझे प्यारे हो,
मुझको तेरे प्यार की बरसात चाहिए,
दिल में तेरे भाव के जज्बात चाहिये।।1।।

मुझपे तेरी किरपा यूं कम ना है,
फिर भी एक तुमसे मुलाकात चाहिये।।2।।

मेरी दुनियां को तुम बसाए हो,
श्याम के दिल नें तुम समाए हो,
नाम तेरा होठों पे दिन-रात चाहिये,
जिक्र हो तेरा ही ऐसी बात चाहिए।।3।।

सुन लीज्यो बिनती मोरी

सुन लीज्यो बिनती मोरी। मैं शरण गही प्रभु तोरी।।
तुम पतित अनेक उबारे, भवसागर पार उतारे।
मैं सबका नाम न जाणूँ, पण कोई २ नाम बखाणूँ।।
अम्बरीश सुदामा नामा, तुम पहुँचाये निज धामा।
प्रहलाद टेक तुम राखी, सब वेद पुराणाँ साखी।।
ध्रुव पांच बरस का बाला, तुम दरस दियो गोपाला।
अजामिल से पापी भारी, तुम नारि अहिल्या तारी।।
द्रोपदि की लाज बचाई, पाण्डवन की करी सहाई।
तुम गणिका पार लगाई, करमा की खिचड़ो खाई।।
नृत्य मोरध्वज हरिचंदा, काटया सबका दुःख फंदा
तुम ग्राह हत्यो गज राख्यो, तुम अरजुन को रथ हांक्यो।।
तुम धना का खेत निपाया, बिन बीज अन्न उपजाया।
कुब्जा तुमरे रंग भीनी, नरसी की हुण्डी लीन्ही।।
सेना, सदना, रैदासा, तुम सबकी पूरी आशा।
शबरी के फल तुम खाये, तुम साग विदुर घर पाये।।
रँका बंका बाजिन्दा, नानक दादू सा बन्दा।
जम तुलसी सूर कवीरा, तुम हरी सकल की पीरा ।।
रिषि मुनि तुमरो गुण गावें, भक्तवत्सल नाम धरावें।
अब जब मीराँ की बारी, तुम कहाँ रुके गिरधारी।।

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

बेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुरापतेरखिलं मधुरम्।।

गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरम्।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्त मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

श्री रामदेवजी

रूणीचे रा धणिया

रूणीचे रा धणिया, अजमाल जी कंवरा,
माता मैणा दे रा लाल, राणी नेतल रा भरतार,
म्हारो हेलो-SSS-2 सुणोजी रामा पीर...
बाबा म्हारो हेलो ॥

आंधंलियां नै आख्यां देवो, पांगलियां नै पांव जी-2
निर्धनियां नै धन्न देवों, धन्नरामसा नाम जी-2
रामसा पीर थारी...SSS-2,
दरगा में शीष नवावां, मनड़े रा फूल चढ़ावां,
हे....SSS रूणीचे रा धणिया ।।1।।

थे हो म्हारा मालिक बाबा, म्हे हां थांरा दास जी-2
म्हारे ऊपर किरपा किज्यो, टाबर अपणो जाण जी-2
रामसा पीर थांरी...SSS-2,
घर-घर ज्योत जलावांश्रद्धा रा फूल चढ़ावां,
हे-SSS रूणीचे रा धणिया ।।2।।

बाबा थांरे दर पर आकर, जो भी शीष झुकाया जी-2,
बांरा बेड़ा पार किया थे, सुख सावण बरसाया जी-2
रामसा पीर थांरी...SSS-2,
ध्यजा म्हे विश्व घुमावां, भक्ति रा पुष्य चढ़ावां
हे-SSS रूणीचे रा धणिया ।।3।।

खमा खमा हो धणिया

खमां खमां हो धणिया रुणिचा रा रामदेव।
थान मनावे आखो मारवाड़ हो, आखो गुजरात हो
॥अजमालजी रा कंवरा॥

पहलो तो परचो माता मेणादे न दिन्यो।
कोई उफणतो दूध उतारयो धणिया
॥अजमालजी रा कंवरा॥

दुजो तो परचो लक्ष्मां बणजारा न दिन्यो।
कोई मिसरी रो लुण बणायो धणियां
॥अजमालजी रा कंवरा॥

तीजो तो परचो रतना राईका न दिन्यो।
कोई कुएँ सूँ बाहर निकाल्यो धणियां
॥अजमालजी रा कंवरा॥

चौथो तो परचो नेतल राणी न दिन्यो।
कोई फेरा में पगल्या चलायो धणियां
॥अजमालजी रा कंवरा॥

पाँचवो तो परचो बाई सुगणा न दिन्यो।
कोई हेला सु भाणूडो जीवायो धणियां॥
॥अजमालजी रा कंवरा॥

श्री भैरवजी

ऊँ ह्नीं वं वं बटुकाय आपदुध्दारणाय।
कुरु - कुरु बटुकाय ही ऊँ नमं शिवाय।।

कीर्तन में आप पधारो जी

कीर्तन में आप पधारो जी, भैरूंजी महाराज
म्हारी विनती थे स्वीकारो जी, भैरूंजी महाराज।।

थे हो शंकर रा अवतारी, थांने ध्यावै दुनियां सारी,
थे डमरू बजाता आओ जी, भैरूंजी महाराज....।।

थांने स्वान सवारी प्यारी, थांरी महिमा है अति भारी
काली का लाल कुहावो जी, भैरूंजी महाराज....।।

मस्तक पर मुकुट बिराजै, हाथां में शस्त्र है साजै
थे छम छम घुंघरू बजाओ जी, भैरूंजी....।।

तोलीयासर धाम है थांरो, मंदिर रो गजब नजारो
दुःखिया रा दुखड़ा मिटाओ जी, भैरूंजी....।।

लाखां नर नारी आवै, बै तेल सिंदूर चढ़ावै,
"विमल" रो मान बढावो जी भैरूंजी....।।

श्री भगवान पार्श्वनाथजी

ऊँ हीं श्रीं अर्हं श्री - चिन्तामणि - कामघेनु- कल्पवृक्ष
पुरुषादानीय श्री पाश्वनाथ-घरणेन्द्र-पदमावती-सहिताय
मम मनोवांछितं पूरय-पूरय जय-विजय-करणाय नमः।

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइं मंगलं।।

श्री भगवान महावीरजी

अर्हत् वन्दना : श्री नमस्कार महामंत्र

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।
जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।
संती तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा।।
से सुयं च मे, अज्झत्थियं च मे-
बंधपमोक्खो तुज्झ अज्झत्थेव।
पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं ।
किं बहिया मित्तमिच्छसि ?
पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ,
एवं दुक्खा पमोक्खसि ।
पुरिसा ! तुमंसि नाम सच्चेव,
जं 'हंतव्वं' ति मन्नसि।
सव्वे पाणा ण हंतव्वा
एस धम्मे धुवे, णिइए सासए।
पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि।
सच्चं भयवं ।

जैन स्तुति

सच्चं लोयम्मि सारभूयं।
इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं।
उट्ठिए णो पमायए।
सव्वतो पमत्तस्स भयं।
समया धम्म मुदाहरे मुणी।
लाभालाभे सुहे – दुक्खे, जीविए – मरणे तहा।
समो निंदा – पसंसासु, तहा माणावमाणओ।।
अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ।
वासी–चंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा।।
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ।।
अप्पा णई वेयरणी, अप्पा मे कूड़सामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं।।
जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ।।
खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।
अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि – पण्णत्तो धम्मो मंगलं ।
अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलि – पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।
अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू –
सरणं पवज्जामि, केवलि–पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

ॐ अर्हम्

भाव-भीनी वन्दना

भाव-भीनी वन्दना भगवान चरणों में चढ़ाएं।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाएं।।

ज्ञान से निज को निहारें, दृष्टि से निज को निखारें।
आचरण की उर्वरा में, लक्ष्य-तरुवर लहलहाए।।

सत्य में आस्था अचल हो, चित्त संशय से न चल हो।
सिद्ध कर आत्मानुशासन, विजय का संगान गाएं।।

बिन्दु भी हम सिन्धु भी हैं, भक्त भी भगवान भी हैं।
छिन्न कर सब ग्रन्थियों को, सुप्त चेतन को जगाएं।।

धर्म है समता हमारा, कर्म समतामय हमारा।
साम्य योगी बन हृदय में, स्रोत समता का बहाएं।।

लोगस्स पाठ

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली।।

उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।

एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजर-मरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा में पसीयंतु।।

कित्तिय वंदिय मए, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग - बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।।

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

ॐ अर्हम्

उपसर्गहर स्तोत्र (लघु)

1. उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ।।

2. विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं।।

3. चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं।।

4. तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।

5. इय संथुओ महायस ! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद।।

तीर्थंकर चौबीस

तीर्थंकर चौबीस, नित उठ ध्यान धरूं जी, ध्यान धरूं।
मंगलमय जगदीश, महिमा गान करूंजी गान करूं॥

1. रिषभ, अजित भगवान संभव सुखकारी जी, सुखकारी।
अभिनंदन जग त्राण, सुमति जयकारी जी, जयकारी॥

2. पद्म सुपार्श्वनाथ, चंदन चंद्रप्रभु जी चंद्र प्रभु।
सुविधि, शीतल, श्रेयांस वंदन वासुप्रभु जी, वासु प्रभु॥

3. विमल अनंत विशेष, जिनवर धर्मप्रभु जी, धर्म प्रभु।
शांति शांति अखिलेश! पावन कुंथुप्रभु जी, कुंथु प्रभु॥

4. अर मल्ली तीर्थेश! मन का भार हरो जी, भार हरो।
सुव्रतनाथ जिनेश! भव जल पार करो जी, पार करो॥

5. नमि, नेमि गुणधाम, करदो अविकारी जी, अविकारी।
पार्श्वनाथ का नाम, कितना गुणकारी जी, गुणकारी॥

6. त्रिशला-नन्दन वीर, मेरी पीर हरो जी, पीर हरो।
दिखलाओ भव तीर, चिन्मय रूप करो जी, रूप करो॥

7. क्रोध मान का त्याग, सच्चा धर्म यही जी धर्म यही।
पर भावों में राग, बंधन मार्ग सही जी, मार्ग सही॥

ॐ अर्हम्

महावीर प्रभु के चरणों में

महावीर प्रभु के चरणों में, श्रद्धा के कुसुम चढ़ाएं हम।
ऊँचे आदर्शों को अपना, जीवन की ज्योति जगाएं हम।।

तप संयममय शुभ साधन से, आराध्य-चरण आराधन से।
बन मुक्त विकारों से सहसा, अब गीत विजय के गाएं हम।।

दृढ़ निष्ठा नियम निभाने में, हो प्राण बलि प्रण पाने में।
मजबूत मनोबल हो ऐसा, कायरता कभी न लायें हम।।

यश-लोलुपता, पद-लोलुपता, न सताये कभी विकार-व्यथा।
निष्काम स्व-पर कल्याण काम, निज जीवन सफल बनायें हम।।

गुरूदेव-शरण में लीन रहें, निर्भीक धर्म की बाट बहें।
अविचल दिल सत्य, अहिंसा का, दुनिया को सुपथ दिखाएं हम।।

प्राणी-प्राणी सह मैत्री हो, ईर्ष्या मत्सर, अभिमान न हो।
कहनी-करनी इकसार बना, 'तुलसी' तेरा पथ पायें हम ।।

प्रभु पार्श्वदेव

प्रभु पार्श्व देव चरणों में, शत-शत प्रणाम हो।
मेरे मानस के स्वामी ! तुम एक धाम हो ॥

1. दुनियां में देव लाखों, हैं पूजे जा रहे ।
   जिनदेव ! इस रसना में, तेरा ही नाम हो ॥

2. तुमसे न राग रत्ती, क्यों द्वेष और से ?
   यह वीतरागता तेरी, मेरा विश्राम हो ॥

3. उऋण बनूं मैं कैसे, उपकार से अहो !
   चरणों में भले पन्हैया, यह मेरी चाम हो ॥

4. पा एक बार पारस, हतभाग्य जो रहा ।
   पारस अब स्वयं बनूं मैं, बस वैसा काम हो ॥

5. नस-नस में बस रहे हो, रस ज्यों कवित्व में ।
   भगवान ! भक्त 'तुलसी' के तुम ही राम हो ॥

ॐ अर्हम्

वंदना आनन्द पुलकित

वन्दना आनन्द-पुलकित, विनय-नत हो मैं करूं।
एक लय हो, एक रस हो भाव-तन्मयता वरूं॥

1. सहज निज आलोक से भासित स्वयं संबुद्ध हैं ।
धर्म-तीर्थंकर शुभंकर, वीतराग विशुद्ध हैं।।
गति-प्रतिष्ठा त्राण-दाता, आवरण से मुक्त हैं ।
देव अर्हन् दिव्य-योगज अतिशयों से युक्त हैं ।।
2. बंधनों की श्रृँखला से, मुक्त शक्ति-स्रोत हैं ।
सहज निर्मल आत्मलय में, सतत ओतःप्रोत हैं ।।
दग्धकर भव बीज अंकुर, अरुज, अज, अविकार हैं ।
सिद्ध परमात्मा, परम-ईश्वर, कृपानिधान हैं ।।
3. अमलतम आचारधारा, में स्वयं निष्णात हैं ।
दीप-सम शत दीप दीपन के लिए प्रख्यात हैं ।।
धर्म-शासन के धुरन्धर, धीर धर्माचार्य हैं ।
प्रथम पद के प्रवर प्रतिनिधि, प्रगति में अनिवार्य हैं ।।
4. द्वादशांगी के प्रवक्ता, ज्ञान-गरिमा-पुंज हैं ।
साधना के शान्त उपवन में सुरम्य निकुंज हैं ।।
सूत्र के स्वाध्याय में संलग्न रहते हैं सदा ।
उपाध्याय महान श्रुतधर, धर्म-शासन सम्पदा ।।
5. सदा लाभ-अलाभ में, सुख-दुः,ख में मध्यस्थ हैं ।
शान्तिमय, वैराग्यमय, आनन्दमय आत्मस्थ हैं ।
वासना से विरत आकृति, सहज परम प्रसन्न हैं ।
साधना धन साधु अन्तर्भाव में आसन्न हैं ।।

संयममय जीवन हो

संयममय जीवन हो।
नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो।।

1. अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा,
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो ।।

2. मैत्री-भाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाए,
समता-सह-अस्तित्व,समन्वय-नीति सफलता पाए।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित, मात्र शुद्ध साधन हो ।।

3. विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी,
नर हो नारी, बने नीतिमय, जीवनचर्या सारी ।
कथनी-करनी की समानता, में गतिशील चरण हो ।।

4. प्रभु बनकर के ही हम प्रभु की, पूजा कर सकते हैं,
प्रामाणिक बनकर ही, संकट-सागर तर सकते हैं ।
आज अहिंसा शौर्य-वीर्य, संयुत जीवन-दर्शन हो ।।

5. सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,
'तुलसी' अणुव्रत सिंहनाद, सारे जग में पसरेगा ।
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो ।।

ॐ अर्हम्

चैत्य पुरुष

चैत्य पुरुष जग जाए।
देव! तुम्हारा पुण्य नाम मेरे मन में रम जाए।।

1. ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ उद्‌गाता,
अर्हं अर्हं अर्हं अर्हं अर्हं अर्हं त्राता।
ॐ ह्रीं श्रीं जय ॐ ह्रीं श्रीं जय, विजय ध्वजा लहराए।।

2. ॐ जय भिक्षु, भिक्षु जय ॐ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं।।
विघ्न शमन ॐ, व्याधि शमन ॐ, क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं।
नाम मंत्र तव व्रण-संरोहण सतत अमृत बरसाए।।

3. मिटे विषमता तन की, मन की, अनुभव की, चिन्तन की,
पल-पल, पग-पग मिले सफलता, तन्मयता चेतन की।
नाम मंत्र तव भयहर, विषहर साम्य सिन्धु गहराए।।

4. आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है, तुमने मंत्र पढ़ाया,
आत्मा अचल अरूज शिव शाश्वत, नश्वर है यह काया।
आत्मा आत्मा के द्वारा ही, आत्मा में लय पाए।।

5. तुम निरुपद्रव, हम निरुपद्रव, तुम हम सब हैं आत्मा,
तव जागृत आत्मा से हम सब, बन जाएं परमात्मा।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः अन्तर-मल धुल जाए।।

प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर

प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा।
बढ़े चलें, हम रुकें न क्षण भी, हो यह दृढ़ संकल्प हमारा।।

1. प्राणों की परवाह नहीं है, प्रण को अटल निभाएंगे,
नहीं अपेक्षा है औरों की, स्वयं लक्ष्य को पाएंगे।
एक तुम्हारे ही वचनों का, भगवन्! प्रतिपल सबल सहारा।।

2. ज्यों-ज्यों चरण बढ़ेंगे आगे, स्वतः मार्ग बन जाएगा,
हटना होगा उसे बीच में, जो बाधक बन आएगा।
रुक न सकेगी, मुड़ न सकेगी, सत्य क्रान्ति की उज्ज्वल धारा।।

3. आत्मशुद्धि का जहां प्रश्न है, सम्प्रदाय का मोह न हो,
चाह न यश की और किसी से, भी कोई विद्रोह न हो।
स्वर्ण विघर्षण से ज्यों सत्य, निखरता संघर्षों के द्वारा।।

4. आग्रह-हीन गहन चिन्तन का, द्वार हमेशा खुला रे,
कण-कण में आदर्श तुम्हारा, पय-मिश्री ज्यों घुला रहे।
जागे स्वयं, जगाएं जग को, हो यह सफल हमारा नारा।।

5. नया मोड़ हो उसी दिशा में, नयी चेतना फिर जागे,
तोड़ गिराएं जीर्ण-शीर्ण, जो अन्धरूढ़ियों के धागे।
आगे बढ़ने का यह युग है, बढ़ना हमको सबसे प्यारा।।

6. शुद्धाचार विचार-भित्ति पर, हम अभिनव निर्माण करें,
सिद्धांतों को अटल निभाते, निज पर का कल्याण करें।
इसी भावना से भिक्षु का, 'तुलसी' चमका भाग्य-सितारा।।

आओ आओ भिक्षु स्वामी!

आओ आओ भिक्षु स्वामी! अब तो म्हारै आँगणियै,
उभा अडीकां कदका आपनै।

पक्ष उजलो तिथि है तेरस, घट में म्हारै चान्दणियो,
श्रद्धा रा फूल बिछावां सामनै ।।

शब्द-शब्द और सांस सांस में, भिक्षु री झणकार उठै,
खातां-पीतां सोतां-उठतां, खोजां भिक्षु गया कठै ।
दर्शण तो देणां पड़सी आपनै ।।

इसी जग्यां नहीं म्हारै घट में, जठै आपरो नाम नहीं।
आँख्या में उतरो तो स्वामिन् ! पाऊं मैं आराम सही ।
म्है तो नहीं भूलां थांरै जाप नै ।।

कष्टां री काळी रातां में, एक आपरो ही शरणो,
एकर तो संभाल्या सरसी, बैठ्या कद का दे धरणो ।
भव - भव में शरणो थांरो म्हांनै ।।

ई कलियुग में आप सरीखा, संत पुरुष मिलना मुश्किल,
अपणै श्रम स्यूं ही पावै है, वीर पुरुष अपणी मंजिल ।
जग नै समझायो रात्यूं जाग नै ।।

थांरै गण उपवन री शोभा, लहर - लहर लहरावै है ।
गण-गुम्बज पर आज देखल्यो, धर्म-ध्वजा फहरावै है ।
"तुलसी" सा मालिक मिलग्या संघ नै ।।

ॐ का महत्व

ओम् (ॐ) का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। गीता में भी ॐकार के जाप का विधान है। इसके हजारों अर्थ हैं। उसमें एक यह है – परमात्मा का आह्वान करना। यह वेदों का बीज मूल महामंत्र है, साक्षात ब्रह्म है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी "ॐॐ" ऐसा उच्चारण करने मात्र से प्राणों में अद्भुत क्षमता आती है। इसको साक्षात् ब्रह्म माना गया है। इसीलिये आपने देखा होगा कि कई चित्रकारों ने ॐ के भीतर ही भगवान को चित्रित किया है।

ॐ है जीवन हमारा, ॐ प्राणाधार है।
ॐ है कर्ता विधाता, ॐ पालनहार है।।
ॐ है दुःख का विनाशक, ॐ सर्वदानन्द है।
ॐ है बल तेजधारी, ॐ करूणाकन्द है।।
ॐ सबका पूज्य है, ॐ का पूजन करें।
ॐ के ही ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।।
ॐ के गुरू मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन।।
ॐ के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह ॐ हमको मुक्ति तक पहुंचायेगा।।

फलदायी मंत्र

।। गायत्री मंत्र ।।

ओऽम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।।

।। श्री शिव आराधना ।।

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बंधनामृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।

।। विपत्ति-नाश के लिए ।।

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणी नमोऽस्तुते।।

।। रोग नाश के लिए ।।

रोगनशेषानपहंसि तुष्टा तु कामान् सकलानाभिष्टान।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामारिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

।। सब प्रकार के कल्याण के लिए ।।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते।।

।। बाधामुक्ति के लिए ।।

सर्वाबाधाविनिमुक्तो धनधान्यसुताविन्वतः।
मनुष्यों मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

।। स्वर्ग मोक्ष प्राप्ति के लिए ।।

सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायनी।
त्वं सुतो स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।

गायत्री मंत्र

ओऽम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियों योनः प्रचोदयात्।।

हे प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता और सर्वव्यापक, आनन्द के देने वाले प्रभो! जो आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं, हम आपके उस पूजनीयतम्, पापमनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। पिता ! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख ना हो आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहे और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मो में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

गायत्री मंत्र का भजनात्मक
सरल विश्लेषण

ॐ ही रक्षक हमारे सब गुणों की खान है।
भूः सदा सब प्राणियों के प्राण के भी प्राण हैं।
भुंवः सब दुख दूर करते दूर कृपा निधान हो।
स्वः सदा सुख रूप सुखमय सतत् सुख महान हो।
तत् वही विख्यात ब्रह्माण वेद वर्णित सार हो।
देवसवितुर सर्व उप्तादनन हो पालनहार हो।
शुभ वरेण्यम वरण करने योग्य भगवान् आप हो।
दिव्यगुण देवस्य दिव्य स्वरूप देव अनूप हो।
धीमहि धारे हृदय में दिव्य गुण गुणरूप हो।
धियोजनः वह हमारी बुद्धियों का हित करे।
अमर प्रचोदयात् नित सन्मार्ग में प्रेरित करे।

दिन के चौघड़िये
(सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये (सूर्यास्त से सूर्योदय तक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

राहु काल चक्रम

सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
प्रातः 7.30 से 8.00 तक	सायं 6.00 से 4.00 तक	दिन में 12.00 से 1.30 तक	दिन में 1.30 से 3.00 तक	दिन में 10.30 से 12.00 तक	सुबह 9.00 से 11.30 तक	सायं 4.30 से 6.00 तक

।। राशि ज्ञान चक्र ।।

मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ
वृष	ई	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
मिथुन	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
कन्या	टा	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
धनु	ये	यो	भा	भी	भू	ध	फ	ढ़	भे
मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
कुम्भ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
मीन	दी	दू	थ	झ	भ	दे	दो	चा	ची

देश ग्रामे गृहे युद्धे , सेवायां व्यवहारके।
नाम राशेः प्रधानत्व, जन्मराशिं न चिन्तयेत् ।।

विवाहे सर्व मंगल्ये, यात्रायां ग्रह गोचरे।
जन्म राशेः प्रधानत्व, नाम राशिं न चिन्तयेत्।।

ॐ अर्हम्

यदि भला किसी का कर ना सको

यदि भला किसी का कर ना सको,
तो बुरा किसी का मत करना

अमृत न पिलाने को घर में,
तो जहर पिलाने में डरना
यदि शब्द मधुर न बोल सको,
तो झूठ कभी भी मत बोलो
बोलो तो पहले तुम तोलो,
फिर मुख ताला खोला करना ।।1।।
यदि मौन रहो सब से अच्छा,
कम से कम विष तो मत बोलो
यदि मरहम पट्टी कर ना सको,
तो खार नमक न लगा देना।।2।।
यदि धन किसी का बचा न सको,
तो झोपड़िया न जला देना
यदि दीपक बन कर जल न सको,
तो अन्धकार भी मत करना।।3।।
यदि देव नहीं बन सकते हो,
तो दानव बन कर मत मरना
यदि सदाचार अपना न सको,
तो पापों में मत पग धरना।।4।।
यदि फूल नहीं बन सकते हो,
तो कांटे बनकर मत चुभना
यदि मानव बन सहला न सको,
तो दिल भी किसी का न तड़पाना।।5।।

क्या लेकर तू आया

क्या लेकर तू आया जगत में, क्या लेकर तू जायेगा।
सोच समझ ले रे बन्दे, नहीं आखिर तू पछतायेगा।।1।।
सोच समझ.....

बचपन बीता इन गलियों में यौवन भी रंग रेलियों में ।
खूब सजाया तूने तन को, फूलों और कभी कलियों से ।
देख बुढ़ापा क्यों घबराये, यह तो इक दिन आयेगा ।।
सोच समझ.....

जीवन भर तो गद्दे तकिये, अन्त लकड़ियाँ सीढ़ी की ।
अपनी खुद की चिन्ता कर ले, छोड़ सातवीं पीढ़ी की ।
बाँध के मुट्ठी आया जगत में, हाथ पसारे जायेगा ।।
सोच समझ.....

भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, मरघट तक सब जायेंगे ।
स्वार्थ के दो आँसू देकर लौट-लौट घर आयेंगे ।
कोई न आया संग किसी के, कोई न संग में जायेगा ।।
सोच समझ.....

स्वार्थ की ये अंधी दुनिया, सुख में साथ निभाती है ।
जब पड़ती दुःखों की छाया, छू मन्तर हो जाती है ।।
''भक्त'' प्रभु का ध्यान धरो तुम, वो ही संग में जायेगा।।
सोच समझ.....

ॐ अर्हम्

भाई म्हारा रंग सूँ

भाई म्हारा रंग स्यूँ तो रंग मिल जाय
गुणांरी जोड़ी नाय मिले......भाई म्हारा

कागा कोयल एक ही रंग रा बैठ एक ही डाल
कड़वो तो कागो बोल है, कोयल रस बरसाय
गुणां री जोड़ी....

हल्दी केशर एक ही रंग रा एक ही हाट बिकाय।
हल्दी तो सागां रसीजे.......केशर तिलक लगाय।।
गुणां री जोड़ी....

संध्या भोर एक ही रंग रा एक सूरज री छांव ।
संध्या तो नींदडली बुलाव, भोर तो जगत जगाय।।
गुणां री जोड़ी....

डोली, अर्थी एक बांस री, एक ही कांधे जाय ।
डोली तो दुल्हन घर ल्यावे, अर्थी तो मरघट जाय।।
गुणां री जोड़ी....

त्यागी भोगी एक ही घर में, एक ही खाणो खााय।
त्यागी तो कर्मा न काटै, भोगी तो कर्म लगाय।।
गुणां री जोड़ी....

कभी प्यासे को

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं
बाद आसुँ बहाने से क्या फायदा...।।ध्रुव।।

मैं मन्दिर गया आरती की
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं
सिर्फ पूजा ही कर लूँ तो क्या फायदा...कभी।।1।।

मैं आश्रम गया गुरूवाणी सुनी
गुरूवाणी को सुनकर ख्याल आ गया
जैन कुल में हुआ जैनी बन ना सका
सिर्फ जैनी कहलाने से क्या फायदा...कभी।।2।।

मैं काशी बनारस मथुरा गया
गंगा नहाते हुए ये ख्याल आ गया
तन को धोया मगर मन को धोया नहीं
सिर्फ गंगा नहाने से क्या फायदा..कभी।।3।।

मैने दान दिया मैने तप जप किया
दान करते हुए ये ख्याल आ गया
कभी भूखे को भोजन कराया नहीं
दावा लाखों का कर दूँ तो क्या फायदा...कभी।।4।।

बांट लिया है अपने

बांट लिया है अपने अपने पंथ और भगवान को,
सुनो सयानो कहना मानो, मत बांटो इन्सान को ।।टेक।।

ना कोई गोरा, ना कोई काला, ना कोई छूत अछूत है।
जन्म लिया जिसने भारत में, भारत मां का पूत है।
मत ठुकराओ, गले लगाओ, गिरे हुए इन्सान को ।।1 ।।

श्रम के जल से सिंचो मन की वसुंधरा जो प्यारी है ।
तभी खिलेगी संयम के सुमनों से जीवन-क्यारी है।
सदाचार की राहों में अर्पित कर देना प्राण को ।।2 ।।

ऊंच नीच निर्धन अमीर की दीवारों को तोड़दो।
मानवता है धर्म हमारा सबको इससे जोड़दो।
छुपा हुआ है सबके घट में देखो उस भगवान को ।।3 ।।

उठो देश के भाई बहनों अलख जगाओ प्रेम की ।
जिम्मेवारी नई जवानी पर है मंगल क्षेम की ।
'निर्मल' मिल गायें सत्यं शिवं सुन्दरं गान को ।।4 ।।

हो भाई म्हारा

हो भाई म्हारा, मत दीज्यो मायड़ली नै दोष,
थांरी जामणती नै दोष,
कर्मां री रेखा न्यारी रे न्यारी।।

हो भाई म्हारा.....
एक मायड़ रै बेटा च्यार, च्याराँ री करणी, न्यारी रे न्यारी,
हो भाई म्हारा...
पहलोड़ो बणियो राजकुमार, दूजोड़ो चौकीदार बण्यो,
तीजोड़ो गलियां गोता खाय, चौथोड़ो हरि रा भजन करै।

हो भाई म्हारा....
एक गऊ रै बछड़ा च्यार, च्यारां री करणी, न्यारी रे न्यारी,
हो भाई म्हारा...
पहलोड़ों सूरज जी रो सांड, दूजोड़ो शिवजी रो नान्दीयो,
हो भाई म्हारा....
तीजोड़ो खेती वालो बैल, चौथोड़ो घाणी पेर रह्यो।

हो भाई म्हारा...
एक माटी का बरतण च्यार, च्यारां री करणी, न्यारी रे न्यारी,
हो भाई म्हारा...
पहलोड़ो पणिहारयां रै माथ, दूजोड़ो शिवजी रै शीश चढ़ै,
हो भाई म्हारा....
तीजोड़ो पड़यो पलींडे रे मांय, चौथोड़ो गंगा घाट रूलै।।

ॐ अर्हम्

मैली चादर ओढ़ के कैसे

मैली चादर ओढ़ के कैसे,
द्वार तिहार आऊँ
हे पावन परमेश्वर मेरे,
मन ही मन शर्माऊँ।।

तुने मुझ को जग में भेजा,
देकर निर्मल काया,
आकर इस संसार में मैने,
इसमें दाग लगाया,
जन्म-जन्म की मैली चादर,
कैसे दाग छुड़ाऊं ।।1।।

निर्मल वाणी पाकर तुम से,
नाम तेरा ना गाया,
आंख मूंदकर हे परमेश्वर,
कभी ना तुझ को ध्याया,
मन वीणा के तार हैं टूटे,
अब क्या गीत सुनाऊँ।।2।।

इन पांवों से चलकर तेरे,
द्वार कभी न आया,
जहां-जहां हो पूजा तेरी,
कभी ना शीष नवाया,
हे हरिहर मैं हार के आया,
अब क्या हार चढ़ाऊँ।।3।।

चेतन चिदानन्द

चेतन ! चिदानन्द चरणां में, सब कुछ अरपण कर थांरो।
सफल बाणां तूं सत-संगत में, मूंधा मोलो मिनख जमारो।।

१) खाली हाथां आयो है तूं, जासी खाली हाथां रे,
लारै रहसी इण दुनिया में, जस अपजस री बातां रे।
थोड़े जीणे रै खातिर क्यूं, बांधै सिर पापां रो भारो।।

२) कोडयां साटे अहल हार मत, ओ हीरो लाखीणो रे,
विष मत धोल वासना रो, जो शान्त सुधारस पीणो रे।
अति झीणो परमारथ रो पथ, तूं है नश्वर तन स्यूं न्यारो।।

३) भरयो अनन्त अखूट खजानो, गाफिल ! थांरै घर में रे,
क्यूं न निहारै बारै, बारै, क्यूं भटकै दर दर में रे।
'आग छिपी अरणी में ढूंढै, काठ काट मूरख कठिहारो'।।

४) एक नयो पैसो भी थांरै, नहीं चालसी साग रे,
करया आपरा कर्मां स्यूं ही, सुख-दुख मिलसी आगै रे,
संयम रै मारग पर चाल्यां 'तुलसी' निश्चित है निस्तारो ।।

ॐ अर्हम्

म्हारो श्याम बसे

म्हारो श्याम बसे खाटू के मन्दिर, कपि है सालासर में,
राणीसती राज करे हैं, झूंझनू के माय ।।टेर।।

गौरी सुत देव गजानन्द, देवां रो सिरमौर है, देवां रो सिरमौर है
मरूधर में धाम बनायो, प्यारो रणथम्भौर है, प्यारो रणथम्भौर है
ओ भक्तों रे, मरूधर में धाम बनायो, प्यारो रणथम्भौर है
गणपत ने पूजे दुनियां, घर घर मायं ।।1 ।।

पर्वत पे साकम्बरी माँ, गोरियाँ में जीण धाम, गोरियाँ में जीण धाम
दो जांटी बालाजी को, प्यारो सो एक धाम, प्यारो सो एक धाम
ओ भक्तों रे, दो जांटी बालाजी को, प्यारो सो एक धाम
अंजनी माँ को लाल बिराजे, मेहन्दीपुर मांय ।।2 ।।

रुणीचे रा रामदेव जी, पीरां को पीर है, पीरां को पीर है
पुनरासर में बजरंगी, वीरा को वीर है, वीरां को वीर है
ओ सुणज्यो रे, पुनरासर में बजरंगी, बीरां को वीर है
करणी माता राज करे हैं देश नोख माय ।।3 ।।

गलता जी पुन्य तीर्थ है, पुष्कर में ब्रह्माधाम, पुष्कर में ब्रह्मधाम
प्यारी राधा के सागे, जयपुर में है श्री श्याम, जयपुर में है श्री श्याम
ओ कान्हा रे, प्यारी राधा के सागे जयपुर में है श्री श्याम
घड़ी-घड़ी रास रचे हैं, बालू रेत-माय ।।4 ।।

धोरां री धरती मांही, सतियां रो राज है, सतियां रो राज है
खेमी व ढांढण-बरजी, राखे मां लाज है, राखे मां लाज है
ओ मैया रे, खेमी व ढांढण-बरजी, राखे मां लाज है
हर्ष कहे देव है, सारा राजस्थान-मांय ।।5 ।।

मेरे मालिक के दरबार

मेरे मालिक के दरबार में, है सबका खाता।
जितना जिसके भाग्य में होता, वो उतना ही पाता ।।टेर।।

क्या साधू क्या सन्त-गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सबकी कर्म कहानी।
वो ही सबके जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता ।।1।।

बड़े कठिन कानून प्रभु के, बड़ी कड़ी मर्यादा,
किसी को कोड़ी कम नहीं देता, किसी को ना दमड़ी ज्यादा।
इसीलिये तो दुनिया में यह, जगतसेठ कहलाता ।।2।।

करते हैं फैसला सभी का, प्रभु आसन पर डटके,
उनका फैसला कभी ना पलटे, लाख कोई सर पटके।
समझदार तो चुप रहता है, मूरख शोर मचाता ।।3।।

नहीं चले प्रभु के घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी,
प्रभु के घर में लेन देन की, रीत बड़ी है बाँकी।
पुण्य का बेड़ा पार करे वो, पाप की नाव डुबाता ।।4।।

अच्छी करनी करले रे भैया, कर्म न करियो काला,
हजार आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
अच्छी करनी करो चतुर जन, समय गुजरता जाता ।।5।।

ॐ अर्हम्

बेटा श्रवण पाणी प्यादे

बेटा श्रवण पाणी प्यादे, तिस जोर की लाग्याई
पाणी ल्यावण सरवण चाल्यो, होणी लारे आई जी॥

सरवर माँही श्रवण ने जद, गडुवो जाय डुबायोजी,
राजा दशरथ मिरग जाण कर, अपणों तीर चलायोजी।
चीर कलेजोSSS तीर निकल गयो, राजा धोखो खायोजी॥1॥
खाय तिवालो पड्यो धरण पर, श्रवण तड़फन लाग्यो जी,
सुनकर बोली श्रवण की जब, राजा दशरथ भाग्यो जी।
देख तड़फतो SSS श्रवण न, राजा मन में घबरायो जी ॥2॥
श्रवण बोल्यो सुबक-सुबक कर, थे पाणी ले जावो जी,
मात-पिता मेरी बाट उड़ीकै, जाकर पाणी प्यावोजी।
मेरी चिन्ता SSS छोड़ो राजा, मतना देर लगावोजी ॥3॥
सुणकर बातां श्रवण की, नैणा सूं टपक्यो पाणी जी,
तेरे जैसो लाल जगत में, ना देख्यो इब ताणी जी।
धन्य-धन्य है SSS श्रवण तनै, बोल्यो राजा वाणी जी ॥4॥
लेकर पाणी राजा चाल्यो, पीपल नीचे आयोजी,
कांपण लाग्यो थर-थर राजा, जद पाणी पकड़ायो जी।
श्रवण म्हारो SSS क्यूं नहीं आयो, जो तूं पाणी लायो जी ॥5॥
मैं हूँ पापी राजा दशरथ, थारै श्रवण न मार्‌यो जी,
सुणकर दोनुं होश भूल गया, पड़ गया खाय पछाड़ो जी।
एक बार SSS म्हासूं ल्याय मिलादे, कठे है श्रवण म्हारो जी ॥6॥
श्राप दियो राजा दशरथ ने, भलो न होसी थारो जी,
होणहार, बलवान के आगे, हार गयो जग सारो जी।
'ताराचंद'SSS कहे राम सुमरले, मिल्यो है मिनख जमारो जी॥7॥

तूने अजब रचा भगवान

तूने अजब रचा भगवान, खिलौना माटी का,
मांटी का रे मांटी का तूने अजब रचां......॥टेर॥

कान दिये हरि, भजन सुनन को-2
तू मुख से कर गुणगान, खिलौना माटी का ।।1 ।।

जीभा दी हरि, भजन करन को-२
दी आँखें कर पहचान, खिलौना माटी का ।।2 ।।

शीश दिया गुरु, चरण झुकन को-2
और हाथ दिये कर दान, खिलौना माटी का ।।3 ।।

सत्य नाम का, बना के बेड़ा-2
और उतरे भव से पार, खिलौना माटी का ।।4 ।।

जोत से जोत जगाते चलो

जोत से जोत जगाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।
राह में आये जो दीन दुःखी, सबको गले से लगाते चलो ।।प्रेम की...

जिसका न कोई संगी साथी, ईश्वर है रखवाला,
जो निर्धन है जो निर्बल है, है वो प्रभु का प्यारा,
प्यार के मोती लुटाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो ।।1 ।।
प्रेम की...

आशा टूटी ममता रूठी, छूट गया है किनारा,
बन्द करो मत द्वार दया का, दे दे कुछ तो सहारा
दीप दया का जलाते चलो प्रेम की गंगा बहाते चलो ।।2 ।।
प्रेम की...

छाया है चारों ओर अँधेरा, भटक गई हैं दिशायें
मानव बन बैठा है दानव, किसको व्यथा सुनावें
धरती को स्वर्ग बनाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो ।।3 ।।
प्रेम की...

इस योग्य हम कहाँ है

इस योग्य हम कहाँ है, भगवन तुम्हें मनायें।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाये।।टेर।।

जब से जनम लिया है, विषयों ने हमको घेरा।
ईर्ष्या और वासना ने, किया शरीर में डेरा
सद्बुद्धि को अहम ने हरदम रखा दबाये ।।1।।

जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है।
एस दूसरे के सुख से, खुद को बड़ी जलन है।
कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ न पाये ।।2।।

जब कुछ न कर सके, तो तेरी शरण में आये।
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजायें।
बस दरश तू दिखा दे, कुछ और हम न चाहें ।।3।।

निश्चय ही हम पतित है, लोभी हैं स्वार्थी हैं।
तेरा नाम जब पुकारे, माया पुकारती है।
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो न पाये ।।4।।

ॐ अर्हम्

अब सौप दिया इस जीवन

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
अब हार तुम्हारे हाथों में, अब जीत तुम्हारे हाथों में।।

इस जीवन की एक तमन्ना है, भगवान तुम्हारे चरणों में।।
अर्पण कर दूँ इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।।

यदि मानुष जन्म मिले तो मै, चरणो का पुजारी बनजाँऊ।
तेरा प्रेम हो मेरे रगरग मे, मेरा ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

यदि मै संसार का बन्दी बँनू, दरबार में तेरे आँऊ मैं।
हो मेरे पापो का निर्णय, भगवान तुम्हारे हाथों में।।

या तो मै इस जग से दूर रहूँ, या मैं जग में रहूँ तो तेरा रहूँ।
इस पार तुम्हारे हाथो में, उस पार तुम्हारे हाथों में।।

तुम मे मुझमे है भेद यही, मै नर हूँ तुम नारायण हो।
मै हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों मे।।

जीवन का भरोसा

जीवन का भरोसा नही, कब मौत जा जाएगी।
काया और माया तेरी, तेरे साथ न जाएगी॥

काया पे गुमान न कर, यह तो माटी का खिलौना है।
चाहा तेरा होना नहीं, लिखा भाग्य का होना है।
तेरा और मेरा छोड़, जीवन ज्योति बुझ जाएगी।।
जीवन का भरोसा...

दौलत पे गुमान न कर, यह तो हाथ का मैला है।
राजा है तो रंक कोई, सब किस्मत का खेला है।
झुठी है यह माया नगरी, यह तो पल मे बदल जाएगी।।
जीवन का भरोसा...

दो दिनका मेला है, सब माया का खेला है।
जावे नही साथ कोई, तुझे जाना अकेला है।
पलक झपकते ही, दुनिया तुझे ठुकराएगी।।
जीवन का भरोसा...

रिश्ते पे भरोसा न कर, दुनिया से तू आशा न कर।
तरना है जो भवसागर, प्रभुजी का तू सूमिरण कर।
भक्ति की शक्ति से, जीवन नैया तिर जाएगी।।
जीवन का भरोसा...

जो हम भले-बुरे तौ तेरे

जो हम भले-बुरे तौ तेरे।
तुम्हैं हमारी लाज बचाई, बिनती सुनु प्रभु मेरे।।
सब तजि तुव सरनागत आयो, निज कर चरन गहे रे।
तुव प्रताप बल बदत न काहू, निडर भये घर चेरे।।
और देव सब रंक भिखारी, त्यागे बहुत अनेरे।
सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपा ते पाये सुख जु घनेरे।।

करी गोपालकी सब होइ

करी गोपालकी सब होइ।
जो अपनो पुरुषारथ मानत, अति झूठो है सोइ।।
साधन मंत्र यंत्र उद्यम बल, यह सब डारहु धोइ।
जो कछु लिखि राखी नँदनंदन, मेटि सकै नहिं कोइ।।
दुख-सुख लाभ-अलाभ समुझि तुम कतहिं मरत हौ रोइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, स्यामचरन मन पोइ।।

जो पै रामनाम धन धरतो

जो पै रामनाम धन धरतो।
टरतौ नहीं जनम जनमान्तर कहा राज जम करतो।।
लेतो करि ब्योहार सबनिसों मूल गाँठमें परतो।
भजन प्रताप सदाई घृत मधु, पावक परे न जरतो।।
सुमिरन गोन बेद बिधि बैठो बिप्र परोहन भरतो।
सूर चलत बैकुण्ठ पेलिकै बीच कौन जो अरतो।।

अबकी टेक हमारी लाज

अबकी टेक हमारी लाज राखो गिरधारी।
जैसी लाज रखी पारथकी भारत जुद्ध मँझारी।।
सारथि होके रथको हाँक्यो, चक्रसुदर्सन-धारी।
भगतक टेक न टारी ।।अबकी०।।1 ।।

जैसी लाज रखी द्रौपदिकी होन न दीन्हि उघारी
खेंचत खेंचत दोउ भुज थाके, दुस्सासन पचिहारी।।
चीर बढ़ायो मुरारी।।अबकी०।।2 ।।

सुरदासकी लज्जा राखो, अब को है रखवारी।
राधे राधे श्रीवर प्यारी, श्रीवृषभानु दुलारी।।
सरन तकि आयो तुम्हारी।।अबकी०।।3 ।।

प्रभु मेरे अवगुन न धरो

प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो चाहो तो पार करो।।
इक लोहा पूजामें राखत इक घर बधिक परो।
यह दुबिधा पारस नहिं जानत कंचन करत खरो।।
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भए सुरसरि नाम परो।।
एक जीव इक ब्रह्म कहावत सूर स्याम झगरो।
अबकी बेर मोहि पार उतारो नहिं पन जात टरो।।

हरि बिन कौन दरिद्र हरै

हरि बिन कौन दरिद्र हरै!
कहत सुदामा सुन सुंदरि जिय मिलन न हरि बिसरै।।
और मित्र ऐसे कुसमै महँ कत पहिचान करै।
बिपति परे कुसलात न बूझै, बात नहीं उचरै।।
उठिके मिले तंदुल हम दीन्हें, मोहन बचन फुरै।
सूरदास स्वमीकी महिमा, बिधि टारी न टरै।।

अँखियाँ हरि दरसनकी प्यासी

अँखियाँ हरि दरसनकी प्यासी
देख्यो चाहत कमलनैनको, निसिदिन रहत उदासी।।
केसर तिलक मोतिनकी माला, बृंदाबनके बासी।
नेह लगाय त्यागि गये तृन सम, डारि गये गल-फाँसी।।
काहूके मनकी को जानत, लोगनके मन हाँसी।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिन, लैहों करवट कासी।।

जनम तेरा बातों ही बीत गयो

जन्म तेरा बातों ही बीत गयो। तूने कबहूँ न कृष्ण कह्यो।।ध्रु०।
पाँच बरसका भोला-भाला अब तो बीस भयो।
मकरपचीसी माया कारन देस बिदेस गयो।।
तीस बरसकी अब मति उपजी लोभ बढ़े नित नयो।
माया जोरी लाख करोरी अजहुँ न तृप्त भयो।।
बृद्ध भयो तब आलस उपजी कफ नित कंठ रह्यो।
संगति कबहूँ न कीनी बिरथा जन्म लियो।।
यह संसार मतलबका लोभी झूँठा ठाठ रच्यो।
कहत कबीर समझ मन मूरख तू क्यों भूल गयो।।

ॐ अर्हम्

मुनि वृन्द कह गये जिया रे

मुनि वृन्द कह गये जिया रे, जो देगा सो पायेगा।
मुट्ठी बाँधे आया जग में, हाथ पसारे जायेगा।।टेर।।

कर्म लुटेरे जिस दिन आकर, तेरी गठरी लुटेंगे।
कोठी, बंगले, बाग-बगीचे, इक दिन सारे छूटेंगे।
अपनी करनी पर तू खूद ही, कर मल-मल पछतायेगा।।1।।

जिनका सुख छीना है तू ने, वो ही तेरा छीनेंगे।
एक दिवस मरघट में तेरे, फूल सभी मिल बिनेंगे।
और तेरी अर्थी पर कोई, आँसू तक न बहायेगा।।2।।

ऐसा करनी करले कुछ तो, जो जग तुमको याद करे।
खाली हाथों जा मालिक से, किस मुँह से फरियाद करे।
अपनी हालत देख-देख कर, तू खुद ही शरमायेगा।।3।।

मनमानी मत कर ओ पगले, दो दिन की जिन्दगानी है।
किसकी यहाँ बनी है प्यारे, ये दुनियाँ आनी-जानी है।
जनम लिया है जिसने जग में, निश्चित इक दिन जायेगा।।4।।

राम सुमिर के रहम

राम सुमिरके रहम करे ना, फिर कैसे सुख पायेगा,
कृष्ण सुमिर के कर्म करे ना, यूँ ही जग से जायेगा ।।टेर।।

ओ भगवान को भजने वाले, क्या भगवान को जाना है,
पास पड़ोस दुःखी दीनों में, क्या उसको पहचाना है-2
जब तक तेरी उल्झी ना टूटे, खुदा नजर ना आयेगा ।।1 ।।

ये संसार कर्म की खेती, जो बोये सो ही पाये,
प्रेम प्यार से सींच ले जीवन, यह अवसर फिर ना आये-2
चार दिनों का जीवन है यह, कब तक ठोकर खायेगा ।।2 ।।

अन्दर तेरे अन्तर्यामी, रोज तुझे समझाता है,
भला बुरा क्या करना तुझको, राह तुझे दिखलाता है-2
मन की कही पे चलनेवाले, फिर पीछे पछतायेगा ।।3 ।।

शरण गये बिन जाप है निष्फल, निष्फल है जीवन तेरा,
जन्म मरण की आश न छुटे, रहे दुःखों से नित घेरा-2
पाप गठरिया भारी हो गयी, कैसे बोझ उठायेगा ।।4 ।।

ॐ अर्हम्

तु आयो है अकेलो रे भाई

तू आयो है अकेलो रे भाई! जासी एकाएक,
कोईन सागे चालसी, तू करलै जरा विवेक,
देख हालत औरां री रे, करै क्यू थारी म्हारी रे?
क, अन्तर ज्ञान जगालै, जगत में साथी नहीं है कोईथारो ।।ध्रुव।।

सगला भुगतै आपरी भाई ! करणी आपो आप,
गहराई स्यूं सोचलै तूं कुण बेटो ? कुण बाप ?
खाड़ खिणसी सो पड़सी रे, जहर खासी सो मरसी रे,
क, अन्तर ज्ञान जगालै, जगत में साथी नहीं है कोई थांरो ।।1।।
रहणो अपणै आप में भाई ! ज्यूं जंगल रो कैर,
नां कोई स्यूं मित्रता है नां कोई स्यूं बैर,
मस्त है अपणी धुन में रे, मोज एकाकीपण में रे,
क, अन्तर ज्ञान जगालै, जगत में साथी नहीं है कोई थांरो ।।2।।
सपनै में भी सुख नहिं कोई पावे पर-आधीन,
आठ पहर आनन्द में है सदा सुखी स्वाधीन,
रहै निज गुण में रमतो रे, आपरो आपो दमतो रे,
क, अन्तर ज्ञान जगालै, जगत में साथी नहीं है कोई थांरो ।।3।।
मूल सकल संघर्ष रो है द्वैत-भाव अवलोय,
'नमि ज्यूं एकाकी भलो' कोई दोय मिल्यां दुख होय,
एकता सदा सुहावै रे, भावना 'तुलसी' भावै रे,
क, अन्तर ज्ञान जगालै, जगत में साथी नहीं है कोई थांरो ।।4।।

इक झोली में फूल भरे हैं

इक झोली में फूल भरे हैं, इक झोली में कांटे हैं,
अरे कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ भी नहीं है।
ये तो बांटने वाला जाने, अरे कोई कारण होगा॥

पहले बनती है तकदीरें, फिर बनते हैं शरीर,
ये प्रभु की कारीगरी है, तू है क्यों गंभीर।
अरे कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ....
नाग भी डस ले तो मिल जाए, किसी को जीवन दान,
चींटी से भी मिट सकता है, किसी का नाम निशान।
अरे कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ....
धन का बिस्तर मिल जाए, पर नींद को तरसे नैन,
कांटों पर सोकर भी आए, किसी को मन का चैन।
अरे कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ.....
सागर से भी बुझती नहीं है, कभी किसी की प्यास,
कभी बून्द से हो जाती, पूर्ण किसी की आस।
अरे कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ.....

ॐ अर्हम्

तोरा मन दर्पण कहलाए

तेरा मन दर्पण कहलाए, भले-बुरे सारे कर्मों को,
देख और दिखाए, तोरा मन दर्पण कहलाए।।

मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा ना कोय।
मन उजियारा जब-जब फैले, जग उजियारा होय।
इस उजलो दर्पण पर प्राणी धूल न जमने पाये।
तोरा मन दर्पण कहलाए...

सुख की कलियां, दुःख के कांटे, मन सबका आधार।
मन से कोई बात छुपे ना, मन के नैन अपार।
जग से चाहे मांग ले कोई, मन से मांग न पाए।
तोरा मन दर्पण कहलाए....

गोपीचन्द

(माँ मैणावती को रोती हुई देख गोपी चंद
रोने का कारण पूछ रहा है)

नीर भर्‌यो एक थारे नैण में, मैणावती माता।
बादल बरसे रे कंचन महल में, गोपीचंद लड़का ।।टेर।।

क्यों तू माता उणमणी ऐ, नित की रहे उदास।
जो कोई कहै जीभ कढ़ाऊँ, करूँ दुश्मन को नाश ऐ ।।1।।

ना मैं बेटा उणमणी रे, ना मैं रहूँ उदास।
रूत पलटी बादल चढयो रे अब बरसन की आश रे।।2।।

ना बादल ना बिजली ऐ, ना कोई बाजे बाव।
थारे मन में चिंता घणी ऐ, म्हाने साँची खोल बताय ऐ।।3।।

साँच कहूँ तो जग हँसे रे, झूठ कहे पत जाय।
जहाज पड़ी दरियाव रे, अधबिच गोता खाय रे।।4।।

जहाज पड़ी दरियाव में ऐ, कर द्यूं परली पार।
मार हटाऊँ दुशमन को ऐ, ले नंगी तलवार ऐ।।5।।

म्यान माय तलवार धरो रे, धरो जमीं पर ढाल।
काया नगर सूनी पड्यो रे, अपनो बिरद संभाल रे।।6।।

मेरा बिरद बसे मन तेरे, मन तेरे कोई आज्ञा पाऊँ।
वचन चूक फिरूँ नहीं पाछो, तुरन्त ही हुकुम उठाऊँ ऐ।।7।।

मुझे भरोसा पुत्र तुम्हारा, तुम हो आज्ञा कार।
राजपाट सपने की माया, सब झूठा संसार रे ।।8।।

(इस पर गोपीचंद माँ से प्रार्थना करता है)

मने राज करन दे, जोगी मत कर ऐ माँ मैणावती
गोपीचंद लड़का जोगी होज्यो रे चेला नाथ को ।।टेर।।

बारा बरस की उमर माता, में क्या जानूँ जोग।
चरचा करे मुलके के माँही, हँसे शहर के लोग ऐ ।।1।।

मेरा वचन फिरे नहीं पाछा, यह पूरूषों का वाक।
तेरी सूरत तेरे बाप की रे, जल बल हो गई खाक रे ।।2।।

तेरा वचन फिरे नहीं पाछा, जा घर पूत सपूत।
दो जुग राज करन दे माता, फिर जोगी अवधूत ऐ ।।3।।

पाव पलक नहीं भरोसा, करे काल की बात।
क्या जाने होयसी रे, दिन उगे परभात रे ।।4।।

दिन उगे दांतन करूँ ऐ, नित को देऊँ दान।
ष्ट दर्शन को भाव रखूँ, विप्र बधाऊँ मान ए।।5।।

दान दिये फल होयसी रे, धन दौलत अरू माया।
असल फकीरी ले ले बेटा, अमर हो जावे काया रे।।6।।

काया अमर करूँ एक छिन में, कितीयक लागे बार।
प्रथम परण्या पद्मणी ए, बिलखे राजकुमार ए।।7।।

त्रिया जात जगत में झुठी, सुन रे गोपीचंद।
जन्म मरण से होज्या न्यारा, कटे चौरासी फंद रे।।8।।

कटे चौरासी फंद जु मेरा, जा में निपजे सार।
सत्तर लाख फोजदल ज्यादा, ऊभ्या करे पुकार ऐ।।9।।

करे पुकार कोई नहीं तेरा, अपने-अपने काज।
मामा तेरा देख भरथरी, तज्यो उजीणी राज रे ।।10।।

तज्यी उजीणी भरथरी ये, आयो गोरखनाथ ।
दो युग राज किया पृथ्वी पर, फिर गये गुरु के साथ ।।11।।

गुरु देवन का देव है रे, धरो उसी का ध्यान।
आन तिरे फिर तुझे तिरावे, गावे वेद पुराण रे।।12।।

भँवर पड़े भव सागर माँही, ज्यां में नीर अपार।
विषम घाट अरु नाव पुरानी, किस विध उतरूँ पार ऐ।।13।।

चेत्या सो चढ़ गया रे, गाफिल खाई मार।
सत्य की नाव धर्म का बेड़ा, जीतो जम का द्वार रे।।14।।

जीत करो हरि नाम की रे, माता के मन की धीर।
पहुँचा सोई उबारिया रे, राजा रंक फकीर रे।।15।।

(माँ की आज्ञा से गोपीचंद साधु हो जाता है और
फिर माता कह करके महलों में रानियों से भिक्षा मांगता है।
फिर अपनी बहन चन्द्रावली के पास जाकर भिक्षा मांग रहा है)

ॐ अर्हम्

गोपीचंद बोरा जोगी हुयो रे कांई कारणे ॥ टेर ॥

कहां से लीनी सेली सींगी, कहां फड़ाया कान।
बारा-बरस की उमर तेरी, तू लड़का नादान रे।।1।।

जनम दियो मैणावती ऐ, मैं किस विधि करूँ पुकार।
मूंड मूंडायो महल में ऐ मनै कियो गुरु के लार ऐ ।।2।।

मरज्यो माँ मैणावती रे, तुझे बतायो ज्ञान।
दूजा मरज्यो सतगुरू धारा, फड़या छुरी से कान रे।।3।।

कान फड़ाया मुद्रा डाली, कर कर भगवां भेष।
माता गुरु ने दोष नहीं है, लिख्या विधाता रा लेख ऐ।।4।।

क्या विधाता लिख गई रे, संगति का उपदेश।
देश बंगालो सभी डुबोयो, कर कर भगवां भेष रे ।।5।।

भगवां में भगवान बसे ऐ, गुरु देवन के देव।
आप तिरे और मुझे तिरावे, करूँ उसी की सेव ऐ।।6।।

तेरे गुरु के आग लगाऊँ, ऊलटी दीनी सीख।
राज छोड़कर भयो मसाणी, घर-घर माँगे भीख रे।।7।।

माँग भीख बारणे तेरे, दिवी गुरु ने गाल।
फिर नही आऊँ द्वारे तेरे, उठे बदन में झाल ऐ।।8।।

अब सौंप दिया इस

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।

मेरा निश्चय बस एक यही, इकवार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, जैसे जल के भीतर कमल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो, गोपाल तुम्हारे हाथों में।।

यदि मनुष्य का मुझे जन्म मिले तो, श्रीचरणों का दास बनूँ।
इस सेवक के इक इक रग का हो, तार तुम्हारे हाथों में।।

मुझमें तुममें बस भेद यही, में नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
उद्धार पतन अब मेरा है, सरकार तुम्हारे हाथों में।।

हम तुमको कभी नहीं भजते, फिर भी तुम हमें नहीं तजते।
अपकार भरे इस जीवन का, उपकार तुम्हारे हाथों में।।

कल्पना बनाया करती है, एक सेतु विरह के सागर में।
जिससे हम पहुंचा करते हैं, उस पार तुम्हारे हाथों में।।

दृग बिन्दु कह रहे हैं भगवन, द्रग नाव विरह सागर में है।
मझधार तुम्हारे हाथों में, पतवार तुम्हारे हाथों में।।

ॐ अर्हम्

तेरे नाम का सुमरण करके

तेरे नाम का सुमरण करके, मेरे मन में सुख भर आया,
तेरी कृपा को मैनें पाया, तेरी दया को मैंने पाया।।

दुनिया की ठोकर खाकर जब हुआ कभी बेसहारा,
ना पाकर अपना कोई जब मैंने तुम्हें पुकारा।
हे नाथ मेरे सिर ऊपर तुमने अमृत बरसाया
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया।
तेरे नाम का सुमरण करके...

तू संग में था नित मेरे, पर नैना देख ना पाए,
चंचल माया के रंग में ये नैन रहे उलझाए।
जितनी भी बार गिरा हूं तूने पग-पग मुझे उठाया,
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया।
तेरे नाम का सुमरण करके ...

भवसागर की लहरों पर, डूबी जब मेरी नैया,
तट छूना भी मुश्किल था नहीं दिखे कोई खिवैया।
तू लहर बना सागर की मेरी नाव किनारे लाया,
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया।
तेरे नाम का सुमरण करके ...

हर तरफ तुम हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा
निर्लेप प्रभु जी मेरे, हर रुप तुम्हीं ने धारा।
तेरी शरण में आके दाता, तेरा ही तुझको चढ़ाया,
तेरी कृपा के मैंने पाया, तेरी दया को मैंना पाया।
तेरे नाम का सुमरण करके ...

ऋषि-मुनि सब हार

ऋषि-मुनि सब हार गए, तेरा अंत किसी ने ना पाया,
बेअंत तेरी माया, तेरा अंत किसी ने ना पाया ॥

कुदरत तेरी देख के भगवन, होती हमें हैरानी।
हाथी से तू चींटी तक भी, देता दाना-पानी।
ऋषि-मुनि सब हार गए, तेरा अंत किसी ने ना पाया।
बेअंत तेरी माया ...

कुदरत तेरी देख के भगवन, होता हमें अचंभा।
इतने बड़े आकाश के नीचे, एक नहीं है खम्बा।
आसमान मे चांद और सूरज, दो बल्ब बिजली के।
कभी ना उसमें आई खराबी, हरदम जलते रहते।
बेअंत तेरी माया ....

वाह मेरे मालिक, वाह मेरे दाता, तेरे खेल निराले।
किसी को तू पूरा देता, किसी के भरे भंडारे।
किसी को इतना सुन्दर बनाया, वाह-वाह करे जमाना।
किसी को इतना कुरूप बनाया, गफलत करे जमाना।
बेअंत तेरी माया ...

ॐ अर्हम्

दूसरों का दुखड़ा दूर करने

दूसरों का दुखड़ा दूर करने वाले, तेरे दुख दूर करेंगे राम,
किए जा तू जग में भलाई का काम, तेरे दुख दूर करेंगे राम।

रात का ये पग है धरम का मारंग, संभल संभल चलना प्राणी,
पग-पग पर है यहां रे कसौटी, कदम-कदम पर कुर्बानी,
मगर तू डांवाडोल न होना, तेरी सब पीर हरेंगे राम। दूसरों ..

क्या तूने पाया क्या तूने खोया, क्या तेरा लाभ क्या हानि,
इसका हिसाब करेगा वो ईश्वर, तू क्यों फिकर करे रे प्राणी,
तू बस अपना काम किए जा, तेरा भंडार भरेंगे राम। दूसरों...
पोंछ ले तू अपने आंसू तमाम तेरे दुख दूर करेंगे राम। किये ...

कलयुग में एक बार कन्हैया

कलयुग में एक बार कन्हैया, ग्वाले बनकर आओ रे,
आज पुकार करे तेरी गैय्या, आकर कंठ लगाओ रे ।।

जिनको मैनें दूध पिलाया, वो ही मुझे सताते है,
चीर-फाड़ कर मेरे बेटे, मेरा ही माँस बिकाते हैं,
अपनों के, अभिशाप से मुझे को, आ के आज बचाओ रे।।1।।

चाबुक से जब पिटी जाऊं, सहन नहीं कर पाती मैं,
उबला पानी तन पे फैंके, हाय-हाय चिल्लाती मैं,
बिना काल मैं, तिल-तिल मरती, करूणा जरा दिखाओ रे।।2।।

काहे हम को मूक बनाया, घुट घुट कर यूं मरने को,
उस पर हाथ दिये ना तूंने, अपनी रक्षा करने को,
भटक गयी, संतान हमारी, रस्ता आन दिखाओ रे।।3।।

एक तरफ तो बछड़े मेरे, अन्न धन को उपजाते हैं,
उसी अन्न को खाने वाले, मेरा वध करवाते हैं,
"हर्ष" जरा, तुम माँ के वध पे, आ के रोक लगाओ रे।।4।।

ॐ अर्हम्

मन लागो मेरे यार

मन लागो मेरे यार फकीरीमें ।।टेक।।

जो सुख पावों नाम-भजनमें, सो सुख नाहिं अमीरीमें।। 1 ।।

भला-बुरा सबको सुनि लीजै, करि गुजरान गरीबीमें।। 2 ।।

प्रेमनगरमें रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरीमें ।। 3 ।।

हाथमें कूँड़ी बगलमें सोंटा चारी दिशा जगीरींमें ।। 4 ।।

आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहा फिरत मगरूरीमें ।। 5 ।।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरीमें ।। 6 ।।

अब कैसे छुटै नाम रट लागी

अब कैसे छुटै नाम रट लागी ।।टेक।।

प्रभुजी, तुम चन्दन, हम पानी।
जाकी अँग अँग बास समानी।। 1 ।।

प्रभुजी, तुम घन बन, हम मोरा।
जैसे चितवत चंद चकोरा ।।2 ।।

प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन राती।। 3 ।।

प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा ।। 4 ।।

प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा ।
ऐसी भगति करै रैदासा ।। 5 ।।

ॐ अर्हम्

हे पिंजरे को ये मैना

हे पिंजरे की ये मैना, भजन कर ले राम का,

भजन कर ले राम का, भजन कर ले श्याम का ।।टेर।।

राम नाम अनमोल रतन है, राम राम तूँ करना,

भवसागर से पार होवे तो, नाम हरिका लेना ।। 1 ।।

भाई-बन्धु कुटुम्व कबीलो, कोई किसी को है ना,

मतलब का सब खेल जगत्में, नहीं किसी को रहना ।। 2 ।।

कोड़ी-कोड़ी माया जोड़ी, कभी किसी को देई ना,

सब सम्पत्ति तेरी यहीं रहेगी, नहीं कछु लेना-देना ।। 3 ।।

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैअ कहाँ जो सोवत है।

जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है ।।टेर।।

उठ नीदसे अँखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभुसे ध्यान लगा ।

यह प्रीति करनकी रीति नहीं, प्रभु जागत हैं तू सोवत है ।। 1 ।।

जो कल करना है आज कर ले, जो आज करना है वो अब कर ले ।

जब चिड़ियोंने चुग खेत लिया, फिर पछिताये क्या होवत है ।। 2 ।।

नादान भुगत अपनी करनी, ऐ पापी पाप में चैन कहां।

जब पापकी गठरी शीश धरी, अब शीश पकड़ क्यों रोवत है ।। 3 ।।

ॐ अर्हम्

हरी तुम हरो जनकी भीर

हरी तुम हरो जनकी भीर।
द्रौपदी की लाज राखी तुरत बढ़ायो चीर॥

भगत कारण रूप नरहरि धर्‍यो आप सरीर ।

हिरण्याकुस मारि लीन्हों धर्‍यो नाहिन धीर ॥

बूड़तो गजराज राख्यो कियौ बाहर नीर।

दासी मीरा लाल गिरधर चरणकँवलपर सीर॥

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे ।।

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे।

मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गई दासी रे ।
लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे ।।

बिषका प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे।
मीराके प्रभु गिरधर नागर सहज मिल अविनासी रे ।।

ॐ अर्हम्

शान्ति-पाठ

ओ३म्द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं् शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मा
शान्तिः सर्व्ंशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः
सा मा शान्ति रेधि।।

- यजुर्वेद ३६।१७।।

हे जगदीश्वर! प्रकाशमान सूर्यादि लोक सुखदाय हों, दोनों लोकों के मध्य में स्थित आकाशादि सुखकारी हों। भूलोकादि कल्याणकारी हों, जल व प्राण शान्ति देने वाले हों, सब अन्न व औषधियाँ कल्याण करने वाले हों, वनस्पति सुख देने वाली हों। सब दिव्य जीवन व दिव्य पदार्थ सुखकारी हों। ईश्वर, वेदज्ञान व विद्वान लोग सुखदायक हों और इन के अतिरिक्त और सब ही हमें सुख शान्ति देने वाले हों।

राष्ट्रगीत

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।

पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा
द्रविड़ उत्कल बंग।

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधितरंग।

तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशीष मांगे,
गाये तव जय गाथा।

जन-गण मंगलदायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

ॐ अर्हम्

वन्देमातरम्

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्यश्यामलां मातरम्

शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।।
त्वं हिं दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल-दल-विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वां
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम्
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणी भरणीम् मातरम्।

जहाँ डाल डाल पर सोने

जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़िया करती हैं बसेरा
वो भारत देश है मेरा, वो भारत देश है मेरा
जहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का पग-2 लगता डेरा
वो भारत देश है मेरा-२। जहाँ डाल........

यह धरती जहाँ ऋषि-मुनि जपते प्रभु नाम की माला
जहां हर बालक एक मोहन है और हर बाला एक राधा
जहा सूरज सबसे पहले आकर डाले अपना डेरा।
वो भारत....

अलबेलों की इस धरती के त्यौंहार भी हैं अलबेले
कहीं दिवाली की जगमग है कहीं होली के मेले
जहाँ राग रंग और ख़ुशी का, चहूँ ओर है घेरा।
वो भारत....

जहां आसमान से बातें करते, मंदिर और शिवाले
किसी नगर में किसी द्वार पर, कोई न ताला डाले
प्रेम की बंशी जहां बजाता, आए शाम सबेरा।
वो भारत....

श्री मन नारायण

श्री मन नारायण नारायण हरी हरी,
भज मन नारायण नारायण हरी हरी।

ओम परम नमो ब्रह्म नारायण नारायण हरी हरी।।
श्री बद्री नारायण नारायण हरी हरी,
श्री विष्णु नारायण नारायण हरी हरी।
श्री तिरूपति बालाजी नारायण नारायण हरी हरी।।
ओम श्री सत्य नारायण नारायण हरी हरी,
श्री लक्ष्मी नारायण नारायण हरी हरी।
ओम श्री गिरधर गोपाल नारायण नारायण हरी हरी।।
श्री जानकी वल्लभ नारायण नारायण हरी हरी,
श्री दशरथ नन्दन नारायण नारायण हरी हरी।
ओम जय श्री कृष्ण काली नारायण नारायण हरी हरी।।
श्री सूर्य नारायण नारायण हरी हरी,
श्री अग्नी नारायण नारायण हरी हरी,
श्री महावीर नारायण नारायण हरी हरी,
श्री यज्ञ नारायण नारायण हरी हरी,
श्री माता नारायण नारायण हरी हरी,
श्री पिता नारायण नारायण हरी हरी,
सबमें नारायण नारायण हरी हरी।।

ॐ अर्हम्